श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 222, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 08 सितंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कांग्रेस ने शुरू की भारत जोड़ो यात्रा

भारत जोड़ो यात्रा 150 दिनों तक चलेगी, यह यात्रा लगभग 3,500 किलोमीटर की दूरी तय करेगी

नई दिल्लीः कांग्रेस ने बुधवार को कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत जोड़ो यात्रा की शुरूआत की। इस मौके पर राहुल गांधी ने भाजपा पर हमला बोलते हुए यात्रा के बारे में लोगों को जानकारी दी। उन्होंने कहा कि न्यूज चैनलों पर दिनभर प्रधानमंत्री मोदी को दिखाया जाता है। हम लोगों को कोई नहीं दिखाता, इसलिए हम यात्रा निकाल रहे हैं। राहुल ने कहा- एक व्यक्ति के हाथों में करोड़ों लोगों का भविष्य है और वे इसे संवारने की बजाय विपक्ष को ईडी और सीबीआई का डर दिखाता है। उन्होंने आगे कहा- हम फिर गुलामी के दौर में जा रहे हैं। पहले एक ईस्ट इंडिया कंपनी देश पर राज करती थी, अब 3-4 कंपनियां ये काम कर रही है। राहुल के अलावा मल्लिकार्जुन खड़गे, केसी वेणुगोपाल, दिग्विजय सिंह, अशोक गहलोत, भूपेश बघेल और योगेंद्र यादव ने भी सभा को संबोधित किया।

श्रीपेरंबदुर जाकर पिता को दी श्रद्धांजलिः राहुल ने बुधवार सुबह श्रीपेरंबदुर में पिता राजीव गांधी के स्मारक पर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। यहां राहुल ने कहा कि नफरत की वजह से मैंने पिता खोया, लेकिन अब देश नहीं खो सकता हूं। राहुल करीब डेढ़ घंटे तक श्रीपेरंबदुर में रहे। यहीं पर 1991 में राजीव गांधी की हत्या कर दी गई भारत जोड़ो यात्रा तमिलनाडु के कन्याकुमारी से केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, यूपी, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब होते हुए केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर तक जाएगी। राहुल की यह यात्रा करीब 3570 किमी है। इस यात्रा के जरिए कांग्रेस 372 लोकसभा सीटों पर फोकस कर रही है।

यात्रा को सफल बनाने और लोगों की भीड़ बढ़ाने के लिए कांग्रेस ने 3 स्तर पर प्लानिंग की है।

भारत यात्री- कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक राहुल गांधी के साथ 100 लोग रहेंगे। कांग्रेस ने इसका नाम भारत यात्री दिया है। इनमें पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और फ्रंटल ऑर्गेनाइजेशन के सदस्य रहेंगे।

अतिथि यात्री- जिन राज्यों में भारत जोड़ो यात्रा की टीम नहीं जाएगी, उन राज्यों से 100 लोग कांग्रेस की इस यात्रा में शामिल होंगे। इन्हें अतिथि यात्री का

भारत जोड़ो यात्रा सिर्फ एक छलावा: बीजेपी

नई दिल्लीः भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस की 'भारत जोड़ो यात्रा' पर तंज कसते हुए कहा है कि राहुल गांधी पहले अपना घर, पार्टी को एकजुट कर लेते, तब भारत को जोड़ने की बात करते तो बेहतर होता। कांग्रेस के अपने पुराने समर्पित लोग, समर्पित नेता कांग्रेस छोड़कर जा रहे हैं और राहुल जी चले हैं देश जोड़ने। बता दें कि कांग्रेस पार्टी आज को कन्याकुमारी से 3570 किलोमीटर लंबी भारत जोड़ो यात्रा शुरू करने जा रही है, इसकी अगुवाई राहुल गांधी कर रहे हैं।

भारत जोड़ो यात्रा सिर्फ एक छलावाः भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद ने कहा, 'कांग्रेस की इस समय जो स्थिति है, वो किसी से छिपी नहीं है। ये पूरा घमासान 'किसकी' वजह से हो रहा है, ये भी कोई राज नहीं है। ऐसे में जो अपने को अपनी पार्टी से भी नहीं जोड़ सके, वो भारत जोड़ने की यात्रा पर निकले हैं। ये देखकर बड़ी हैरानी हो रही है। राहुल गांधी आप पहले अपना घर, पार्टी जोड़ लेते तब देश जोड़ने की बात करते। ये सिर्फ इनका छलावा है और दिखावा है।'

कांग्रेस में एक दरबारी गायन होता है...!: कांग्रेस में एक बार फिर अध्यक्ष पद को लेकर प्रक्रिया शुरू हो गई है। इस बीच अशोक गहलोत समेत कई कांग्रेसी नेता राहुल गांधी को फिर से अध्यक्ष बनाने की बात कह रहे हैं। इस पर तंज कसते हुए रविशंकर प्रसाद ने कहा, 'कांग्रेस में सिर्फ गांधी राग ही सुनाई देता है। कांग्रेस में एक दरबारी गायन होता है कि राहुल गांधी को अध्यक्ष बनाओ, फिर अध्यक्ष बनाओ..! राहुल कहते हैं कि मैं नहीं बनूंगा, बीच में वो विदेश यात्रा पर चले जाते हैं। पार्टी से कितना जुड़े हैं ये आप सभी जानते हैं। कांग्रेस के अपने पुराने समर्पित कार्यकताओं को संभाल नहीं पा रही है। पुराने समर्पित नेता कांग्रेस छोड़कर जा रहे हैं और राहुल गांधी चले हैं देश जोड़ने।' उन्होंने कहा कि 'भारत जोड़ो यात्रा' का पाखंड वे राहुल गांधी कर रहे हैं, जिन्होंने उरी और बालाकोट की घटना के लिए सबूत मांगकर देश की एकता को कमजोर करने की कोशिश की थी।

रेलवे में पैदा होंगे सवा लाख रोजगार

अगले 5 साल में 300 पीएम गति शक्ति कार्गो टर्मिनल बनेंगे

नई दिल्लीः भारतीय रेलवे की लैंड लीज नीति संशोधन के प्रस्ताव को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हरी झंडी दे दी है। इसमें लीज की अवधि को पांच साल से बढ़ाकर जहां 35 साल कर दिया गया वहीं लीज शुल्क को छह फीसद से घटाकर डेढ़ फीसद कर दिया गया है। सरकार के इस फैसले से पीएम गति शक्ति के तहत कार्गो टर्मिनल और अन्य ढांचागत सुविधाओं के विकास करने में सहूलियत मिलेगी।

लैंड लीज शुल्क में कटौती, 6 फीसद से घटाकर डेढ़ फीसद किया गयाः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता बुधवार को यहां आयोजित केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसला किया गया। सरकार के इस फैसले से कार्गो टर्मिनल, जन उपयोगिता और रेलवे के

विशेष इस्तेमाल वाली परियोजनाओं को विकसित करने में मदद मिलेगी। रेलवे की भूमि नीति में बदलाव की जरूरत महसूस की जा रही थी। मंत्रिमंडल के इस फैसले की जानकारी देने आए केंद्रीय सूचना व प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने बताया कि सरकार के इस फैसले से रेलवे की जमीन पर बिजली, गैस, पानी की आपूर्ति, दूरसंचार, केबल, सीवेज निपटान, नालियां, आप्टिकल फाइबर केबल (ओएफसी), पाइप लाइन, सड़क, फ्लाइओवर, बस टर्मिनल, क्षेत्रीय रेल परिवहन और शहरी परिवहन जैसी जन उपयोगिता के ढांचागत विकास में मदद मिलेगी।

अगले पांच वर्षों में पीएम गति शक्ति के 300 कार्गो टर्मिनल होंगे विकसितः केंद्रीय मंत्री ठाकुर ने बताया कि इस फैसले से उक्त परियोजनाओं के अलावा अगले पांच सालों के भीतर 300 से अधिक कार्गो टर्मिनल विकसित किए जाएंगे।

पहली बार मदरसे को खुद मुस्लिमों ने ढहाया

गुवाहाटीः असम के गोलपारा जिले में मदरसों के गिराए जाने के बाद मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने बुधवार को कहा कि ये सभी मदरसे शिक्षा का केंद्र नहीं बल्कि अल-कायदा का केंद्र थे। सरमा ने कहा- "हमने 2-3 मदरसे गिराए और अब जनता दूसरे मदरसों को गिराने खुद आगे आ रही है। मुस्लिम समुदाय यह कहते हुए मदरसे ध्वस्त करने आगे आ रहा है कि वे नहीं चाहते जहां अल-कायदा का काम होता है, वहां बच्चों को भेजा जाए। इससे मदरसे का चरित्र बदल जाता है।"

दिल्ली सरकार ने दिल्ली में पटाखों पर लगाया बैन

नई दिल्लीः दिल्ली में 1 जनवरी 2023 तक सभी तरह के पटाखों पर बैन लगा दिया गया है। इसमें पटाखों को ना तो बनाया जाएगा न स्टोर किया जाएगा और न ही बेचा जाएगा। इसकी घोषणा दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने की है। उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा- दिल्ली में लोगों को प्रदूषण के खतरे से बचाने के लिए पिछले साल की तरह ही इस बार भी सभी तरह के पटाखों पर बैन रहेगा। पटाखों की ऑनलाइन बिक्री और डिलीवरी पर भी रोक रहेगी।

30 विभागों के अधिकारियों को दिए आदेशः पटाखों पर प्रतिबंध को लेकर पुलिस को भी निगरानी रखने के आदेश दिए गए हैं। राय ने सोमवार को एक बयान में कहा था कि ठंड में राजधानी में वायु प्रदूषण को रोकने के लिए केंद्रीय आयोग ने जितने कदम बताए हैं, सरकार उससे कई ज्यादा सावधानी रखेगी। राय ने इससे जुड़े 30 विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक के बाद कहा कि सभी विभाग को काम सौंपे गए हैं। साथ ही वायु प्रदूषण के कम करने की योजना बनाने के आदेश दिए गए हैं

पिछले साल भी लगाया था बैनः पिछले साल भी पॉल्यूशन कंट्रोल कमेटी ने पटाखों पर बैन लगा दिया था। उसमें 1 जनवरी 2022 तक पटाखों पर बैन के आदेश दिए गए थे। इसमें रोक लगाने की वजह कोरोना और प्रदूषण बताई गई थी।

हर साल होने वाली मौतों की चौथी सबसे बड़ी वजह प्रदूषणः दुनियाभर में होने वाली कुल मौतों में प्रदूषण चौथी सबसे बड़ी वजह है। 2019 में प्रदूषण की वजह से 66.7 लाख लोगों की मौत हुई है। 2018 में प्रदूषण मौत की 5वीं सबसे बड़ी वजह था। वायु प्रदूषण की वजह से लो और मिडिल इनकम देशों में सबसे ज्यादा मौतें हो रही हैं।

बेंगलुरु में बाढ़ जैसे हालात, भारी बारिश का रेड अलर्ट

बेंगलुरुः बेंगलुरु में एक हफ्ते से भारी बारिश जारी है। 3 दिन से शहरभर में पानी भरा है। क्या सड़कें और क्या कॉलोनियां, सभी डूबे हैं। उधर मौसम विभाग ने बेंगलुरु में बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। विभाग का कहना है कि अगले पांच दिनों में लगातार भारी बारिश हो सकती है। जिससे हालात और ज्यादा खराब होने की संभावना है।

होटल में एक रात रुकने का किराया हुआ 40 हजारः बेंगलुरु में कालोनियों के डूबने से होटलों का किराया दोगुना हो गया है। यहां एक रात ठहरने के लिए कमरों की कीमत 30 से 40 हजार हो गई

है। एक वीडियो सामने आया है जिसमें बागलकोट की नहर पर बने एक पुल को पार करने जेसीबी की मदद ली गई। इसकी आर्म पर स्कूली बच्चे थे, जिन्हें रास्ता क्रॉस करवाया गया। दूसरी तरफ अमेजन, स्विगी जैसी ई-कॉमर्स कंपनियों ने भी बारिश और बाढ़ के चलते कुछ समय के लिए अपनी सर्विस सस्पेंड कर दी है।

रूस-यूक्रेन युद्ध का शांति से निकले समाधानः मोदी

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि कोविड महामारी और अब यूक्रेन संघर्ष के चलते दुनिया में सप्लाई चैन बुरी तरह प्रभावित हुई है। इसका असर खाद्यान्न, उर्वरक और ईंधन पर पड़ा है जिससे इनकी कमी हो गई है। भारत चाहता है कि संघर्ष का शांतिपूर्ण प्रयासों से समाधान हो। प्रधानमंत्री मोदी ने आज वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से रूस के व्लादिवोस्तोक में आयोजित 7वीं पूर्वी आर्थिक मंच (ईस्टर्न इकोनोमिक फोरम) के पूर्ण सत्र को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि आज के वैश्वीकृत दुनिया में, विश्व के किसी एक हिस्से की

घटनाएं पूरे विश्व पर प्रभाव पैदा करती हैं। यूक्रेन संघर्ष और कोविड महामारी से ग्लोबल सप्लाई चेन्स पर बड़ा असर पड़ा है। खाद्यान्न, उर्वरक, और ईंधन की कमी विकासशील देशों के लिए बड़ी चिंता के विषय हैं। यूक्रेन संघर्ष की शुरूआत से ही, हमने कूटनीति और संवाद का मार्ग अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। हम इस संघर्ष को समाप्त करने के लिए सभी शांतिपूर्ण प्रयासों का समर्थन करते है। उन्होंने कहा कि भारतीय वाणिज्य दूतावास इस महीने व्लादिवोस्तोक में अपनी स्थापना के 30 साल पूरे करेगा। इस शहर में वाणिज्य दूतावास खोलने वाला भारत पहला देश था। उन्होंने कहा कि 2015 में स्थापित पूर्वी आर्थिक मंच रसियन फॉर ईस्ट के विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक प्रमुख वैश्विक मंच बन गया है। इसके लिए मैं रूसी राष्ट्रपति पुतिन की दूरदर्शिता की प्रशंसा करता हूं। उन्होंने कहा कि 2019 में मुझे इस फोरम में रू-ब-रू हिस्सा लेने का मौका मिला था। उस समय हमने भारत की "एक्ट फॉर ईस्ट" नीति की घोषणा की थी।

गायों को खुले में गिद्धों के लिए फेंका जा रहा; 5 किमी दूर से आ रही बदबू

लंपी का कहरः हजारों गायों की लाशों से ढंके मैदान

बीकानेरः राजस्थान समेत कई राज्यों में लंपी बीमारी कहर बरपा रही है। गोवंश में फैले इस वायरस की तुलना इंसानों के लिए जानलेवा रहे कोरोना वायरस से की जा रही है। राजस्थान और गुजरात में तो इस बीमारी के कारण हजारों की संख्या में गोवंश की मौत हो चुकी है। हालात यह हैं कि संख्या अधिक होने के कारण गोवंश को दफनाने के बजाय खुले में फेंका जा रहा है। इससे रिहायशी इलाकों में बदबू फैल रही है। इंसानों के लिए नई बीमारी का खतरा पैदा हो रहा है। राजस्थान के करीब दस जिलों में लंपी कहर ढा रही है। राजस्थान में बीते करीब एक माह में 50 हजार से ज्यादा गोवंश की मौत हुई है।

बीकानेर में हर रोज 300 गायें मर रहींः जोधपुर, जालोर, पाली और बीकानेर में हालात सबसे अधिक खराब हैं। बीकानेर में तो हालात इन दिनों भयावह हैं। शहर के आसपास के इलाकों में हर दिन करीब 300 गोवंश की मौत हो रही है। वहीं, प्रशासन और स्थानीय लोग गायों और दूसरे मरे जानवरों को शहर से ही करीब दस किलोमीटर दूर जोड़बीड़ के खुले डंपिंग यार्ड में फेंक रहे हैं। जोड़बीड़ का यह इलाका जानवरों के डंपिंग यार्ड के लिए ही चिह्नित है। ये पूरा एरिया गिद्धों के लिए जाना जाता है। यहां पहले भी मरे ऊंटों और जानवरों को गिद्धों के लिए डाला जाता रहा है, लेकिन इस बार जानवरों की संख्या अधिक है। इससे यहां चारों ओर गोवंश की लाशें फैल गई हैं और गिद्धों की संख्या फिलहाल यहां कम होने से शव सड़ रहे हैं।

मिशन 2024: पवार से मिले सीएम नीतीश

पटनाः बिहार में भारतीय जनता पार्टी का साथ छोड़कर सीएम नीतीश कुमार ने महागठबंधन के साथ नई सरकार बना लगी। इस सियासी बदलाव के अब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भाजपा के विरुद्ध मिशन दिल्ली पर हैं। इस दौरान उन्होंने विपक्षी पार्टियों के कई नेताओं से मुलाकात की है। बुधवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार से मुलाकात की है।

सीएम नीतीश बोले- नेता का फैसला बाद मेंः शरद पवार से मुलाकात के बाद सीएम नीतीश

कुमार ने कहा कि पहले एक साथ आना महत्वपूर्ण है, जिन्होंने विपक्षी गठबंधन की व्यापक रूपरेखा पर पवार के साथ विचार-विमर्श किया। सीएम नीतीश ने कहा कि भाजपा के लिए एक विकल्प पेश करने का समय आ गया है, उन्होंने आरोप लगाया कि वह "लोगों के लिए कुछ नहीं कर रही है।' मुख्यमंत्री ने राकांपा सुप्रीमो के साथ 30 मिनट की बैठक के बाद संवाददाताओं से बात की इस दौरान उन्होंने कहा कि 'पवार और मैं दोनों विपक्षी ताकतों को एकजुट करना चाहते हैं, जो भाजपा के साथ नहीं हैं। गठबंधन के नेता का फैसला बाद में किया जा सकता है। पहले एक साथ आना जरूरी है।'

'सोनिया गांधी से मिलने फिर आऊंगा दिल्ली': सीएम नीतीश कुमार ने तीन दिवसीय दिल्ली दौरे के दौरान विपक्ष के कई बड़े नेताओं से मुलाकात की।

खबर संक्षेप

मियांपुर दंगल में आजमगढ़ के रामसिंह बने विजेता

प्रतापपुर। विकास खण्ड प्रतापपुर के मियांपुर बाजार की ऐतिहासिक दंगल प्रतियोगिता में चैंपियन का खिताब इस बार आजमगढ़ अखाड़ा के रामसिंह ने जीता।उन्होंने रोमांचक मुकाबले में जौनपुर के पहलवान उमा को पराजित किया विजेता और अन्य विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई।दंगल का प्रारंभ जूनियर पहलवानों लल्ला बनारस और राजेन्द्र चंदौली के कुश्ती से हुआ उसके बाद एक-एक कर के इक्कीस जोड़ी पहलवानों ने कुश्ती की कला दांव, पेंच और जोर आजमाइए किया।सबसे ज्यादा मनोरंजन का केंद्र एक दिव्यांग पहलवान रहा उसने कड़े मुकाबले में सामने वाले पहलवान को पराजित कर कमेटी और दर्शकों के बीच हजारों रुपये हासिल कर लिया।चैंपियन एवं अन्य विजेताओं को पुरस्कार वितरण करते हुए जिला पंचायत सदस्य अरविंद विश्वकर्मा ने कहा कि प्रतियोगिता आम लोगो मे प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का साधन है तो वही युवा पीढ़ी के लिए स्वास्थ्य रक्षा का आधार है।इस मौके पर पूर्व प्रधान विजय साहू, व्यापार मंडल के अध्यक्ष प्रभु केसरी, विकास केसरी, सुधीर गुप्ता, नीरज केसरी, राधेश्याम केशरी के अलावा दंगल एवं मेले में सरायममरेज थाना प्रभारी तरुणेंद्र त्रिपाठी अपने हमराहियों के साथ मौजूद रहे।

उर्मिला देवी इंटर कॉलेज के प्रबंधक व तीन अन्य के खिलाफ दर्ज हुई एफआईआर

फीस के लिए खुदकुशी करने वाले छात्र प्रतीक को न्याय दिलाने के लिए मंगलवार की शाम सैकड़ों लोगों ने कैंडल मार्च निकाल थाने पर कार्रवाई को लेकर बैठ गए थे धरनें पर

अखंड भारत संदेश

देर रात पुलिस अधिकारियों से वार्ता होती मृतक के परिजन व लोगों की भीड़

झूंसी। फीस के लिए खुदकुशी करने वाले छात्र प्रतीक को न्याय दिलाने के लिए मंगलवार को शाम सैकड़ों लोगों ने कैंडल मार्च निकाल थाने पर पहुंचकर कार्रवाई की मांग करते हुए धरनें पर बैठ गए थे। तब पुलिस ने मामला दर्ज किया। मंगलवार की शाम इंटर के छात्र रहे प्रतीक को इंसाफ दिलाने के लिए सैकड़ो लोग हाथों में कैंडल लिए सड़कों पर उतर स्कूल के खिलाफ नारेबाजी करते हुए थाने पर पहुच गए। पहुंचे एसपी गंगापार, सीओ दारागंज ने लोगों को समझाने का प्रयास किया पर लोग नही माने तब जाकर देर रात पुलिस ने मृतक छात्र प्रतीक के बड़े भाई की तहरीर पर स्कूल प्रबंधक संजय मौर्या, प्रिंसिपल, आशुतोष सिंह , टीएन मौर्या, संजय मिश्रा, खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली।

मऊआइमा में फिर दो स्थानों पर लाखों की चोरी मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा में चोरी का सिलसिला बदस्तूर जारी है। अभी तक चोरों पर कोई अंकुश नहीं लग पाया। चोरों ने एक मोबाइल की दुकान में सेंधमारी करके लाखों की चोरी की है तथा एक मकान से लाखों की चोरी की है। पुलिस ने दोनों मामलों में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम से सिसवां मजरा बबुरी निवासी राज कुमार त्रिपाठी पुत्र सन्त लाल त्रिपाठी का परिवार आंगन में सोया था। बताया गया है कि चोर दूसरे के छत से चढ कर राज कुमार के छत पर चढ कर सीढी के रास्ते कमरों की कुंडी काट कर सन्दूकों में रखा चौबीस हजार नगदी ,सोने, चांदी के आभूषणों पर हाथ साफ कर भाग गए। सुबह चोरी की जानकारी होने पर राजकुमार त्रिपाठी के घर में कोहराम मच गया। सूचना पर पुलिस पहुंच कर जांच में जुटी हुई है। राज कुमार त्रिपाठी ने मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है । उधर ग्राम महरौंडा निवासी जीतेंद्र कुमार पुत्र सरजू प्रसाद गदियानी चौराहे पर मोबाइल की दुकान चलाता है। चोरों ने सेंधमारी करके लैपटॉप ,मोबाइलों ,फिंगर मशीन ,एटीएम फिंगर मशीन तथा दस हजार नगदी चोर चोरी कर ले गए। जीतेंद्र के अनुसार लगभग डेढ लाख की उनकी दुकान में चोरी हुई है। जीतेंद्र कुमार ने मऊआइमा थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

न्यूज झरोखा

एचएन बहुगुणा महाविद्यालय में मनाया गया राष्ट्रीय पोषण सप्ताह

नैनी। हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नात कोत्तर महाविद्यालय बुधवार को गृह विज्ञान विभाग द्वारा आयोजन प्राचार्य प्रो ओम प्रकाश के संरक्षण में किया गया।गृह विज्ञान विभाग के प्राध्यापक प्रो नीतू सिंह, डॉ नीति सिंह, डॉ रफत अनीस के दिशा निर्देशन में विभाग की छात्राओं ने भारत के विभिन्न प्रदेशों के लगभग 40 व्यंजनों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया और उनकी उपयोगिता का वर्णन भी किया।राष्ट्रीय पोषण सप्ताह 2022 की थीम पर आधारित उक्त प्रदर्शनी का आयोजन भारत के पारंपरिक स्वाद और व्यंजन से परिचित कराना था।प्रदर्शनी का उद्घाटन प्राचार्य ने फीता कटकर किया और छात्राओं के प्रयास की सराहना भी की।प्रदर्शनी में आए महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों ने करेले की मिठाई,दलिया की कचौरी,मूसल पाव, इडली सांभर, मूंग की मिठाई,लौकी की बर्फी,खट्टी मीठी बाटी आदि व्यंजनों का भरपूर लुत्फ उठाया।प्रदर्शनी के माध्यम से भारतवर्ष के विभिन्न पारंपरिक मसलों की उपयोगिता तथा भारतीय पाक कला के विषय में भी छात्र छात्राओं को अवगत कराया गया।प्रदर्शनी में समस्त प्राध्यापक तथा कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

छात्र-छात्राओं को बांटा गया स्मार्टफोन, खिल उठे चेहरे

मेजा रोड। विकास खंड उरुवा के मथुरा प्रसाद मिश्र महाविद्यालय औंता में विद्यालय के छात्र छात्राओं को स्मार्टफोन बांटा गया स्मार्टफोन पाकर छात्र छात्राओं के चेहरे खिल उठे।बुधवार को प्रबंधक राघवेंद्र नारायण मिश्र व प्राचार्य डॉ योगेश कुमार शर्मा ने बीए, बीएससी के 240 छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन वितरित किया गया।निः शुल्क स्मार्टफोन पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। इस दौरान प्रबंधक राघवेंद्र नारायण ने छात्र छात्राओं से कहा कि सरकार द्वारा दिया जा रहा स्मार्टफोन आप लोग अपनी पढ़ाई लिखाई में जरूर वियोग करें ताकि सरकार द्वारा दिया गया फोन का सही प्रयोग हो सके। फोन वितरण के दौरान कालेज के संस्थापक यतीश कुमार मिश्र, सनत मिश्र, राजेश शर्मा, सुरेंद्र गौतम, अनूप प्रताप सिंह, मधुसूदन मिश्र, संतोष कुमार, पन्नालाल, रमाकांत कुशवाहा सहित विद्यालय के समस्त स्टाप मौजूद रहे।

नगर में लगी तीन स्थानों पर हाई मास्ट लाइटें

रत्योरा। नगर पंचायत कोरांव की पूर्व अध्यक्षा रही सुषमा केसरी के प्रतिनिधि ओम प्रकाश केसरी के प्रयास से राज्यसभा सांसद रहे कु0 रेवती रमण सिंह की निधि से नगर के तीन स्थानों पर हाई मास्ट लाइटें लगवाई गई जिससे नगर के लोगों में उत्साह देखा जा रहा है। पूर्व सांसद की निधि से नगर के तीन स्थानों पर 9 मीटर ऊंची हाई मास्ट लाइट के अधिष्ठापन से अब नगर में अंधेरे की समस्या दूर होगी। पूर्व चेयरमैन के प्रतिनिधि ओमप्रकाश केसरी ने राज्यसभा सांसद रेवती रमण सिंह को नगर की समस्याओं को दूर करने के लिए निधि देने के लिए आभार जताया और कहा कि चेयरमैन रहते हुए भी नगर के विकास के लिए प्रयासरत रहता हूं। जिन तीन स्थानों पर हाई मास्ट लाइट का अधिष्ठापन हुआ उनमें ब्लॉक मुख्यालय के पास भैयालाल गैरेज के बगल व आजाद नगर और अंबेडकर नगर शामिल हैं। पूर्व चेयरमैन ओमप्रकाश केसरी ने कहा है कि आने वाले समय में नगर की जनता ने अपना भरपूर सहयोग और आशीर्वाद दिया तो नगर के चहुमुखी विकास में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा।

महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रस्तुत किया सांस्कृतिक कार्यक्रम

जंघई। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में शिक्षक दिवस के साप्ताहिक कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में स्वागत गीत, देशभक्ति गीतों पर नृत्य एवं भाषण देकर उपस्थित लोगों को भाव-विभोर कर दिया सभी छात्राओं ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी।इस अवसर पर प्रिया कनौजिया, शिल्पा मौर्या, पिंकी पांडेय द्वारा स्वागत गीत एवं अरूणा गौतम, डेजी गुप्ता, मान्या, विपुल उपाध्याय नीरज गुप्ता द्वारा द्वारा डांस, अर्चना सरोज द्वारा गीत शालू पाठक, कोमल गौतम द्वारा एंकरिंग तथा वंदना एवं नीलम द्वारा ओजस्वी भाषण दिया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 राजीव मालवीय एवं समस्त शिक्षक मौजूद रहे।

त्योहारों के मद्देनजर सीओ ने चलाया चेकिंग अभियान

नैनी। कोतवाली क्षेत्र में शांति एवं कानून-व्यवस्था बनाये रखने के दृष्टिगत से बुधवार को क्षेत्राधिकारी करछना अजीत सिंह चौहान एवं नैनी थाना प्रभारी सुरेन्द्र कुमार वर्मा नैनी थाना एसएसआई अजय कुमार सिंह एवं नैनी कस्बा चौकी इंचार्ज उमाशंकर सिंह पुलिस बल के द्वारा नैनी स्टेशन एवं प्रमुख चौराहों, बाजारों व अन्य सार्वजनिक स्थानों पर पैदलगश्त कर संदिग्ध व्यक्ति/वाहनों की सघन चेकिंग की गयी। त्योहारों को मद्देनजर रखते हुए नैनी कस्बा चौकी इंचार्ज उमाशंकर सिंह कस्बे में गश्त बढ़ाई

अजय सोनकर बनें शोषल मीडिया प्रभारी

करछना। विधानसभा क्षेत्र के मड़वा गांव निवासी अजय कुमार सोनकर को भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित मोर्चा जिला यमुनापार का सोशल मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया है। यह जानकारी भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित मोर्चा के जिला यमुनापार अध्यक्ष राजमणि पासवान ने दी है। लोगों ने नवनियुक्त सोशल मीडिया प्रभारी को बधाई देते हुए खुशी का इजहार किया है। जिसमें जिला महामंत्री मुकुन्द लाल सोनकर जिला मंत्री नरेश सोनकर राहुल सोनकर सर्वेश सोनकर अनिल कुमार सुभाष चंद्र उमेश कुमार सुशील कुमार सोनू राजन कुमार आदि ने उन्हें बधाई दी है।

आबकारी सीओ ने दर्ज कराया चार के विरूद्ध मुकदमा, दो भेजे गए जेल दो की तलाश जारी

मऊआइमा के ग्राम छाता में एक कमरे से 935 पेटी अंग्रेजी अवैध शराब आबकारी विभाग ने पकड़ा था

मऊआइमा। चंडीगढ़,से तस्करी करके लायी गयी 935 पेटी लगभग 5 3 लाख की अवैध शराब आबकारी विभाग ने मुखबिर की सूचना पर छापा मारी करके एक कमरे से 935 पेटी अवैध शराब बरामद की थी। मौके से मकान मालिक और उसका पुत्र गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गये है। मालूम हो कि मऊआइमा क्षेत्र के ग्राम छाता निवासी सीताराम पुत्र पंचम लाल तथा वीरेन्द्र कुमार पुत्र सीताराम के कमरे काफी दिनों से चंडीगढ़ से तस्करी करके लायी जा रही अंग्रेजी शराब एकत्रित करके विभिन्न स्थानों पर बेची जा रही थी। मंगलवार को शाम के समय मुखबिर की सूचना पर असिस्टेंट कमिश्नर एसके सोनकर ,सहायक आबकारी आयुक्त संतोष श्रीवास्तव , सहकारी आयुक्त विजय सिंह ,आबकारी सीओ तृतीय फूलपुर नेहा कुमारी तथा आबकारी विभाग के एसके शुक्ला ,अजय सिंह आदि ने छाता में छापामारी की। एक कमरे में डम की गई। 935 पेटी अंग्रेजी शराब लगभग 45 हजार शीशी 180 एम एल की लगभग53 लाख का माल बरामद किया था। सूचना पर मऊआइमा इंस्पेक्टर सुरेश सिंह ,एस आई तारा चन्द्र ,संजय मौर्या ,रमेशचंद्र आदि भी पहुंच गए। बताया गया है कि चंडीगढ़ में अंगेजी शराब सस्ती है जबकि यूपी में महंगी है। बताया जाता है कि उक्त गोरख धंधा काफी दिनों से चल रहा था। फिलहाल आबकारी अधिकारियों ने मकान मालिक सीता राम और बृजेन्द्र कुमार को हिरासत में लेकर तस्करी के बाबत पूछताछ की तो दोनों ने बताया कि ग्राम घीनपुर के रजवापुर निवासी साहिल और आशिक अली भी उक्त गोरख धंधा में शामिल हैं। आबकारी विभाग की क्षेत्राधिकारी तृतीय फूलपुर नेहा कुमारी ने मऊआइमा थाने में बृजेन्द्र कुमार उसके पिता सीता राम ,रजवापुर के साहिल पुत्र भुट्टो ,आशिक अली पुत्र सादिक अली के खिलाफ 419 ,420 ,467 ,468 ,471 तथा 63 आबकारी अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज करा दी। पुलिस ने बुधवार को सीता राम और उनके पुत्र बृजेन्द्र कुमार को जेल भेज दिया है। शेष आरोपियों की तलाश में मऊआइमा पुलिस दबिश दे रही है। आबकारी क्षेत्राधिकारी नेहा कुमार तृतीय फूलपुर ने बताया कि सारी पकडी गयी।शराब अंगेजी व्हीस्की है। और चंडीगढ़ की निर्मित है। उनहोंने बताया कि पकडने के लिए वह काफी दिनों से मुखबिर लगायी थी। उन्होंने ने बताया कि जल्द और तस्करी की शराब पकडी जाएगी। यह असली है कि नकली है । आबकारी विभाग का कहना है कि इसकी भी जांच चल रही है।

बेटे का शव कंधे पर रखकर ढोने वाला पीड़ित आवास के लिए काट रहा है

करछना। क्षेत्र के सेमरहा उपहार गांव में बीते दिनों उक्त गांव निवासी बजरंगी लाल का बेटा शुभम की करंट लगने से मौत हो गई थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया था। लेकिन पोस्टमार्टम हाउस पर शव वाहन की व्यवस्था ना हो पाने के कारण विवस मां बाप नेबारिश के बीच अपने जिगर के टुकड़े के शव को कंधे पर लादकर घर की ओर पैदल ही आ रहा था। तभी रास्ते में कुछ लोगों ने कंधे पर सर रखकर जाता देख वीडियो बनाकर इंटरनेट मीडिया पर वायरल कर दिया था। जिसके बाद तहसील व प्रशासन में खलबली मच गई। मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने पीड़ित परिवार को 5 लाख मुआवजा, आवास, शौचालय , अंतोदय कार्ड मुहैया कराने का आश्वासन दिया था। लेकिन कई महीने बीत जाने के बाद भी अभी तक पीड़ित परिवार को प्रशासन की ओर से कोई भी सहायता प्रदान नहीं की गई। बुधवार को पीड़ित बजरंगी लाल पत्नी व दो बच्चों के साथ करछना तहसील पहुंचकर उप जिलाधिकारी रेनू सिंह को एप्लीकेशन देकर आवास व मुआवजे का माग किया। वही उप जिलाधिकारी ने बीडिओ को जांचो उपरांत कार्रवाई करने का आदेशित किया है।

युवक की लुधियाना में संदिग्ध मौत, परिजनों में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा के एक युवक की संदिग्ध हालात में लुधियाना में उसके कमरे के स्टोर रूम में रस्सी से झूलता हुआ मिला। पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के बाद उसके बडे भाई को सौंप दी है। बडे भाई ने अज्ञातों के खिलाफ तहरीर दी है। मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला पूरा काजी (गंजियाबाजार) निवासी सुशील कुमार 25 वर्ष पुत्र लाल बहादुर पंजाब प्रान्त के जिला लुधियाना के थाना मुल्लापुर ग्राम रानके में कमरा लेकर अपने साथियों के साथ रहता था। बताया गया है कि वह हीरो फूल्ड प्राइवेट लिमिटेड में काम करता था। साथ में रूम पार्टनर भी रहते थे। सुशील कुमार का बडे भाई सुनील कुमार से अलग रहता था। वह दूसरी कंपनी में काम करता था। बताया है कि सुशील कुमार सोमवार को वह किसी को दस हजार रुपये भी दिया था। और मऊआइमा अपने माता पिता से बात भी किया था। बताया गया है कि सुशील कुमार अपने साथियों के साथ सो गया। सुबह मंगलवार को स्टोर रूम में उसका शव रस्सी से झूलता मिला। बडे भाई सुनील कुमार को खबर हुई तो वह मुल्लापुर थाने में तहरीर दी।पुलिस शव का पोस्टमार्टम करा कर बडे भाई सुनील कुमार को सौंप दी । बुधवार को जब सुशील कुमार का शव कस्बा के मोहल्ला पूरा काजी गंजियाबाजार घर पहुंचा तो घर में

शव कमरे के स्टोर रूम में रस्सी से झूलता मिला, बडा भाई शव को लुधियाना से लेकर आया मऊआइमा

कोहराम मच गया। माता सावित्री देवी ,पिता लालबहादुर का रो रो कर बुरा हाल है। मृतक के भाई ने सनील कुमार ने बताया कि वह क्यों फांसी लगाई। वह ऊसके समझ में नहीं आ रहा है। इसकी छानबीन पुलिस कर रही है। बताया गया है कि पुलिस कुछ रुम पार्टनर को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। मृतक सुशील कुमार की शादी 20 नवम्बर को तय थी। मृतक तीन भाईयों एक बहनों से छोटा था दो भाईयों से बडा था। सुशील कुमार के शव को मऊआइमा के बरताल कब्रिस्तान में बुधवार को दफना दिया गया।

पाठक का पूरा की बालिकाएं कबड्डी में प्रथम, हुए पुरस्कृत

बिजलीपुर संकुल के दर्जन भर से अधिक विद्यालय के बच्चों का पटना उपरहार में हुआ मुकाबला

अखंड भारत संदेश

लालगोपालगंज के पटना उपरहार में पुरस्कार लेतीं पाठक का पूरा की विजयी बालिकाएं।

लालगोपालगंज। परिषदीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की क्रीड़ा प्रतियोगिता का अंतिम दौर समाप्त हुआ। ब्लॉक के अलग-अलग एनपीआरसी में नियत तिथियों पर बच्चों के बीच मुकाबला हुआ। पटना उपरहार में आयोजित बिजलीपुर संकुल में पाठक का पूरा की बालिकाएं अपने प्रतिद्वंद्वियों को शिकस्त देते हुए अव्वल मुकाम हासिल किया श्रृंगवेरपुर ब्लॉक के पटना उपरहार में बिजलीपुर एनपीआरसी के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के खेलकूद का मुकाबला हुआ। लंबी कूद ऊंची कूद कबड्डी खो-खो जैसे खेल आयोजित किए गए। पाठक का पूरा की बालिकाओं ने अपने प्रतिद्वंदी कई टीमों को पटखनी देते हुए एनपीआरसी में अव्वल मुकाम हासिल किया। जबकि पलएं की बालिकाओं ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्राइमरी स्तर की ऊंची कूद, सौ मीटर और दो सौ मीटर की लंबी दौड़ में डहरपुर के कुलदीप कुमार ने शानदार प्रदर्शन कर चारों प्रथम इनाम अपने नाम कर लिया। जबकि ऊंची कूद और 100 मीटर की लंबी दौड़ में पाठक का पूरा धीरज कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जूनियर की 100 मीटर की लंबी दौड़ में लालगोपालगंज का विवेक और 100 मीटर की दौड़ में लालगोपालगंज के आकाश ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार अन्य विद्यालयों के बच्चों ने भी इनाम हासिल की निर्णायक की भूमिका ज्ञानेंद्र सिंह और इस पूरक के रूप में विपिन खरवार ने जिम्मेदारी निभाई कार्यक्रम का आयोजन अग्नि बेला अनुदेशक खेल के नेतृत्व में हुआ। इस अवसर पर मदन मोहन शुक्ल, इमरान कलीम, सुमन वर्मा, सोनी यादव आदि तमाम शिक्षक प्रशिक्षण मे उपस्थित रहे।

ग्राम इकाइयों को मजबूत करने का काम कर रही भाजपा सरकार राजमणि कोल

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। ग्राम पंचायतों को लगातार मजबूत करने का काम केंद्र की मोदी व प्रदेश की योगी सरकार कर रही है। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को उनके गांव में ही समस्त सरकारी योजनाओं का लाभ मिले इसके लिए जिन गांवो में पंचायत भवनों का निर्माण नहीं हुआ था उन्में पंचायत भवनों का निर्माण कराकर तथा जिन गांवो में पंचायत भवनों का निर्माण हुआ था और जर्जर हो गए थे उनका मरम्मतीकरण करा कर पंचायत भवनों को कंप्यूटरीकृत किया जा रहा है। जिससे वृद्धा, विधवा, विकलांग पेंशन समेत खतौनी एवं अन्य सरकारी कार्य व ऑनलाइन आवेदन हो सके। उक्त बातें कोरांव भाजपा विधायक राजमणि कोल ने टुड़ीयार गांव में नवनिर्मित पंचायत भवन का लोकार्पण करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कही। लोकार्पण समारोह में उपस्थित लोगों को विधायक राजमणि कोल ने सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को बताते हुए उनका लाभ लेने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि किसानों गरीबों एवं मजदूरों के लिए

टुड़ीयार गांव में पंचायत भवन का लोकार्पण करने के दौरान बोले विधायक

नित नई योजनाओं का सृजन कर प्रदेश को उत्तरोत्तर विकास के गति पर ले जाने का काम उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कर रहे हैं। बिना किसी भेदभाव के हर योजनाओं का लाभ प्रत्येक जरूरतमंद लोगों को मिल रहा है। इस दौरान खंड विकास अधिकारी मुकेश कुमार ने आए हुए अतिथियों का आभार जताते हुए विकास विभाग से चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामीणों को दी। लोकार्पण समारोह में प्रमुख रूप से बबुआन द्विवेदी, अनिल मिश्र, विधायक पीआरओ रामाश्रय शुक्ल समेत भारी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

पुण्यतिथि पर आयोजित कवि सम्मेलन संपन्न

भारतीय किसान सेना लोकतांत्रिक ने किया कवियों और पत्रकारों को सम्मानित

अखंड भारत संदेश

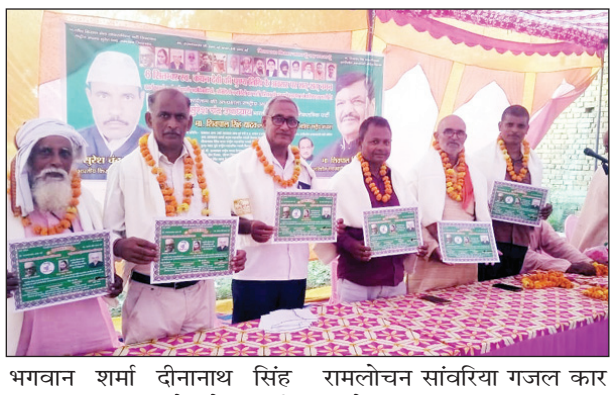

करछना। भारतीय किसान सेना लोकतांत्रिक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चंद्र उपाध्याय के संयोजकत्व में पार्टी की पूर्व राष्ट्रीय महासचिव रही स्व कंचन देवी की पांचवीं पुण्यतिथि खांई गांव में मंगलवार को संकल्प दिवस के रूप में मनाई गई । जिसमें मौजूद लोगों की ओर से उनके छायाचित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित करके उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि भी दी गई । इस अवसर पर प्रकाश राय उर्फ लल्लन राय पूर्व मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव जय भगवान शर्मा दीनानाथ सिंह यादव इन्द्र नाथ दुबे रहे । वही सांय कालीन में कवि सम्मेलन भी आयोजित हुआ। जिसमें गीतकार डॉ भगवान प्रसाद उपाध्याय गीतकार डॉ राजेंद्र शुक्ल ओज कवि डॉ वीरेंद्र कुसुमाकर लोक विधा रामलोचन सांवरिया गजल कार सवरेज अहमद कवि बब्लू सिंह की ओर से संवेदना गीतों की प्रस्तुतियां भी हुई । अध्यक्षता सुधाकर शुक्ल व संचालन शैलेंद्र श्रीवास्तव प्रदेश महासचिव ने किया । पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चंद्र उपाध्याय की ओर से सभी अतिथियों को प्रशस्ति पत्र सहित अंगवस्त्रम देकर सम्मानित भी किया गया । उन्होंने बताया कि इस अवसर पर मोहम्मद आसिफ की अगुवाई में दर्जन भर से अधिक लोगों ने पार्टी की सदस्यता भी ग्रहण की। उन्होंने कार्यक्रम में शिरकत किए सभी लोगों के प्रति आभार जताया । इस मौके पर अपना भारतीय सनातन पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष शेषधर पांडेय भारतीय किसान सेना पार्टी के जिला अध्यक्ष नागेश्वर मिश्र घनश्याम मिश्र नारायण सिंह डा लालजी केसरी गुलजार सिंह चौहान देवेंद्र कुमार दिनेश कुमार संतोष कुमार पांडेय आदि लोग मौजूद रहे।

चार ग्राम पंचायतों में सचिव नहीं,विकास कार्य बाधित

लालापुर। प्रयागराज के विकास खण्ड शंकरगढ़ के चार ग्राम पंचायतों में सचिवों की तैनाती न होने के कारण आम जनता को विभिन्न कार्यों के लिए काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं विकास कार्य भी प्रभावित हो रहा है। इस बाबत पूछने पर विकासखंड शंकरगढ़ कार्यालय ने बताया कि यहां से फाइल बनाकर जिले स्तर में भेज दिया गया है और जब इस सम्बंध में डीपीआरओ महोदय को अवगत कराया गया तो डीपीआरओ महोदय ने बताया कि जिलाधिकारी महोदय से अप्रूवल न मिलने से ग्राम सभा में सचिवों की तैनाती नहीं है। वहीं ग्रामीणों का कहना है कि दो महीनों से चली आ रही इस समस्या का कोई समाधान नहीं होने से लोगों में काफी आक्रोश है।

दबंग भू माफियाओं के आगे प्रशासन पश्त

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। कोरांव क्षेत्र में इन दिनों भू माफियाओं एवं सरहगो का बोलबाला चरम पर है। सक्षम अधिकारियों के आदेश निर्देश भी उनके लिए मायने नहीं रखते। तहसील क्षेत्र के खजुरी खुर्द गांव में ऐसा ही एक मामला लगभग 2 वर्षों से चला आ रहा है। पत्रकार सुख लाल विश्वकर्मा का पुश्तैनी कच्चा मकान खजुरी खुर्द गांव के लबे सड़क पर स्थित है। 2 वर्ष पूर्व भीषण वर्षा में मकान जर्जर होकर ढह गया था। जिस पर तहसील प्रशासन की ओर से आपदा राहत धनराशि भी उपलब्ध कराई जा चुकी है। जिसके आधार पर पत्रकार सुखलाल विश्वकर्मा की माता राजकली देवी के नाम से प्रधानमंत्री आवास भी स्वीकृत हो गया है। जिसकी प्रथम किस्त मिल चुकी है, और आवास निर्माण हेतु गिट्टी एवं बालू, सरिया आदि निर्माण सामग्री भी घर के सामने रखा हुआ है, किंतु 3 वर्ष पहले बिहार प्रांत से आकर खजुरी खुर्द गांव में बसे महेंद्र पाल सिंह करीब 60 वर्ष पुराने पुश्तैनी मकान को अपनी जमीन बताकर निर्माण कार्य में लगातार व्यवधान डालते चला आ रहा है। इतना ही नहीं 60 वर्ष पुराना कच्चा मकान आबादी श्रेणी 6, 2 की भूमि में स्थित है। चकबंदी के दौरान अभिलेखीय हेराफेरी भी करते हुए 40 वर्ष पुराने कच्चे मकान को जबरन कब्जा करने की भरपूर

नाप पैमाइश सीमांकन होने के बाद भी पुश्तैनी मकान पर रोक रहे निर्माण कार्य

कोशिश की गई। हालांकि अभिलेखों में की गई हेरा फेरी को पत्रकार सुखलाल विश्वकर्मा ने सक्षम न्यायालय में वाद दाखिल कर संशोधित करा चुका है। एसडीएम व तहसीलदार ने मकान निर्माण में व्यवधान न डालने के निर्देश दिए हैं किंतु दबंग भूमाफिया निर्माण कार्य नहीं करने दे रहा है। सक्षम अधिकारियों के आदेशों की दबंग लगातार अवहेलना कर रहा है किंतु इलाकाई पुलिस और सक्षम अधिकारी मूकदर्शक बने बैठे हुए हैं। पत्रकार का पुश्तैनी मकान पूरी तरह से ढह चुका है। तिरपाल और पन्नी के सहारे वृद्ध राजकली अपने परिवार के साथ किसी तरह गुजर बसर कर रही है।

खबर संक्षेप

संदिग्ध परिस्थिति में पटरी की तीन दुकान में लगी आग

झूंसी। स्थानीय थाना क्षेत्र के आवास विकास कॉलोनी में मंगलवार की रात संदिग्ध परिस्थिति में पटरी की तीन दुकानों में आग लग गई। मौके पर पहुची दमकल की गाड़ी ने आग बुझाया तब तक तीनो दुकान जल कर खाक हो गई। बताया जाता है कि आवास विकास योजना तीन में पटरी किनारे लगी फल, रजाई गद्दा व एक नाइ की गुमटी में आग लग गई। जब तक लोग जान पाते आग भड़क चुकी थी। सूचना पर पहुची पुलिस ने आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड को दी मौके पर पहुची दमकल की गाड़ी ने आग बुझाया तब तक भोला नाइ की गुमटी के साथ रजाई गद्धा व फल की गुमटी पूरी तरह से जल कर खाक हो चुकी थी।

फल व्यापारी के घर दिनदहाड़े लूटपाट रॉड से पीटकर किया मरणासन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शाहगंज सब्जी मंडी में दुस्साहसिक वारदात हुई। यहां बुधवार सुबह फल व्यापारी मो. अंसार (55) के घर में घुसकर लूटपाट की गई। दो बदमाशों ने लाखों की नकदी व गहने लूट लिए। रॉड से हमलाकर उन्हें मरणासन्न कर दिया। उन्हें गंभीर हाल में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अंसार शाहगंज सब्जी मंडी में तीन मंजिला मकान में रहते हैं। भूतल व पहले तल पर दुकानें हैं। दूसरी मंजिल पर वह परिवार समेत रहते हैं। घर में बड़ा बेटा अजहर व उसकी पत्नी अलीशा और छोटा बेटा अल्ताफ है। बड़ा बेटा व्यापार में पिता का हाथ बंटाता है और छोटा बेटा बीएचएस में आठवीं का छात्र है। रोज की तरह बड़ा बेटा सुबह सब्जी मंडी जबकि छोटा बेटा स्कूल चला गया। अंसार ने बताया कि सुबह 8.30 बजे के करीब किसी ने बेल बजाई। दरवाजा खोलते ही दो लोग भीतर घुस आए। वह कुछ पूछते, इससे पहले ही लोहे की रॉड से उन पर हमला बोल दिया। सिर पर ताबड़तोड़ वार से वह लहूलुहान हो गए। बचने के लिए भागते हुए बाथरूम में घुसे तो बदमाशों ने दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। उधर, उनकी चीख सुनकर अपने कमरे में मौजूद बहू बाहर निकलने लगी तो उसका दरवाजा भी बंद कर दिया। इसके बाद आलमारी व बक्से खोलकर लूटपाट की और फिर भाग निकले। बाथरूम में एग्जास्ट फैन के लिए बने झरोखे से चीखते हुए व्यापारी ने मदद की गुहार लगाई तो आसपास के लोग पहुंचे और उन्हें व उनकी बहू को बाहर निकाला। तब जाकर लोगों को घटना की जानकारी हुई। सूचना पर एसपी सिटी, सीओ फोर्स लेकर पहुंच गए। पूछताछ के बाद अंसार को रामबाग स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। व्यापारी ही हिसाब-किताब देखते थे और वह जख्मी हैं। बेटे का कहना है कि स्पष्ट रूप से पिता ही बता पाएंगे कि घर से क्या-क्या गायब हुआ। तहरीर मिलने के बाद ही इस बारे में कुछ बताया जा सकेगा। सीसीटीवी फुटेज से बदमाशों को चिह्नित करने का प्रयास किया जा रहा है।

-संतोष कुमार मीणा, एसपी सिटी।

बच्चों को पकड़ने आया युवक को गांव वालों ने दौड़ाकर पकड़ा, किया पुलिस के हवाले

सोरांव। थाना क्षेत्र के बाहर सराय गांव में बुधवार की शाम लगभग 7:30 बजे एक अजनबी युवक साधु के भेष में दिखाई दिया और गांव में टहल रहे बच्चों को पकड़ने की नियत से बुलाने लगा। इतने में जब बच्चे भागने लगे तो वह युवक बच्चों को टॉफी देने की बात कहा। इतने में ग्रामीणों ने देखा तो युवक को दौड़ाकर पकड़ लिया। तत्पश्चात पुलिस को सूचना दी मौके पर पुलिस आई और युवक को थाने ले जाकर पूछताछ कर रही है।जानकारी के अनुसार युवक अपना नाम अनिल कुमार जिला मऊ बता रहा है और युवक के पास से एक झोली व एक चाकू भी मौके से बरामद हुआ। इतने में ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान को सूचना दिया मौके पर ग्राम प्रधान पति आए और पुलिस को सूचित किए। गांव वालों की मदद से युवक को थाने ले गए जहां पर पुलिस पूछताछ कर रही है।

प्रतियोगी छात्र समेत दो ने फांसी लगाकर दी जान, छानबीन में जुटी पुलिस

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कैंट व धूमनगंज में प्रतियोगी छात्र समेत दो ने फांसी लगाकर जान दे दी। दोनों घटनाओं में खुदकुशी की वजह का पता नहीं चल सका है। पुलिस का कहना है कि जांच पड़ताल की जा रही है। कैंट के राजापुर, ऊंचवागढ़ी स्थित लॉज में किराये पर रहने वाला दीपांशु पटेल एसएससी परीक्षा की तैयारी कर रहा था। वह मूल रूप से प्रतापगढ़ के जेठवारा स्थित गंभीरा गांव का रहने वाला था।

बुधवार सुबह वह अपने कमरे से बहुत देर तक बाहर नहीं आया तो आसपास रहने वाले छात्रों ने उसे आवाज दी। बहुत देर तक कोई जवाब नहीं मिलने पर शक हुआ। इसके बाद छात्रों ने खिड़की से झांककर देखा तो वह फांसी पर लटका मिला। सूचना पर पुलिस और कुछ देर बाद शहर में ही रहने वाले उसके मामा व अन्य परिजन आ गए। जांच पड़ताल के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। मृतक दो भाइयों में बड़ा था और उसके पिता राजेंद्र लाल गुड़गांव में रहकर प्राइवेट नौकरी करते हैं। कैंट इंस्पेक्टर का कहना है कि मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। घरवाले भी कोई वजह नहीं बता सके। धूमनगंज के न्याय नगर, कन्हईपुर में मंगलवार रात सीता यादव (20) ने फांसी लगाकर जान दे दी। उसके पिता नहीं हैं। मां उर्मिला नैनी स्थित एक फैक्ट्री में काम करती है। दो बहनों में बड़ी सीता ने हाईस्कूल के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। न्याय नगर में उर्मिला दोनों बेटियों संग एक रिश्तेदार के मकान में रहती थी। इंस्पेक्टर धूमनगंज राजेश कुमार मौर्य ने बताया कि मंगलवार शाम उर्मिला कहीं गई थी। रात में घर लौटी तो देखा कि सीता फांसी पर लटकी हुई है। उसने ऐसा क्यों किया, इस बारे में वह कुछ नहीं बता सकी। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

अजीबोगरीब मामले में युवक ने उठाया आत्मघाती कदम

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र में एक अजीबो गरीब मामला प्रकाश में आया है जहां पर गांव में एक लड़की ने गांव के एक लड़के के खिलाफ 376 का मुकदमा कायम कराया। जिसके बाद आहत लड़के ने आत्महत्या कर ली। मृतक लड़के के परिजनों का आरोप है कि लड़के ने आत्महत्या नहीं की है बल्कि मुकदमा करने वाले लड़की के घर के कुछ लोगों ने उसे मारने के लिए दौड़े थे अपने बचाव के लिए रेलवे ट्रेन की चपेट में आ गया।बता दें कि बिसहिजन खुर्द गांव निवासी मंटू उर्फ भीम बिंद गांव की उसी जाति की एक लड़की रश्मि (काल्पनिक नाम) से उसका प्रेम संबंध था। मंगलवार को लड़की के द्वारा 376 का मुकदमा दर्ज कराया गया। लड़की का आरोप था कि मंटू ने उसके साथ दुष्कर्म किया है, जिसके बाद उच्चाधिकारियों के आदेश पर जांच के बाद मुकदमा दर्ज हुआ। इस पूरे मुकदमे के दौरान लड़की का मेडिकल कराया गया जिसके शरीर पर चोट के निशान भी पाए गए। जिसके बाद पुलिस ने मंटू के घर दबिश दी एवं थाने आने के लिए कहा। इस पर लोक लाज के डर से आहत होकर मंटू ने घर के ही पास से गुजरती रेल लाइन पर जाकर खुदकुशी कर ली, लेकिन घरवालों का आरोप है कि मंटू पुलिस के बुलावे के बाद थाने जाने को तैयार हो रहा था कि लड़की पक्ष के कुछ लोग सड़क में उसे पकड़ लिया और उसे मारने के लिए दौड़ा जिसमें वह अपनी जान बचाकर वहां से भागने लगा और ट्रेन की चपेट में आ गया। बरहाल पुलिस ने लड़की पक्ष की ओर से मुकदमा कायम कर दिया है एवं मृतक पक्ष की ओर से तहरीर का इंतजार कर रही है, ताकि उनके तहरीर के आधार पर मुकदमा कायम कर सच्चाई सामने लाई जा सके।इस विषय में जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित ने बताया कि इस पूरे मामले में दोनों पक्षों की ओर से मुकदमा कायम करने की बात कह दी गई है, तथा लड़के पक्ष द्वारा दिए गए तहरीर के आधार पर मुकदमा कायम किया जाएगा तथा सच्चाई जो भी हो पुलिस निष्पक्ष जांच करते हुए इस पूरे मामले की अनावरण करेंगी एवं यदि लड़की पक्ष द्वारा मृतक मंटू पर हमला करने की बात सच साबित होती है तो विधिक कार्यवाही की जाएगी।

आठ माह में पति और बेटे की मौत से उजड़ गई दुनिया

छज्जा क्या ढहा, उमा की जिंदगी में छा गया अंधेरा

प्रयागराज। बारजा गिरने से हमारी दुनिया ही उजड़ गई है। अब हम कहीं के नहीं रह गए। अब हमें कौन अम्मा कहकर बुलाएगा। किसके लिए दोपहर में भोजन बनाऊंगी। हटिया चौराहा पर मकान का छज्जा ढहने से मृत नीरज की मां ऊमा का विलाप वहां मौजूद लोगों को भी रुलाए जा रहा था। आसपास खड़ी महिलाएं भी रोती रही। नीरज के घर पर मौजूद महिलाओं ने बताया कि नीरज के पिता मोती लाल की मौत दिसंबर 2021 में कैंसर से हो गई थी। वह ठाकुर द्वारा ट्रस्ट के दो मंजिला भवन के सामने पान की दुकान लगाते थे। मोतीलाल की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी उठाते हुए नीरज पिता की पान की दुकान चलाने लगा था। नीरज का छोटा भाई धीरज भी उसके साथ में हाथ बंटाता था। मंगलवार को जब बारजा गिरा तो दो भाई नीरज और धीरज भी इसकी चपेट में आ गए। नीरज की मौके पर ही मौत हो गई। धीरज घायल है जिसका इलाज चल रहा है। ऊमा ने रोते हुए बताया कि हमारा गुजारा कैसे होगा। क्या करुंगी और क्या खाऊंगी। ऊमा कभी रोती-बिलखती बहू को देखती तो कभी जर्जर भवन को ताकने लगती। पूरा दिन रोते-सिसकते गुजर गया। पुत्र शोक में वह अचेत भी हो जा रही थीं। बेटी रंजना को गले लगाकर वह लगातार आंसू बहाती रहीं।

सूचना के अभाव में ब्लाक दिवस पर खाली रही कुर्सियां

9 फरियादियों ने दर्ज कराई शिकायतें 1 का हुआ निस्तारण

अखंड भारत संदेश

करछना। शासन के निदेशानुसार महीने के प्रथम व तृतीय बुधवार को विकास खंडों में ब्लॉक दिवस का आयोजन किया जा रहा है। शासन की मंशा है कि तहसील व थाना दिवस के तर्ज पर विकास खंडों में भी ब्लॉक दिवस का आयोजन किया जाए। जिससे सरकार द्वारा चलाई जा रही संपूर्ण योजनाओं का लोगों को समय से लाभ मिल सके । इसी क्रम में बुधवार को करछना विकासखंड सभागार में खंड विकास अधिकारी देव कुमार की अगुवाई में ब्लॉक दिवस का आयोजन किया गया। जिस मौके पर आए हुए फरियादियों ने आवास, परिवार रजिस्टर की नकल से संबंधित कुल 9 शिकायतें दर्ज कराई। जहां मौके पर एक शिकायतें पत्र का निस्तारण कर दिया गया। जिस मौके पर एडीओ पंचायत विवेक मिश्रा, सचिव समेत खंड प्रेरक अतुल कुमार मिश्रा दुष्यंत प्रताप सिंह सचिव राम रूप सिंह सचिव मनीष यादव सचिव अमित यादव सचिव संजीव श्रीवास्तव सचिव प्रीति शुक्ला सचिव अब्दुल बारी सहित ब्लॉक कर्मचारी उपस्थित रहे।

ब्लाक दिवस पर आये कुल चार प्रार्थना पत्र

जसरा। प्रदेश सरकार द्वारा चलाये जा रहे ब्लॉक दिवस के तहत विकास खंड जसरा में बुधवार को कुल चार प्रार्थना पत्र ग्रामीणों द्वारा दिया गया है। प्रभारी ब्लॉक दिवस डा०सपना अवस्थी ने चारों प्रार्थना पत्रों को संबंधित विभागों को सौंपकर कार्यवाही करने को कहा है। बुधवार को ब्लॉक दिवस डा०सपना अवस्थी की अगुवाई में शुरू हुआ। जिसमें दो प्रार्थना पत्र हैंडपंप रिबोर से संबंधित रहा। जिसमें संजय मिश्र ने बीएन बालिका विद्यालय बनपुरवा व दूसरा किसान सेवा सहकारी समिति जसरा का हैंडपंप रिबोर कराने के लिए प्रार्थना पत्र दिया है। वहीं एक प्रार्थना पत्र जसरा के बांदा रोड से जसरा एफ एस एस तक इंटर लाकिंग का रहा। वहीं जसरा की कल्पना केसरवानी ने प्रार्थना पत्र देकर समूह सखियों का मानदेय, समूह में जो राशन का उठान होता था, ट्रांसपोटेशन चार्ज महिलाओं की मजदूरी के साथ ही जसरा में बने सामुदायिक शौचालय की चाभी से संबंधित प्रार्थना पत्र दिया है। बीडीओ जसरा ने चारों शिकायती पत्रों को तत्काल संबंधित विभागों को सौपकर निस्तारण करने को कहा है। ब्लॉक दिवस में एडीओ पंचायत श्यामलाल तिवारी, एडीओसी राकेश सिंह, पशु चिकित्साधिकारी जसरा डा० सुनील कुमार मिश्र,जीतेन्द्र गौड़,यशवंत सिंह यादव,राजीव मिश्र, नितेश कुमार, बीरेन्द्र सिंह, दीप्ती मिश्रा, अमरजीत यादव सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

आशा कर्मियों ने सीएमओ कार्यालय का किया घेराव, मांगा बकाया वेतन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बुधवार को सैकड़ों की संख्या में विभिन्न ब्लॉक/सीएचसी की आशा कर्मियों ने प्रयागराज मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय का घेराव करते हुए बकाया वेतन के भुगतान करने और अमर्यादित व्यवहार करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। आशा कर्मियों के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रही आशा कर्मी कल्पना पटेल ने कहा, हम सब आशाओं ने वैश्विक महामारी कोविड संकट के समय अपने जान की परवाह किए बगैर कोरोना वॉरियर्स के रूप में काम किया, जिसकी विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी प्रशांसा की है, लेकिन आज कई महीनों से हमारा पारिश्रमिक हमें नहीं मिला है। जब हम अपने हक हकूक की बात करती हैं तो अधीक्षक, एचईओ, ऑपरेटर इत्यादि अमर्यादित व्यवहार करते हैं। सीएचसी पर रात में जाड़ा या बरसात में गर्भवती महिलाओं को लेकर जाओ तो आशाओं को रुकने के लिए कोई व्यवस्था नहीं होती है ना सुरक्षा की कोई गारंटी होती है। आशाओं ने संयुक्त रूप से कहा कि आशाओं के नाम पर तमाम दलालों ने जो आशा भी नहीं हैं, कुकुरमुत्ते की तरह आशाओं की फर्जी संगठन बनाकर आए दिन दिल्ली, लखनऊ चलने के नाम पर मोटा चंदा वसूल कर हमारा आर्थिक शोषण करते रहते हैं, इसलिए हम लोग स्वयं आशाकर्मी अपनी अगुवाई कर रही है। आशाओं ने पहले प्रयागराज सीएमओ कार्यालय के मेन गेट को विरोध प्रदर्शन किया, फिर मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय के अंदर उनकी गाड़ी का घेराव किया तो प्रयागराज मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ सतेंद्र राय ने आशाओं का मांग पत्र लेकर दो दिन के अंदर बकाया भुगतान सहित सभी समस्याओं का हल करने का आश्वासन दिया तो आशाओ ने अपना धरना प्रदर्शन यह कहते हुए समाप्त कर दिया कि यदि हमारी मांगों को तय समय में हल नहीं किया गया तो हम सभी पुनः मुख्य चिकित्साधिकारी का घेराव करते हुए पूरे जिले में कार्य का बहिष्कार करेंगे। विरोध प्रदर्शन में मुख्य रूप से कल्पना पटेल, उमा सिंह, विनय कुमारी, उर्मिला, किरण सिंह, संगीता चौरसिया, सपना मिश्रा, सोमवारी बेलाकली, प्रमिला इत्यादि शामिल रहीं।

जहरखुरानों का शिकार हुआ फिर एक यात्री, स्थिति गंभीर

जंघई। जहरखुरानों का शिकार हुआ एक व्यक्ति जंघई स्टेशन पर बेहोशी हालत में उतारा गया। जीआरपी व आरपीएफ ने एंबुलेंस बुलाकर इलाज के लिए मुंगरा बादशाहपुर भेजवाया जहा उसका इलाज चल रहा है। मीरगंज थाना क्षेत्र के मेदपुर बनकट निवासी दिलीप कुमार बिंद जो सूरत में किराना की दुकान चलाते है वह अपनी दुकान बंद कर किसी काम से घर वापस लौट रहे थे सूरत के उधना स्टेशन से जंघई का टिकट लेकर किसी ट्रेन से प्रयागराज स्टेशन पहुंचे। प्रयागराज से बुंदेलखंड एक्सप्रेस से जंघई के लिए सवार हुए जैसे ही स्टेशन से ट्रेन छूटी कोई जहरखुरान बिस्किट देने लगा तो दिलीप कुमार ने मना कर दिया वह जहरखुरान खुद को जंघई निवासी बताया और कहा कि आपके बगल का रहने वाला हूं सुबह का समय है बिस्किट आप भी खा लीजिए इसके बाद दिलीप ने बिस्किट खा लिया। फाफामऊ के बाद बेहोशी होने लगी उसके बाद समझ नहीं आया पर्स का 52 सौ रुपए सुरक्षित मिला लेकिन एक बैग गायब हो गई जिसमें कपड़े व अन्य सामान था। बेहोशी हालत में देख बगल में बैठा एक यात्री उसे जंघई स्टेशन पर उतार कर जीआरपी को सूचना दिया जीआरपी ने आनन-फानन में एंबुलेंस बुलवाकर इलाज के लिए मुंगरा बादशाहपुर भेजवाया तथा परिजनों को सूचना दिया।

30 किग्रा गांजा के साथ तीन तस्कर को किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

बड़ी बरामदगी के बाद छानबीन में जुटी शंकरगढ़ पुलिस

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने मंगलवार की रात गांजा सप्लायर गिरोह के तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। कस्बे के सेननगर तिराहे से की गई गिरफ्तारी में पुलिस ने 30 किलोग्राम गांजा बरामद किया है। भारी मात्रा में गांजा बरामद होने पर पुलिस के भी कान खड़े हो गए हैं। पुलिस ने छानबीन शुरू कर दी है। थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मादक पदार्थ की तस्करी करने वालों के खिलाफ अनवरत अभियान चलाया जा रहा है, इसी कड़ी में मुखबिर की सूचना पर शंकरगढ़ पुलिस टीम ने मंगलवार को शंकरगढ़ के सेन नगर तिराहे पर घेराबंदी की और गांजा तस्करों के आने का इंतजार किया। कुछ ही समय में तीन संदिग्ध लोग सामान के साथ दिखाई पड़े। इसके बाद पहले से मुस्तैद पुलिस टीम ने तीनों को घेरे में लेते हुए हिरासत में ले लिया। पुलिस ने उनके सामान की तलाशी ली तो इनके पास से भारी मात्रा में गांजा बरामद हुआ। इसके बाद पुलिस टीम इनको लेकर थाने चली आई। थानाध्यक्ष ने बताया की गिरफ्त में आए गांजा सप्लायरों के कब्जे से 30 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ है। पूछताछ में गांजा तस्कर सोनू भारतीया व मोनू भारतीया पुत्रगण इंदल भारतीया (निवासी बवंधर, बारा)और सौरभ राय पुत्र संजय राय (निवासी ग्राम धनुहा नारायणपुर कॉलोनी नैनी) से पूछताछ की गई। सोनू भारतीया के खिलाफ शंकरगढ़ और बारा थाने में कुल 4 मुकदमे दर्ज हैं। तीनों का चालान भेज दिया गया है।गिरफ्तार करने वाली टीम में थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह के साथ सब इंस्पेक्टर विवेक कुमार राय,गंगाराम सोनकर, कांस्टेबल सुखबीर सिंह चौधरी शामिल रहे।

विविड फाउंडेशन ने दिव्यांगों को बांटा कृत्रिम अंग

अखंड भारत संदेश

महापौर अभिलाषा गुप्ता 'नन्दी' ने दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग प्रदान कर 'ऊंची उडान' की सार्थकता पर डाला प्रकाश

प्रयागराज। विविड फाउंडेशन,भूटानी ग्रुप ऑफ कम्पनी एवं त्रिवेणी सोलर द्वारा दिव्यांग जनों को निशुल्क कृत्रिम अंग प्रदान कर उनके निराश जीवन में आशा की एक किरण जगाने का सार्थक प्रयास किया गया। वैकुण्ठ धाम संस्कृत महाविद्यालय आश्रम सभागार में ₹ऊंची उड़ान₹ कार्यक्रम में जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीधराचार्य महाराज ने अपने आशीर्वचन में कृत्रिम अंग प्रदान करने को दिव्यांगों को एक नया जीवन प्रदान करने जैसा बताया।स्वामी श्रीधराचार्य, अतिथिगण एवं वरिष्ठ समाजसेवी 'दुकानजी'ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का श्रीगणेश किया।वेदपाठी छात्रों द्वारा स्वस्तिवाचन कर समारोह को दिव्यता प्रदान की गई। मुख्य अतिथि महापौर अभिलाषा गुप्ता 'नन्दी' ने दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग प्रदान किया। महापौर ने 'ऊंची उडान' की सार्थकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डा केपी श्रीवास्तव, पूर्व न्यायाधीश कैप्टेन डीपीएन सिंह, विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी ने संस्था के कार्यों की भूरि-भूरि सराहना की। समारोह की अध्यक्षता रमेशचन्द्र पाण्डेय पूर्व अध्यक्ष इलाहाबाद मण्डल विकास निगम ने किया। भूटानी ग्रुप के महाप्रबन्धक जीतेन्द्र, त्रिवेणी सोलर के निदेशक पवन, जनमीडिया टीवी के निदेशक विकास मिश्र एवं प्रयागराज प्रभारी सुरेन्द्र बहादुर सिंह ने अतिथि गण एवं दिव्यांगजन सेवकों को माल्यार्पण एवं अंगवस्त्रम् तथा प्रतीक चिन्ह भेंट कर अभिनन्दन कर सम्मानित किया।भूटानी ग्रुप के महाप्रबन्धक जीतेन्द्र कुमार एवं सह प्रबन्धक यश पवार ने कम्पनी द्वारा आगे भी दिव्यांगजनों को सहयोग सहायता के लिए कम्पनी के उद्देश्यों से अवगत कराया। मूछ नर्तक राजेन्द्र कुमार तिवारी ने अतिथियों का परिचय कराया एवं अभिनन्दन किया। सीमा गुप्ता 'प्रवक्ता' एवं कमलेश कुमारी ने महापौर को पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया।कार्यक्रम का संचालन सतीश कुमार गुप्त ने किया। समारोह में राम नरेश तिवारी 'पिण्डीवासा', डा शम्भूनाथ त्रिपाठी, नागेन्द्र सिंह, शुभ्रान्शु पाण्डेय एडवोकेट, डा आरएस मौर्य, डा प्रमोद शुक्ल, अनिरुद्ध ओझा, डा अवधेश झा, सुधीर द्विवेदी, कैप्टेन वी के मित्तल, दुर्गेश दुबे, सत्यप्रकाश मिश्र, सुरेन्द्र बहादुर सिंह, सावित्री मिश्रा, सुनीता श्रीवास्तव पार्षद, डा बीके सिंह, राजेश निषाद पार्षद आदि उपस्थित रहे। यह जानकारी प्रेस को दुकानजी ने दी।

तीन दिवसीय साहित्य लेखन कार्यशाला का हुआ शुभारम्भ

जसरा। बाल पत्रिका बच्चों की प्यारी बगिया के तत्वाधान में श्री ईश्वरदीन छेदीलाल इंटर कॉलेज जसरा प्रयागराज में एक साहित्य लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के सैकड़ों छात्र उपस्थित होकर साहित्य लेखन प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रथम दिवस कार्यशाला का उद्घाटन मां सरस्वती के प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ० योगेंद्र सिंह ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि साहित्य लेखन कार्यशाला बच्चों के लिए एक अद्भुत प्रयोग है। निश्चित रूप में इससे बच्चे अपने अंदर सृजनात्मकता ले आएंगे। कहानी लेखन का प्रशिक्षण देते हुए मुख्य प्रशिक्षक वरिष्ठ कहानीकार विजय चितौरी ने कहा कि हमारे आस पास बहुत सी घटनाएं ऐसी घटित होती रहती हैं ,जिन पर हम कहानियां लिख सकते हैं । साथ ही साथ उन्होंने अपनी एक कहानी यंत्र मानव का पाठ भी किया। उन्होंने बच्चों को कहानी लेखन के कौशल को सिखाया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक विकास केसरी ने कहानी के तत्वों पर प्रकाश डाला। उपस्थित कवि एवं साहित्यकार अमरनाथ सिंह ने बच्चों को अपनी कविता सुना कर प्रभावित किया । कार्यक्रम का संयोजन बच्चों की प्यारी बगिया के संपादक राम राम लखन प्रजापति ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक कुलभूषण मिश्र, देवेन्द्र नाथ शुक्ल, चंद्रशेखर, राकेश श्रीवास्तव,श्याम केसरवानी सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत पुरवाखास, वि. ख. चाका, प्रयागराज

अल्पकालीन निविदा सूचना - 2022

पत्रांक-मेमो/निविदा/2022-23 दिनांक- 07.09.2022

राज्य वित्त /केन्द्रीय वित्त/वर्चुअल एकाउण्ट/मनरेगा योजनान्तर्गत वर्ष 2022-23 में प्रस्तावित निम्नलिखित कार्यों हेतु टेण्डर ज्ञापित किया जा रहा है जो दिनांक 08.09.2022 से 14.09.2022 तक किसी भी कार्यदिवस में ग्राम पंचायत पुरवाखास कार्यालय पर सील बन्द निविदा जमा कर सकते हैं जो दिनांक 15.09.2022 को निविदा हेतु गठित कमेटी/निर्माण समिति के सदस्यों के सामने पूर्वान्ह 11.30 बजे खोली जायेगी। कार्य तथा अनुमानित लागत का विवरण निम्नवत है:-

क्र0	कार्यस्थल	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख रूपये में)	अन्य
1.	पुरवाखास	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केन्द्र (सेनिगेशन सेण्टर)	5.50 लाख	-
2.	पुरवाखास	सामुदायिक सोख्ता गड्ढा (10 नग)	1.50 लाख	-
3.	पुरवाखास	ई. रिक्शा क्रय (कूड़ा गाड़ी) (1 नग)	1.60 लाख	-
4.	पुरवाखास	खाद गड्ढा का निर्माण (2 नग)	0.40 लाख	-
5.	पुरवाखास	चन्द्रभान के पूरा में बब्लू के घर से तालाब तक नाली निर्माण	3.50 लाख	-
6.	पुरवाखास	अमृतलाल के घर जीवन लाल के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	4.00 लाख	-

नियम शर्तें- (1) फर्म/आपूर्तिकर्ता का सेल्स टैक्स विभाग में रजिस्ट्रेशन अनिवार्य होगा। (2) सामग्री की प्रस्तुत दरें पी.डब्ल्यू. डी. से अधिक नही होगा। (3) कार्य की पूर्ति निश्चित समय सीमा में मानक के अनुसार किया जाना है तभी भुगतान सम्भव हो पायेगा। गुणवत्ता/ मानक में कमी पाये जाने पर धनराशि नियमानुसार कटौती कर ली जायेगी। (4) निविदा बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी में निहित होगा। (5) कार्य का अनुमानित लागत का 10% धरोहर राशि जमा करानी होगी। (6) निविदा शुल्क 500 रूपये निर्धारित है।

उमाशंकर
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत पुरवाखास
वि0 ख0 - चाका, प्रयागराज

फरह मसूद
ग्राम पंचायत अधिकारी
ग्राम पंचायत पुरवाखास
वि0 ख0-चाका, प्रयागराज

गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ...

गाजे बाजे के साथ धूमधाम से विदा हुए विघ्नहर्ता गणेश, सई नदी में विसर्जित हुई प्रतिमाएं, पुलिस नदारद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रथम पूजनीय विघ्नहर्ता भगवान गणेश की मूर्ति का विसर्जन मंगलवार को गाजे बाजे के साथ सई नदी में हुआ। भक्त ढोल नगाड़े पर गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू जल्दी आ भक्ति गाने पर भाव विभोर को नाचते नजर आए। बेल्हा देवी मंदिर के सई घाट पर सुरक्षा के इंतजाम नहीं किए गए हैं। अवसर पाकर नशेड़ियों ने उत्पात मचाया।

गणेश चतुर्थी के दिन घरों और पंडालों में गजानन की मूर्ति की स्थापना हुई थी। मंगलवार को वी मार्ट सिविल सेवा में स्थापित गणेश मूर्ति का धूमधाम से नाचे गाते सई नदी पहुंचे भक्तों ने पूजा अर्चना के साथ विसर्जन किया। इस दौरान मेडिकल कालेज के वरिष्ठ फिजिशियन डाक्टर मनोज खत्री, ज्योतिस्ना खत्री, मोहक खत्री, अजय पांडेय, राकेश शर्मा, सतीश, प्रदीप, सानू समेत कई लोगों ने नाव के द्वारा प्रतिमा नदी में विसर्जित की। खास बात यह है कि बेल्हा देवी मंदिर पर सुरक्षा के इंतजाम नहीं है। बताया जाता है कि विसर्जन करके लौट रहे भक्तों से वहां का एक लोकल टपोरी उलझ जा रहा था। डंडा लेकर उनके रिक्शे और कार के सामने आकर टैक्स मांग रहा था। महिलाओं से अभद्रता की। इस दौरान वहां के दुकानदार तमाशबीन बने रहे। लग रहा था कि अभद्रता कर रहे युवक को उनका मौन समर्थन है।

सई नदी में गणेश प्रतिमा विसर्जित करते श्रद्धालु।

गाजे-बाजे के साथ निकली भगवान गणेश की शोभा यात्रा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। गणपति उत्सव को लेकर बुधवार को गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन को लेकर नगर में गाजे बाजे के साथ भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी। नगर के घुइसरनाथ रोड व खानापटटी तिराहे पर गणेश पूजन उत्सव को लेकर आकर्षक झांकियां सजाई गयी थी। बुधवार को गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन से पूर्व नगर में श्रद्धालुओं ने शोभा यात्रा निकाली। गजानंद के जयकारे व महादेव के शंखनाद के बीच यात्रा में श्रद्धालुओं को भावविभोर देखा गया।

अबीर गुलाल उडाते श्रद्धालुओं के साथ गणेश भगवान की झांकी नगर के राधा-मोहन मंदिर व हरिहरमंदिरम् होते हुए बाबा घुइसरनाथ धाम पहुंची। यहां वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य सई के पूजन के बाद प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया। इस मौके पर भोला विश्वकर्मा, आचार्य विनय शुक्ल, मक्खन शुक्ल, राजकुमार मिश्र, सभासद बृजेन्द्र पाण्डेय, रामफेर गौतम, केदार सरोज, रामआसरे मौर्य, बेंचू सरोज, राधे सोनी, मदन विश्वकर्मा, अंजनी शुक्ल, इरसाद खान, कर्मराज धुरिया आदि रहे।

नहर में झाड़ियों के चलते हो रही दुर्घटनाएं, एसडीएम ने अधिशाषी अभियंता को लिखा पत्र

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर पंचायत के लालगंज घुइसरनाथ मार्ग से छोटी नहर पिच मार्ग पर नहर में झाडियों के बडे पैमाने पर होने से लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। संगम चैराहे तक नहर पिच मार्ग में झाडियों के कारण लालगंज-भवराम बोझी हाइवे पर सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज के समीप चैराहे पर रोज दुर्घटनाएं घटित हो रही है।

यही हाल इसी मार्ग पर मां चतुर्भुजी देवी मंदिर के समीप वार्ड से नेशनल हाइवे तक जुडने वाले सीसी मार्ग पर भी बना हुआ है। नहर में घास उग आने से भी लोगों को खेती व सिंचाई में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सिंचाई विभाग के अफसरों की लापरवाही से स्कूल मे पढने वाले नौनिहालों का भी जीवन खतरे मे बना हुआ है। बुधवार को रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने एसडीएम को शिकायती पत्र सौंपकर समस्या के समाधान कराए जाने की मांग की है। एसडीएम सौम्य मिश्र ने समास्या का समाधान कराए जाने को लेकर अधिशाषी अभियंता सिंचाई को पत्र लिखा है।

10 तक बढ़ाई गई खाद्यान्न वितरण की तिथि

प्रतापगढ़। जिला पूर्ति अधिकारी ने बताया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अन्तर्गत अन्त्योदय व पात्र गृहस्थी कार्डधारकों को खाद्यान्न एवं नमक, तेल व चना का वितरण ई-पास मशीन के माध्यम से उचित दर विक्रेताओं द्वारा 07 सितम्बर 2022 तक वितरण की अन्तिम तिथि तक किया गया जिसमें अन्त्योदय कार्डधारकों को प्रतिकार्ड 14 किग्रा0 गेहूँ व 21 किग्रा चावल एवं पात्र गृहस्थी कार्डधारक को प्रति यूनिट 02 किग्रा0 गेहूँ एवं 03 किग्रा0 चावल (गेहूँ रू0 2 प्रति किग्रा तथा चावल रू0 3 प्रति किग्रा की दर से) का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त 01 किग्रा0 आयोडाइज्ड नमक, 01 किग्रा साबुत चना तथा 01 लीटर रिफाइण्ड सोयाबीन ऑयल का निःशुल्क वितरण किया गया। उन्होंने बताया है कि अपर आयुक्त खाद्य तथा रसद विभाग उ0प्र0 जवाहर भवन लखनऊ के द्वारा खाद्यान्न वितरण की तिथि 08 सितम्बर से 10 सितम्बर तक विस्तारित कर दी गयी है। मोबाइल ओटीपी के माध्यम से वितरण की सुविधा 10 सितम्बर को भी उपलब्ध रहेगी।

कोंहडौर के व्यापारियों व कुण्डा के छह व्यापारियों को मिला मुआवजा

व्यापार मण्डल के सहयोग से मिला दस-दस लाख रुपये का मुआवजा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश व्यापार मण्डल के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र केसरवानी ने बताया कि केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार ने व्यापारियों की मांगों को मानते हुए व्यापारियों के साथ होने वाली दुर्घटनाओं पर दस लाख रुपये देना शुरू कर दिया है जिसका लाभ प्रतापगढ़ के लोगों को मिलने लगा है।

अभी हाल में प्रतापगढ़ व्यापार मण्डल द्वारा देवकली स्थित वाणिज्य कर विभाग जाकर कोंहडौर बाजार में तीन साल पहले बदमाषों द्वारा रंगदारी के मामले में दो सगे भाईयों श्याम सुंदर जायसवाल व श्याम सूरत जायसवाल की हत्या की गई थी, उन्हें कोंहडौर में जाकर दस-दस लाख रुपये का चेक वितरित किया गया। इसी प्रकार अवध बिहारी लाल रोड पर चैधरी किराना स्टोर, स्टेषन रोड, कुण्डा, रजत मेडिकल स्टोर सबलगढ़ डेरवा, रौनक गारमेंट स्टेषन रोड कुण्डा व लक्ष्मी टेज्डर्स बिहार बाजार कुण्डा सहित छह परिवारों को दस-दस लाख की रुपये दुर्घटना बीमा की राषि उद्योग व्यापार मण्डल के माध्यम से दिलाई गई। जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार, उपाध्यक्ष लखन बाबा ने प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को पीड़ित परिजनों के सहायतार्थ के लिये आभार जताया है।

व्यापारी के परिजनों को चेंक सौंपते व्यापार मण्डल के पदाधिकारी।

ब्लाक दिवस में दर्ज हुई पांच शिकायतें

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय ब्लाक मुख्यालय में बुधवार को हुए ब्लाक दिवस में कुल पांच शिकायतें आयी। इनमे से चार शिकायते सामुदायिक शौचालयों मे तैनात स्वच्छताकर्मियों द्वारा नौ माह से वेतन न मिलने से जुडी दिखी। स्वच्छताकर्मियों की ओर से शिकायती पत्रों मे कहा गया है कि वेतन का भुगतान न होने से उनके समक्ष परिवार का भरण पोषण करने में कठिनाई हो रही है। वहीं एक शिकायत शीतल सिंह का पुरवा गांव मे संचालित आंगनबाडी केंद्र मे अनियमितता को लेकर दर्ज हुई। बीडीओ अश्विनी सोनकर ने फरियादियों की समस्याओं की सुनवाई करते हुए समाधान का भरोसा दिलाया।

एलायंस क्लब ने स्थापना दिवस पर दिव्यांग परिवार के घर बिखेरी खुशियां

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ ने क्लब के स्थापना दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। इस वर्ष भी क्लब के स्थापना दिवस पर असहायो की मदद करके स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साहित्यकार व क्लब के संरक्षक डॉ दयाराम मौर्य रत्न रहे।

अध्यक्षता क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। क्लब के कार्य पर प्रकाश डालते हुए डा0 रत्न ने कहा कि क्लब ने देश-विदेश में अपने कार्यो से पहचान बनाई है। समाजसेवी अशोक अग्रवाल ने कहा कि क्लब ने जिले में समाज सेवा में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। लोगों को क्लब से प्रेरणा लेनी चाहिए। क्लब के इंटरनेशनल डायरेक्टर रोशनलाल उमरवैश्य ने क्लब के कार्यों का विस्तार से वर्णन किया। इसी क्रम में बी0बी0एफ0जी के संरक्षक मनोज रावत ने जानकारी दी कि एक परिवार जो दिव्यांग है और आर्थिक तंगी से जूझ रहा है, अपने स्थापना दिवस पर क्लब के पदाधिकारियों के साथ दिव्यांग विकास दत्ता के घर पहुंच कर उनको महीने भर का राशन आटा, चावल, दाल, तेल, घी, मसाला, टिफिन आदि सामान देकर पार्सल सेवा शुरू करने के लिए और रोजगार से जोड़ने का प्रयास किया। बच्चे को पढ़ने के लिए कापी आदि दिए। इस मौके पर क्लब की महिला इकाई की अध्यक्ष अर्चना खंडेलवाल, रेखा उमरवैश्य, पूनम गुप्ता, अर्चना पांडे, अशोक अग्रवाल, युवा क्लब के अध्यक्ष शिवेश शुक्ला, राजीव कुमार आर्य, प्रेम कुमार त्रिपाठी, सुधा अग्रवाल, ज्योति खंडेलवाल, मेघा खंडेलवाल, अनिल कुमार निलय, विवेक कुमार, राजा, प्रवीण आदि ने सहभागिता की।

पार्सल सेवा शुरू करने के लिए दिए टिफिन व राशन

दिव्यांग परिवार को टिफिन व राशन देते एलायंस क्लब के पदाधिकारी

राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय नारायनपुर में कैरियर काउंसलिंग का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल के आदेशानुसार मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया के निर्देशन में राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय नारायनपुर के सभागार में मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के अन्तर्गत हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को निःशुल्क कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों को उनके भविष्य एवं कैरियर के प्रति जानकारी अधिकारियों द्वारा दी गयी।

मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत हुआ कार्यक्रम

इस अवसर पर खण्ड विकास अधिकारी लक्ष्मणपुर अर्पणा ने मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी और छात्रों को सम्बोधित करते हुये कहा कि सप्ताह में कितना पढ़ना है इसे हमें निर्धारित करना होगा उसके अनुरूप पढ़ाई करनी होगी। आप भी मेहनत करके हम अधिकारियों जैसे बन सकते है इसके लिये पहले लक्ष्य निश्चित करिये और उसके अनुरूप तैयारी करियें सफलता निश्चित मिलेगी।

खण्ड विकास अधिकारी लालगंज अश्वनी ने विद्यालय को सभी प्रकार के कम्पीटशन सम्बन्धी 29 किताबें निशुल्क उपलब्ध करायी। बच्चे कम्पटीशन की किताबें पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों द्वारा विद्यार्थियों से सवाल जवाब भी किया गया एवं प्रश्नों का समाधान भी किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों से कहा गया कि कम अंक आना हताशा नही है हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा है और हमें चाहिये कि अब हम इससे अधिक अंक लाकर सफलता अर्जित करें। कार्यक्रम का संचालन एआरपी धर्मेन्द्र ओझा द्वारा किया गया। इस अवसर पर राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय नारायनपुर के प्रधानाचार्य राजकुमार सहित एडओ समाज कल्याण प्रशान्त श्रीवास्तव, एडीओ आईएसबी उदयभान सिंह एवं विद्यालय के समस्त स्टाफ उपस्थित रहे।

प्लास्टिक के विरुद्ध अभियान में तीन ठेलेवालों पर लगा जुमार्ना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शासन के निर्देष पर नगर पालिका प्रतिदिन प्लास्टिक के विरुद्ध अभियान चला रही है। बुधवार की शाम नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, आरआई लाल बहादुर सिंह, स्वच्छ भारत मिषन के डीपीएम वरुण कुमार सिंह, टीसी राजेश चैधरी, रोड गैंग व सिविल लाइंस की पुलिस के साथ कम्पनी गार्डेन के सामने पहुंचे। वहां से गायघा रोड तक चलाये गये अभियान में तीन ठेलेवालों के पास प्लास्टिक पाया गया जिस पर पांच-पांच सौ रुपया का तीन ठेले वालो पर जुमार्ना ठोंका गया।

बताया गया कि 25 अगस्त से 25 सितम्बर तक प्रतिदिन प्लास्टिक थमाकोल के विरुद्ध अभियान चलाकर शहर को स्वच्छ बनाने का निर्देष है। इस बारे में नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व ईओ मुदित सिंह ने व्यापारियों व नागरिकों से प्लास्टिक का का प्रयोग न करने की अपील की है। बता दें कि शासन ने प्लास्टिक के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

ठेले वाले का चालान काटते नगर पालिका कर्मी।

पुण्यतिथि पर याद किये गये शिव प्रताप मिश्र बाबा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय इंदिरा भवन पर आज पूर्व राज्यसभा सांसद स्वर्गीय शिव प्रताप मिश्रा बाबा मिश्रा के पुण्य तिथि के अवसर पर सभी कांग्रेसजन चित्र पर पुष्प एवं माला पहनाकर उनको नमन करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

उसके उपरांत एक श्रद्धांजलि सभा जिला कांग्रेस कार्यालय, इंदिरा भवन, प्रतापगढ़ में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इरफान अली एवं संचालन कांग्रेस सेवादल के प्रदेश सचिव प्रेम शंकर द्विवेदी ने किया। यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 नीरज त्रिपाठी ने कहा कि स्व0 शिव प्रताप मिश्रा बहुत ही सामाजिक एवं सरल व्यक्तित्व के धनी थे, कार्यकताओं की बहुत मदद करते थे, कार्यकताओं का दर्द समझते थे कोई भी कार्यकत्ता किसी कार्यक्रम में दिल्ली जाता था तो उसके रहने खाने से लेकर उसके टिकट तक का इंतजाम करा कर भेजते थे। अध्यक्षता कर रहे नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इरफान अली ने कहा कि बाबा मिश्रा का जीवन बहुत संघर्ष मय था। जिला कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष एवं कार्यालय प्रभारी वेदान्त तिवारी ने बताया कि स्व0 शिव प्रताप मिश्रा का नाम बाबा इसलिए पड़ा क्यों कि वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ते थे और उस समय वे ज्यादा तर गेरुवा वस्त्र पहनते थे इसलिए उनका नाम बाबा पड़ा। इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष नरसिंह प्रकाश मिश्रा, जूनियर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष रोहित शुक्ला ने संयुक्त रूप से कहा कि हम सभी कांग्रेसजनों को बाबा मिश्रा के बताए गए सदमार्ग पर चलकर यह संकल्प लेना होगा कि एक कार्यकर्ता के रूप में कांग्रेस पार्टी को हम सब मिलकर मजबूत करें। इस अवसर पर पी.सी.सी सदस्य कपिल द्विवेदी, कांग्रेस सेवादल के जिलाध्यक्ष महेन्द्र शुक्ला, पूर्व अध्यक्ष जमुना प्रसाद पांडेय, चिंतामणि पाण्डेय, बाबा मिश्रा के भतीजे हरि प्रसाद मिश्रा, श्याम शंकर तिवारी, राम रतन तिवारी, नगर प्रभारी इश्तियाक अहमद, आशुतोष तिवारी, अशोक सिंह, जावेद, बेलाल, अभय, शिवम, विकास, सलमान खान, मो.शकील सहित अनेक कांग्रेस जन मौजूद रहे।

कांग्रेस कार्यालय पर दी गई श्रद्धांजलि

कार्यालय पर शिव प्रताप मिश्र को श्रद्धांजलि देते कांग्रेसीगण।

अधेड़ की हत्या कर शव धान के खेत में फेंका, हड़कंप

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। हथिगवां थाना क्षेत्र के हियात नगर पुरेमऊ में बीती रात एक 45 वर्षीय अधेड़ व्यक्ति की हत्या कर शव को धान के खेत में फेंक दिया गया। सुबह लोगों ने शव देखा तो गांव में हड़कंप मच गया। घटना के बारे में बताया जाता है कि उसके सगे सम्बन्धियों ने ही हत्या कर शव को फेंका है। सूचना पर पहुँची हथिगवां पुलिस ने शव की लिखा पढ़ी करके पी एम को भेजा घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। घटना के बारे में जानकारी करने पर हथिगवां पुलिस ने बताया कि मंगलवार की बीती रात थाना क्षेत्र के हियातनगर पुनेमऊ निवासी जगदीश प्रसाद तिवारी पुत्र रामकृपाल तिवारी (45) वर्षीय का शव बीती रात को उनके ही खेत मे पानी भरने के दौरान मिला। पुलिस ने शव की लिखा पढ़ी करके पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के लड़के सुमित तिवारी पुत्र जगदीश प्रसाद तिवारी ने अपने सगे चाचा चाची चचेरी भाई बहन पर पिता की हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस को नामजद तहरीर दी है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज करतें हुये घटना की जांच में जुटी हुई है। घटना को लेकर मृतक के परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

घर में मचा कोहराम, आरोपी फरार

धरने को लेकर डीआईओएस ने एसपी को लिखा पत्र

प्रतापगढ़। यूपी एजुकेशनल ऑफिसर्स एसोसिएशन के पत्र को डीआईओएस ने संज्ञान लिया है और उन्होंने एसपी को पत्र लिखा है। बता दें कि डीआईओएस आफिस में माध्यमिक शिक्षक संघ के पदाधिकारी व शिक्षक वेतन की मांग को लेकर धरने पर हैं। यह धरना तीन सितम्बर से दो से पांच बजे तक चल रहा है। धरने में अमर्यादित शब्दो के प्रयोग एवं अनाधिकृत कार्य किये जाने पर एसोसिएशन ने अफसरों को पत्र देकर आपत्ति जताई थी आपत्ति और एसपी को पत्र भेजकर कार्यवाही की मांग किया था।

पत्नी से परेशान पति ने लगाई पुलिस से इंसाफ की गुहार

पट्टी, प्रतापगढ़। पत्नी की गलत हरकतों से तथा गैर वाजिब मांगों से परेशान होकर एक पति ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र दिया है। पट्टी तहसील क्षेत्र के कंधई थाना अंतर्गत बिबिया करनपुर गांव के रहने वाले नवनीत तिवारी ने बताया कि एक साल पहले उसकी शादी रानीगंज तहसील के लक्ष्मीपुर से हुई थी। उसकी पत्नी उसे गंभीर आरोप में फंसाने की धमकी देती है तथा माता-पिता से अलग शहर में रहने के लिए दबाव बनाती हैं। मना करने पर गाली गलौज करती हैं। उसने बताया कि वह मंगलवार को घर में रखा जेवरात तथा अन्य कीमती सामान लेकर अपने पिता के साथ मायके चली गई।

रंजिशन तालाब में जहर डालने का आरोप, दी तहरीर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर थाना के आदमपुर ताला सिरिस्ताबाद निवासी माता प्रसाद के पुत्र चंद्रप्रकाश ने पुलिस को दी गई तहरीर मे आरोप लगाया है कि छः सितम्बर को उसके मत्स्य पालन तालाब में विपक्षियों ने चुपके से जहर डाल दिया। पीडित का कहना है कि उसे शासन द्वारा गांव में मत्स्य पालन का पटटा आवंटित किया गया है। विपक्षियों के द्वारा तालाब मे जहर डाल देने से पीडित की पन्द्रह से बीस कुंतल मछलियां मर गयी। वहीं पीडित का कहना है कि आरोपियो से जब उसने चोरी से मछली मार डालने की शिकायत की तो उसे गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी गयी। पीडित ने विपक्षियो के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। लीलापुर पुलिस का कहना है कि तहरीर पर जांच कर कार्रवाई की जाएगी। जल्द से जल्द कार्रवाई होगी।

चोरों ने गल्ले की दुकान से उड़ाया नकदी व खाद्यान्न

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सरकारी गल्ले की दुकान में अज्ञात चोरों द्वारा ताला तोडकर नकदी समेत खाद्यान्न सामग्री चोरी कर ली गयी है। उदयपुर थाना के अमावां निवासी कोटेदार संतोष कुमार सिंह ने सरकारी राशन की दुकान मे चोरी को लेकर बुधवार को पुलिस को तहरीर दी है। तहरीर मे कोटेदार ने कहा है कि अमावां तथा पूरे भगवत ग्रामसभा के कोटे के तहत सरकारी गल्ला कमरे मे रखा था। मंगलवार की रात अज्ञात चोरों ने स्टोर रूम का ताला तोडकर अठारह बोरी चावल तथा बीस बोरी गेंहू व पैतालिस पैकेट रिफाइण्ड तेल, चना एवं बारह सौ रुपए नकद पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया। बुधवार की सुबह कोटेदार ने स्टोर रूम मे ताला टूटा देखा तो आवाक रह गया। उदयपुर पुलिस का कहना है कि तहरीर मिली है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

वांछित आरोपी धराया

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने हत्या के प्रयास के मुकदमे मे वांछित आरोपी को बुधवार की सुबह धर दबोचा। लालगंज कोतवाली के पूरे इच्छाराम गांव में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों मे मारपीट व ईट पत्थर चले थे। दोनों पक्षो की ओर से तहरीर पर हत्या के प्रयास समेत कई गंभीर धाराओं मे केस दर्ज किया गया था। पुलिस ने एक पक्ष के चार आरोपियो को हत्या के प्रयास के मुकदमें मे जेल भेज दिया था। पुलिस दूसरे पक्ष के आरोपियों की तलाश कर रही थी। बुधवार की सुबह रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज को सूचना मिली कि आरोपी कलेसर पाल गांव में विपक्षियों को गाली दे रहा था। चैकी इंचार्ज ने फोर्स के साथ गांव में पहुंचकर आरोपी कलेसर पाल को धर दबोचा। दोपहर बाद पुलिस ने आरोपी को जेल भेज दिया।

निधन पर जताया शोक

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश एसोसिएषन आफ जर्नलिस्ट प्रतापगढ़ इकाई की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक अध्यक्षता अध्यक्ष डा0 विनोद सिंह ने की। बैठक में पत्रकार साथियों के विभिन्न मुद्दों पर साथियों के साथ चर्चा हुई। जिले के राजेन्द्र शुक्ल महामंत्री ने अयोध्या जनमोर्चा अखबार के पत्रकार करन प्रजापति के पिता राम खेलावन प्रजापति के निधन पर शोक व्यक्त किया। बैठक में राजेन्द्र शुक्ला, अनुराग सिंह, संजय मिश्रा, श्रीकांत त्रिपाठी, राजेष शुक्ला, शिवजीत सिंह, अम्बिका द्विवेदी, विनोद द्विवेदी, रिंकी सिंह, डा0 हरचंद्र सिंह, मनोज सिंह आदि मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

डीजीपी कार्यालय का निर्देश नहीं मानते सीओ

कौशाम्बी। पुलिस महानिदेशक कार्यालय लखनऊ का निर्देश और आदेश क्षेत्राधिकारी सिराथू नहीं मानते हैं 29 अगस्त को पुलिस महानिदेशक कार्यालय लखनऊ ने क्षेत्राधिकारी सिराथू डॉ कृष्ण गोपाल सिंह का स्थानांतरण कौशांबी से अलीगढ जनपद कर दिया था लेकिन 10 दिन बीत जाने के बाद क्षेत्राधिकारी कौशांबी जिले से रिलीव नहीं हुए हैं आखिर अपर पुलिस महानिदेशक प्रशासन द्वारा जारी किए गए स्थानांतरण आदेश का पालन क्षेत्राधिकारी सिराथू क्यों नहीं करना चाह रहे हैं इसकी चर्चा आम जनमानस में हो रही है।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार, जेल

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा से दो वर्ष पहले युवती को अपहरण कर ले गए युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय में सुपुर्द किया है। जानकारी के अनुसार के सैनी थाना में पंजीकृत मुकदमा अपराध संख्या 222/20 धारा 363/366 के आरोपी सुनील कुमार पुत्र श्रीनाथ निवासी नगर पंचायत अझुवा वार्ड नं 4 मढिया मई रसूलपुर को कनवार बॉर्डर से चौकी इंचार्ज अझुवा गौरव त्रिवेदी ने गिरफ्तार किया है अभी कुछ दिन पहले इसी मुकदमे में अपहृत की गई युवती खुशबू को चौकी इंचार्ज गौरव त्रिवेदी ने बरामद कर न्यायालय को सुपुर्द किया था आज अझुवा पुलिस ने सुनील को कनवार बॉर्डर से गिरफ्तार किया है।

बच्चा चोरी घटना की अफवाहों से हलकान रही पुलिस, भीड़ ने पुलिस जवानों पर किया हमला

अखंड भारत संदेश

मंझनपुर क्षेत्र में बच्चा चोर समझकर साधुओं को ग्रामीणों ने पीटा पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा, करारी क्षेत्र में विक्षिप्त महिला को पीट कर ग्रामीणों ने किया लहूलुहान सैकड़ों ग्रामीणों के विरुद्ध दर्ज हुआ मुकदमा

बच्चा चोर की अफवाह में पकड़े गए साधु

कौशाम्बी। बच्चा चोरी की घटनाओं के अफवाहों से पुलिस परेशान हैं जिले के दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में बच्चा चोरी के प्रयास की अफवाह को लेकर ग्रामीण लामबंद हो गए और आरोपियों की जमकर पिटाई कर दी है घटनास्थल पर पहुंची पुलिस टीम पर भी आक्रोशित ग्रामीणों ने ईट पत्थर बरसाए हैं जिससे पुलिस के जवान लहूलुहान हो गए हैं दोनों मामले में पुलिस ने ग्रामीणों के विरुद्ध गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है कुछ आरोपियों को करारी पुलिस ने गिरफ्तार भी कर लिया है।

जानकारी के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के म्योहर गांव में मंगलवार की देर रात एक विक्षिप्त महिला को बच्चा चोर समझकर ग्रामीणों ने पीट दिया है मंगलवार की देर रात पर बच्चा चोर की अफवाह सुनकर सैकड़ों लोग सड़क पर उतर आए मामले की जानकारी मिलते ही एएसपी और सीओ समेत भारी फोर्स घटनास्थल पर पहुंची है आक्रोशित ग्रामीणों ने पुलिस टीम पर ईट पत्थर बरसाए हैं सरकारी वाहन तोड़ दिए हैं आक्रोशित ग्रामीणों के तेवर देखकर पुलिस भागती नजर आई है मामले में पुलिस ने 35 नामजद और सैकड़ों अज्ञात के विरुद्ध गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है चार आरोपियों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। बुधवार की सुबह मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के ओसा कोडड गांव में मारुति कार से जा रहे साधुओं को बच्चा चोर समझकर ग्रामीणों ने पिटाई शुरू कर दी है मामले की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर कोतवाली पुलिस पहुंची है और साधुओं को ग्रामीणों के चंगुल से बचाकर मंझनपुर कोतवाली लाई है पुलिस ने साधुओं की तहरीर पर ग्रामीणों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस अधीक्षक और अपर पुलिस अधीक्षक ने जिले वासियों से अपील की है कि बच्चा चोर की घटनाओं के अफवाह से बचे और किसी प्रकार की अफवाह ना फैलाएं पुलिस अधिकारियों ने कहा कि अफवाह फैलाने वालों पर पुलिस कठोर कार्यवाही करेगी।

बच्चा चोरी की अफवाहों के मद्देनजर चरवा कोतवाल ने जनता को किया जागरूक

कौशांबी। पुलिस अधीक्षक हेमराज मीना के निर्देश पर चरवा कोतवाली में पीस कमेटी की बैठक आयोजित हुई थानाध्यक्ष अलोक कुमार ने बैठक में आये ग्रामप्रधानों व सम्भ्रान्त व्यक्तियों को जागरूक करते हुए कहा कि बच्चा चोरी जैसी अफवाहों पर ध्यान न दें थानाध्यक्ष ने कहा कि यदि गांव में कोई भी संदिग्ध व्यक्ति मिले या कोई शख्स अफवाह फैला रहा है तो तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दें गांवों में भूले भटके आये विक्षिप्त या अनजान व्यक्ति के साथ मारपीट न करें बल्कि इसकी सूचना तत्काल पुलिस को दें पुलिस उसकी जांच कर आवश्यक कार्यवाही करेगी थानाध्यक्ष अलोक कुमार ने ग्राम प्रधानों एवं क्षेत्र के स्कूल कॉलेज प्रबंधकों से अपील करते हुए कहा कि अपने गांव व स्कूलों में भी ऐसी अफवाहों पर ध्यान न देने को लेकर लोगों को जागरूक करें इसी तरह जिले के अन्य थाना और पुलिस चौकी के कोतवाल उप निरीक्षकों ने क्षेत्र के लोगों को जागरुक कर बच्चा चोरी की घटना की अफवाह न फैलाने की अपील की है।

अझुवा का युवक बनारस में हुआ भयानक दुर्घटना का शिकार, हालत गंभीर

प्रयागराज के हादसे में शामिल होने के लिए भैया भाभी को लेने जा रहा था एयरपोर्ट बनारस

अखंड भारत संदेश

दुर्घटना ग्रस्त वाहन

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा निवासी एक युवक बनारस में गम्भीर दुर्घटना का शिकार हो गया है जिसका बनारस में इलाज चल रहा है।

जानकारी के अनुसार राज केसरवानी पुत्र बुद्धू केसरवानी(फल वाले) के छोटे पुत्र राज केसरवानी अपने भाई वीरू और उनकी पत्नी वंदना को बाबतपुर एअरपोर्ट बनारस लेने गया था एयरपोर्ट से कुछ किमी पहले चार पहिया वाहन डिवाडर में चढ़ गई जिसमें राज केसरवानी गम्भीर घायल हो गया जिसे स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। परिजनों के अनुसार एक दिन पहले प्रयागराज के मुट्ठीगंज में बारजा गिरने से कई मौतें हुई थी उनमें बीरू के साले की भी मौत हुई थी उसी के अंतिम संस्कार में शामिल कराने के लिए राज केसरवानी अपने भैया भाभी को बाबतपुर बनारस एयरपोर्ट से लेने जा रहा था ।अझुवा से परिजन रोते बिलखते बनारस के लिए रवाना हो गए हैं।

सोते रहे दरोगा सरकारी जीप लेकर पशु तस्करों का पीछा करने पहुचे पुलिस के जवान

अखंड भारत संदेश

पशु तस्करों की गाड़ियों का ओवरटेक करने के चक्कर में छतिग्रस्त हुई पुलिस जीप

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के टेढ़ी मोड़ पुलिस चौकी की सरकारी पुलिस जीप दुर्घटना में क्षतिग्रस्त हो गई है पुलिस जनों का कहना है कि डीसीएम चालक ने उनकी गाड़ी में टक्कर मार दिया है जबकि हकीकत यह है कि चौकी इंचार्ज के सो जाने के बाद आधी रात को सिपाही पुलिस की सरकारी जीप से पशु तस्करों की गाड़ियों का पीछा कर रहे थे ओवरटेक करने के चक्कर में पुलिस जीप दुर्घटना ग्रस्त हो गयी हैं जिससे पुलिस की जीप क्षतिग्रस्त हो गई है हालांकि पुलिस ने दुर्घटना करने वाले डीसीएम को अपने कब्जे में ले लिया है बताया जाता है कि पुलिस चौकी के सिपाही आशुतोष और गौरव मंगलवार की रात्रि हाईवे पर सरकारी पुलिस से गस्त कर रहे थे रात्रि 2:00 बजे के पास ननमई मोड़ के पास पुलिस की सरकारी जीप को खड़ी करके दोनों सिपाही सड़क पर वाहनों की जांच करने में लगे थे इसी बीच कानपुर से प्रयागराज की तरफ जा रही तेज रफ्तार डीसीएम सड़क पर खड़े पुलिस जवानों को बचाने के चक्कर मे पुलिस जीप से टकरा गई हादसे में पुलिस जीप दुर्घटनाग्रस्त हो गई है भगवान का शुक्र था कि दोनो सिपाही बच गए है।

न्यूज झरोखा

सेंट फ्रांसिस स्कूल में धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ बच्चों ने मनाया शिक्षक दिवस

भरवारी कौशाम्बी। देश के पूर्व राष्ट्रपति शिक्षाविद डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन शिक्षक दिवस के अवसर पर सेंट फ्रांसिस स्कूल बेरुवा में कॉलेज की कैप्टन सोनाली सिंह के नेतृत्व में स्कूल के स्टूडेंट कैबिनेट के मेंबर एवं अन्य छात्र छात्राओं के सहयोग से शिक्षकों के सम्मान में अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ उक्त अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ बच्चों ने विद्यालय के प्रधानाचार्य सहित समस्त शिक्षक- शिक्षिकाओं को बुके वा उपहार भेंट करके सम्मानित किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत गुरु वंदना, वेलकम सॉन्ग, जीवन में गुरु का महत्व, फनी डांस, कोरल डांस आदि बच्चों ने प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पश्चात शिक्षक- शिक्षिकाओं में भी प्रतिस्पर्धा की भावना को जागृत करने के लिए विद्यालय की मुख्य शाखा श्रीमती फूलपति देवी इंटर कॉलेज के शिक्षक- शिक्षिकाओं व अपने कॉलेज के शिक्षक- शिक्षिकाओं के मध्य विभिन्न प्रकार के खेलों का भी आयोजन कराया। जिसमें प्रमुख रुप से क्रिकेट, खो-खो म्यूजिकल चेयर रेस, बैलून रेस आदि खेल बच्चों के आकर्षण का केंद्र रहे, क्रिकेट में सेंट फ्रांसिस के शिक्षकों की टीम ने फूलपति देवी के शिक्षकों की टीम को पराजित किया, वही खो -खो में मैच दोनों राउंड में टाई रहा, म्यूजिकल चेयर रेस में फूलपति देवी की शिक्षिकाओं का पलड़ा भारी रहा दो मैचों में उन्होंने सेंट फ्रांसिस के शिक्षिकाओं को करारी शिकस्त दी। कॉलेज के प्रबंधक रोशन लाल वत्स ने उक्त अवसर पर दोनों विद्यालयों के शिक्षक- शिक्षिकाओं को सम्मानित करते हुए कहा की बच्चों के द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम व आज के दिन बच्चों के द्वारा संचालित विद्यालय को देखकर यह महसूस होता है कि शिक्षक ही भगवान के बाद दूसरा वह स्वरूप है जो मानव को सभ्यता व संस्कारों के सांचे में ढालने का कार्य करता है। उन्होंने कहा कि तकनीकी चाहे जितना ही प्रगति कर ले बिना शिक्षक शिक्षिकाओं के कुछ भी संभव नहीं है।

डिहवा ओसा में दंपत्ति ने युवक पर किया हमला

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के डिहवा ओसा गांव निवासी सर्वेश कुमार यादव पुत्र कल्लू यादव पर उसके बड़े भाई तेज बहादुर और उनकी पत्नी शोभा देवी ने हिस्सा बटवारा के विवाद को लेकर हमला किया है भाई भाभी के हमले में सर्वेश कुमार यादव को चोटे आई हैं मामले की तहरीर लेकर अपने माता पिता के साथ सर्वेश कुमार मंझनपुर कोतवाली पहुंचा है और भाई भाभी के खिलाफ तहरीर देकर उन पर मुकदमा दर्ज कराए जाने और भाई भाभी की गिरफ्तारी कराए जाने की मांग की है।

आंगनवाड़ी में नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के बिरौली गांव के प्रदीप कुमार पुत्र रिबई लाल की बहन अनीता देवी को आंगनवाड़ी में नौकरी दिलाने के नाम पर उनके बैंक खाते से 80 हजार रुपए नगद के साथ तीन पाव चांदी की हाफ पेटी सोने चांदी के गहने शिकायतकर्ता की बहन अनीता से पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के सोनौली गांव निवासी लव कुश पुत्र रामदीन प्रजापति ने 7 महीने पहले अनीता देवी से ठगी कर ली है अनीता को ना तो नौकरी मिल सकती है और ना ही उसकी रकम वापस मिल सकी है जिस पर अनीता के भाई प्रदीप कुमार ने थाना पुलिस को शिकायती पत्र देकर मुकदमा दर्ज कराए जाने और रकम दिलाए जाने की मांग की है।

नगर पंचायत कर्मियों को वेतन देने के बजाय ठेकेदार को कर दिया वेतन भुगतान!

कौशाम्बी। शासन द्वारा नगर पंचायत चायल के कर्मचारियों को वेतन दिए जाने के लिए भेजी गई धनराशि से नगर पंचायत के कर्मियों को वेतन भुगतान नहीं किया है बल्कि उस रकम को ठेकेदारों को भुगतान कर दिया है मामले की शिकायत नगर पंचायत चायल के कर्मियों ने मुख्यमंत्री से करते हुए वेतन भुगतान दिलाए जाने की मांग की है। बताते चलें कि नियमित कर्मचारियों के वेतन का भुगतान नगर पंचायत द्वारा नहीं किया गया है जिससे नियमित कर्मचारियों में आक्रोश व्याप्त है राज्य वित आयोग द्वारा कर्मचारियों के वेतन भुगतान हेतु अनुदान14 लाख 63 हजार रुपए नगर पंचायत चायल को आवंटित किया गया था जिसमें साहिद हुसैन (पम्प आपरेटर) व ओम प्रकाश सरोज (पम्प आपरेटर) कमलेश कुमार (चपरासी) / चौकीदार आदि कुल नौ कर्मचारी का वेतन भुगतान अवशेष है जबकि नगर अध्यक्ष श्रीमती शिवमनी केशरवानी एवं लाल जी अधिशाषी अधिकारी की मिली भगत से नरेश गुप्ता ठेकेदार को बिना किसी कार्य के भुगतान किया गया है जिसके कारण कर्मचारियों का भुगतान नही किया जा सका नगर पंचायत के कर्मियों ने बताया कि विनोद कुमार सरोज (लिपिक) से जब पूछा गया तो उसने बताया कि अध्यक्ष और अधिशाषी अधिकारी के आदेश पर कुछ कर्मचारियों का भुगतान किया गया है शेष कर्मचारियों का वेतन भुगतान न किए जाने की बात अध्यक्ष और अधिशासी अधिकारी ने कही है कर्मचारियों ने बताया कि नगर पंचायत चायल में भ्रष्टाचार का अम्बार है इसके पूर्व में भी एन्टी करेप्सन की टीम ने देवानन्द चपरासी / चौकीदार को रगें हाथ घूस लेते हुए पकड़ा था जो हाई कोर्ट में मुकदमा विचाराधीन है फिर भी प्रोन्नति कर नायब मोहिरर के पद पर उसे तैनाती दी गई है जिसकी पत्नी सभासद एवं देवानन्द का पुत्र हिमांशु गुप्ता को कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर फर्जी तरीके से रखा गया है शिकायतकर्ता कर्मचारियों ने कहा कि उच्च स्तरीय से जांच कराया जाए वेतन भुगतान दिलाया जाए और दोषी कर्मचारियों को दंडित किया जाए।

निर्माणाधीन गौशालाओं का सीडीओ ने किया निरीक्षण

पूरी धनराशि मिल जाने के बाद गौशाला हैंड ओवर ना करने से नाराज सीडीओ ने प्रोजेक्ट मैनेजर को दी कड़ी चेतावनी

अखंड भारत संदेश

गौशाला का निरीक्षण करते मुख्य विकास अधिकारी

कौशांबी। मुख्य विकास अधिकारी ने मंझनपुर विकासखंड क्षेत्र के तैयब पुर मंगोरा और कौशांबी विकासखंड क्षेत्र के बिदाँव व मुस्तफाबाद मे निमार्णाधीन गौशाला का बुधवार को निरीक्षण किया है निरीक्षण के दौरान उन्होंने तैयबपुर मंगौरा के प्रधान व सचिव को 15 दिन में कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए हैं उन्होंने बताया कि इस गौशाला में 100 पशुओं को संरक्षित करने की व्यवस्था है। बिंदाव में 1 करोड़ 20 लाख की लगत से बृहद गोशाला बनाई जा रही है। गौशाला निर्माण के लिए वढ सिडको को पूरी धनराशि मिल चुकी है किंतु उनके द्वारा कार्यपूर्ण करके हैंडओवर देने में हीलाहवाली की जा रही है सिडको के प्रोजेक्ट मैनेजर को सीडीओ ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि एक सप्ताह में गौशाला हैंडओवर नही करेंगे तो इउद्ध कौशाम्बी उनके विरुद्ध पशु क्रूरता अधिनियम के अंतर्गत प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायेंगे। उन्होंने कहा कि क्योंकि संरक्षण के अभाव में पशु दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हैं और उनके चारे पानी की भी व्यवस्था नही हो पा रही है।निरीक्षण के समय जिला पंचायत राज अधिकारी खण्ड विकास अधिकारी कौशांबी व ब्लाक स्तरीय कर्मचारी उपस्थित रहे।

निपुण भारत के लक्ष्यों की प्राप्ति ही हमारा प्रमुख उद्देश्य : प्राचार्य

निपुण भारत की बैठक

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। निपुण भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सिराथू क्षेत्र में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है प्राचार्य उप शिक्षा निदेशक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अनिल कुमार द्वारा ब्लॉक संसाधन केंद्र सिराथू में आयोजित होने वाले बुनियादी भाषा एवं संख्यात्मक ज्ञान पर आधारित चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुश्रवण किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य द्वारा बताया गया कि निपुण भारत के लक्ष्यों की प्राप्ति ही हमारा प्रमुख उद्देश्य है ,इस हेतु टीम भावना से मिलजुल कर प्रयास करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा कि निपुण भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक जन आंदोलन का रूप देना होगा, साथ ही उपस्थित शिक्षक और शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए डायट प्राचार्य ने कहा कि छात्रों में अंतर्निहित गुणों को क्रिया-कलाप के माध्यम से उकेरा जाए, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। प्रशिक्षण में उपस्थित शिक्षकों को संबोधित करते हुए डायट प्रवक्ता सुरेश चंद्र मिश्र ने कहा कि इस प्रशिक्षण को विद्यालय में शत-प्रतिशत फलीभूत करने की आवश्यकता है, जिससे निपुण भारत के लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सके 'खंड शिक्षा अधिकारी, सिराथू डॉ.जवाहर लाल ने कहा कि यह प्रशिक्षण हमें निपुण भारत के लक्ष्यो को प्राप्त करने में अहम भूमिका अदा करेगा खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि विकास खंड स्तर आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात शिक्षक उक्त प्रशिक्षण का विद्यालय में प्रयोग कर शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे इस अवसर पर समस्त संदर्भदाता ए0आर0पी0 राज किशोर शुक्ला सचिंद्र मिश्र सतीश चंद्र शर्मा मनोज सिंह पीयूष तिवारी सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

निपुण भारत के लक्ष्यों की प्राप्ति को लेकर बीआरसी में बैठक आयोजित

बीआरसी मूरतगंज में आयोजित बैठक

इमामगंज कौशाम्बी। बीआरसी मूरतगंज में निपुण भारत लक्ष्य को लेकर बैठक आयोजित की गई है बैठक की अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी मुकेश नारायण मिश्र ने किया है इस मौके पर उन्होंने कहा कि निपुण भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है निपुण भारत के लक्ष्यों की प्राप्ति ही हमारा प्रमुख उद्देश्य है ,इस हेतु टीम भावना से मिलजुल कर प्रयास करने की आवश्यकता है उपस्थित शिक्षक और शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा कि छात्रों में अंतर्निहित गुणों को क्रिया-कलाप के माध्यम से उकेरा जाए, जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके। प्रशिक्षण में उपस्थित शिक्षकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण को विद्यालय में शत- प्रतिशत फलीभूत करने की आवश्यकता है, जिससे निपुण भारत के लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सके इस मौके पर आलोक द्विवेदी संदर्भ दाता बृजेश पांडेय धर्मेंद्र पाठक अमित सिंह राम रतन कौशलेश त्रिपाठी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

चरवा थाना के संरक्षण में पल रहा अपराधी अब बना पुलिस के लिए मुसीबत!

चौकी इंचार्ज पर आरोप लगाने वाले कबाड़ी को पर्दे की आड़ से बल दे रहा सिपाही

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र में बीते तीन दशक से अपराध के धंधे में लिप्त एक कबाड़ी और उसके रैकेट के सदस्यों ने इन दिनों पुलिस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है चोरी की बाइक खरीद कर अमीर बनने वाले इस कबाड़ी और उसके रैकेट के सदस्यों के संगठित अपराध के धंधे की रीढ़ को तोड़ने की जब चौकी इंचार्ज सैय्यद सरावा ने मुहिम चलाई तो कबाड़ी ने चौकी इंचार्ज पर ही आरोप लगाना शुरू कर दिया है चोरी की बाइक खरीदने में पूरा रैकेट सक्रिय है और उसे संरक्षण देने की आड़ में कुछ सफेदपोश भी काली कमाई के हिस्सेदार हैं लंबे समय से चोरी की बाइक खरीदने का यह धंधा रैकेट के सदस्यों के संरक्षण में बेखौफ तरीके से चल रहा है इलाके में आए दिन बाइक चोरी होती है और कबाड़ी के यहां पहुंच जाती है जहां बाइक के एक-एक पुर्जा को अलग करके बेच दिया जाता है धंधे में कई मजदूर भी लगाए गए हैं चोरी की बाइक खरीदने में लिप्त रैकेट के सदस्यों को लंबे समय से एक सिपाही कुछ रुपयों के लालच में बल दे रहा है सिपाही का संरक्षण पाकर चोरी की बाइक खरीदने के धंधे में लंबे समय से लिप्त कबाड़ी का इस कदर हौसला बढ़ गया है कि चोरी की बाइक खरीदने में लिप्त कबाड़ी और उसके रैकेट के सदस्यों पर कार्यवाही करने में लगे चौकी इंचार्ज पर बाइक चोरी का आरोप कबाड़ी ने लगा डाला है चोर उचक्के पुलिस पर आरोप लगाएंगे तो पुलिस कैसे निष्पक्ष कार्यवाही करेगी बड़ा सवाल खड़ा हो रहा है कबाड़ी को बल देने वाले सिपाही को चिन्हित कर उस पर कठोर कार्यवाही किए जाने की जरूरत है इतना ही नहीं कबाड़ी के कारनामे को जब पत्रकारों ने खबर के माध्यम से अधिकारियों तक पहुंचाया तो कबाड़ी ने पत्रकारों पर भी मनगढ़ंत आरोप लगाना शुरू कर दिया है अब सवाल उठता है कि तीन दशक से कबाड़ी और उसके रैकेट के सदस्य चोरी के सामानों की खरीद में लगे है कुछ मामलों में कबाड़ी पर पूर्व में मुकदमे भी दर्ज हुए हैं लेकिन ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है जिससे थाना पुलिस की भी भूमिका कई वर्षों से सवालों के घेरे में है कबाड़ी को चिन्हित कर इसके काले साम्राज्य पर कठोर कार्रवाई करते हुए पुलिस अधिकारियों को इसे गिरफ्तार कर जेल भेजने की जरूरत है तभी कबाड़ी और उसके रैकेट के सदस्यों का लंबे समय से चल रहा काला साम्राज्य खत्म हो सकेगा।

संपादकीय

समझना होगा साक्षरता का महत्व

साक्षरता के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 08 सितंबर को विश्वभर में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाता है। दुनिया से अशिक्षा को समाप्त करने के संकल्प के साथ आज 56वां अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जा रहा है। पहली बार यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) द्वारा 17 नवम्बर 1965 को 8 सितंबर को ही अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाए जाने की घोषणा की गई थी, जिसके बाद प्रथम बार 8 सितंबर 1966 से शिक्षा के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ाने तथा विश्वभर के लोगों का इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रतिवर्ष इसी दिन यह दिवस मनाए जाने का निर्णय लिया गया। वास्तव में यह संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का ही प्रमुख घटक है। निरक्षरता को खत्म करने के लिए ईरान के तेहरान में शिक्षा मंत्रियों के विश्व सम्मेलन के दौरान वर्ष 1965 में 8 से 19 सितंबर तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा कार्यक्रम पर चर्चा करने के लिए पहली बार बैठक की गई थी और यूनेस्को ने नवम्बर 1965 में अपने 14वें सत्र में 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस घोषित किया। उसके बाद से सदस्य देशों द्वारा प्रतिवर्ष 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाता है। मानव विकास और समाज के लिए उनके अधिकारों को जानने और साक्षरता की ओर मानव चेतना को बढ़ावा देने के लिए ही अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाता है। निरक्षरता समाप्त करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के पक्ष में वातावरण तैयार किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार विश्वभर में करीब एक अरब लोग ऐसे हैं, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते। तमाम प्रयासों के बावजूद दुनियाभर में 77 करोड़ से भी अधिक युवा भी साक्षरता की कमी से प्रभावित हैं अर्थात प्रत्येक पांच में से एक युवा अब तक साक्षर नहीं है।इनमें से दो तिहाई महिलाएं हैं। आंकड़े बताते हैं कि 6-7 करोड़ बच्चे आज भी ऐसे हैं, जो कभी विद्यालयों तक नहीं पहुंचते। करीब 58 फीसदी के साथ सबसे कम व्यस्क साक्षरता दर के मामले में दक्षिण और पश्चिम एशिया सर्वाधिक पिछड़े हैं। सामाजिक प्रगति प्राप्ति पर ध्यान देने के लिए 2006 में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस का विषय साक्षरता सतत विकास रखा गया था।

वर्ष 2007 और 2008 में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की विषय-वस्तु साक्षरता और स्वास्थ्य थी। वर्ष 2009 में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर ध्यान देने के लिए इसकी विषय साक्षरता और सशक्तिकरण रखी गई। 2010 की थीम साक्षरता विकास को बनाए रखना थी। 2011 में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के लिए थीम साक्षरता और महामारी पर केन्द्रित थी। 2012 में लैंगिक समानता और महिलाओं को सशक्त बनाने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए थीम थी साक्षरता और सशक्तिकरण। 2013 में शांति के लिए साक्षरता के महत्व पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए साक्षरता और शांति, 2014 में 21वीं शताब्दी के लिए साक्षरता, 2015 में साक्षरता और सतत विकास, 2016 में अतीत पढ़ना, भविष्य लिखना, 2017 में डिजिटल दुनिया में साक्षरता तथा 2018 में साक्षरता और कौशल विकास अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम थी। 2019 में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की साक्षरता और बहुभाषावाद तथा वर्ष 2020 में कोविड-19 संकट और उससे संबंधित शिक्षा और शिक्षण थी। वर्ष 2021 के लिए अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की थीम मानव-केन्द्रित पुनर्प्राप्ति के लिए साक्षरताः डिजिटल विभाजन को कम करना (लिटरेसी फॉर ए ूमन-सेंट्रड रिकवरीः नैरोइंग द डिजिटल डिवाइड) रखी गई थी। इस वर्ष साक्षरता दिवस की थीम ट्रांसफॉर्मिंग लिटरेसी लर्निंग स्पेसेस (साक्षरता सीखने के स्थान को बदलना) निर्धारित की गई है। साक्षरता का अर्थ केवल पढ़ना-लिखना या शिक्षित होना ही नहीं है बल्कि सफलता और जीने के लिए भी साक्षरता बेहद महत्वपूर्ण है। यह लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए सामाजिक विकास का आधार स्तंभ बन सकती है। भारत हो या दुनिया के अन्य देश, गरीबी मिटाना, बाल मृत्यु दर कम करना, जनसंख्या वृद्धि नियंत्रित करना, लैंगिक समानता प्राप्त करना आदि समस्याओं के समूल विनाश के लिए सभी देशों का पूर्ण साक्षर होना बेहद जरूरी है। साक्षरता में ही वह क्षमता है, जो परिवार और देश की प्रतिष्ठा बढ़ा सकती है। आंकड़े देखें तो दुनिया के 127 देशों में से 101 देश ऐसे हैं, जो पूर्ण साक्षरता हासिल करने के लक्ष्य से अभी दूर हैं और चिंता की बात है कि भारत भी इनमें शामिल है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से निरक्षरता समाप्त करना भारत के लिए प्रमुख चिंता का विषय रहा है। हालांकि आजादी के बाद साक्षरता दर देश में काफी तेजी से बढ़ी है। देश में विद्यालयों की कमी, विद्यालयों में शौचालयों आदि की कमी, निर्धनता, जातिवाद, लड़कियों के साथ छेड़छाड़ या बलात्कार जैसी घटनाओं का डर, जागरुकता की कमी इत्यादि साक्षरता का लक्ष्य हासिल न हो पाने के मुख्य कारण हैं। अतः इनके निदान के लिए गंभीर प्रयास होने नितांत आवश्यक हैं।

आत्महत्या की घटनाओं का बढ़ना बदनुमा दाग

ललित गर्ग

बढ़ती आत्महत्या की घटनाएं एक ऐसा बदनुमा दाग है जो हमारे तमाम विकास एवं शिक्षित होने के दावों को खोखला करता है। आत्महत्या शब्द जीवन से पलायन का डरावना सत्य है जो दिल को दहलाता है, डराता है, खौफ पैदा करता है, दर्द देता है। इसका दंश वे झेलते हैं जिनका कोई अपना आत्महत्या कर चला जाता है, उनके प्रियजन, रिश्तेदार एवं मित्र तो दुःखी होते ही हैं, सम्पूर्ण मानवता भी आहत एवं शर्मसार होती है। एक रिपोर्ट के अनुसार, 2019 में भारत में 1.39 लाख लोगों ने आत्महत्या की, जिनमें से लगभग 45 फीसदी लोग तनाव, अवसाद, बायपोलर डिसऑर्डर, सिजोफ्रेनिया जैसी समस्याओं का सामना कर रहे थे। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि आत्महत्या के प्रमुख कारणों में तनाव, हिंसा, अवसाद, निराशा, नकारात्मकता सहित अन्य मानसिक समस्याएं, गंभीर रोगों के चलते निराशा, सामाजिक संघर्ष या दबाव न झेल पाना, अज्ञानता आदि शामिल हैं। ऐसी विभिन्न स्थितियों में व्यक्ति खुद को अकेला मानने लगता है और कई बार ऐसे निराशाजनक कदम उठा लेता है। आत्महत्या की बढ़ती डरावनी स्थितियों को कम करने के लिये एवं आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं पर नियंत्रण पाने के लिये विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस प्रतिवर्ष 10 सितंबर को मनाया जाता है, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय एसोसिएशन फॉर आत्महत्या रोकथाम (इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रवेंशन-आईएएसपी) द्वारा आयोजित किया जाता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ने हाल में भारत में आत्महत्या के जो आंकड़े जारी किये हैं, वे चिंताजनक हैं. किसी भी समाज और देश के लिए यह बेहद चिंताजनक स्थिति है। कोई शख्स आत्महत्या को आखिरी विकल्प क्यों मान रहा है? नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक देश में आत्महत्या के मामलों में 3.6 फीसदी की बढोत्तरी हुई है और औसतन देश में हर दो घंटे में तीन लोग जान दे रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार 2018 में कुल 1, 34, 516 लोगों ने खुदकुशी की, जो 2017 के 1, 29, 887 आत्महत्या के मामलों के मुकाबले 3.6 फीसदी अधिक है और यह आगामी वर्षों में लगातार बढ़ती जा रही है।

लेकिन सबसे चिंताजनक बात यह है कि देश में छात्रों की आत्महत्या की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के 2018 के आंकड़ों से स्टूडेंट्स की आत्महत्या को लेकर बेहद चिंताजनक तथ्य सामने आये हैं। 2018 में लगभग 10,159 छात्रों ने आत्महत्या की है। इनमें से एक चौथाई ने इम्तिहान में फेल होने के डर से आत्महत्या की। इसके अलावा प्रेम में नाकामी, उच्च-शिक्षा के मामले में आर्थिक समस्या, अच्छा प्लेसमेंट न मिलना और बेरोजगारी भी छात्रों की आत्महत्या की प्रमुख वजह के रूप में सामने आयी है। आंकड़ों के मुताबिक एक दशक में लगभग 82 हजार छात्रों ने आत्महत्या जैसा अतिरेक कदम उठाया है।. महाराष्ट्र में 1448 छात्रों के आत्महत्या के सबसे अधिक मामले सामने आये हैं।

बेटियां तो और भावुक होती हैं। माता-पिता के साथ संवादहीनता बढ़ने से बच्चे परिवार, स्कूल और कोचिंग में तारतम्य स्थापित नहीं कर पाते हैं और तनाव का शिकार हो जाते हैं। हमारी व्यवस्था ने उनके जीवन में अब सिर्फ पढ़ाई को ही रख छोड़ा है। रही-सही कसर मोबाइल ने पूरी कर दी है। दूसरी ओर माता-पिता के पास वक्त नहीं है, उनकी अपनी समस्याएं हैं। नौकरी और कारोबार की व्यस्तताएं हैं, उसका तनाव है। जहां मां नौकरीपेशा है, वहां संवादहीनता की स्थिति और गंभीर है। एक और वजह है, भारत में परंपरागत संयुक्त परिवार का तानाबाना टूटता जा रहा है। परिवार एकाकी हो गये हैं और नयी व्यवस्था में बच्चों को बाबा-दादी, नाना-नानी का सहारा नहीं मिल पाता है, जबकि कठिन वक्त में उन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है। यही वजह है कि अनेक बच्चे आत्महत्या जैसे अतिरेक कदम उठा लेते हैं। बच्चे संघर्ष करने के बजाय हार मान कर आत्महत्या का सहज रास्ता चुन ले रहे हैं। माता-पिता और शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे लगातार बच्चों को यह समझाएं कि परीक्षा परिणाम ही सब कुछ नहीं है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण है कि इम्तिहान में बेहतर न करने वाले लोगों ने जीवन में सफलता के मुकाम हासिल किये हैं।

कभी कोई विद्यार्थी, कभी कोई पत्नी, व्यापारी अथवा किसान, कभी कोई सरकारी कर्मी तो कभी कोई प्रेमी-जीवन में समस्याओं से इतना घिरा हुआ महसूस करता है या नाउम्मीद हो जाता है कि उसके लिये जीवन से पलायन कर जाना ही सहज प्रतीत होता है और वह आत्महत्या कर लेता है। आत्महंता होते व्यक्ति के लिये समस्याएँ विराट हो गई है एवं सहनशक्ति क्षीण हुई है। यही कारण है कि विश्व में हर 40 सेकंड में एक व्यक्ति आत्महत्या करता है, इस तरह वर्ष से आठ लाख से अधिक लोग मर जाते हैं तथा इससे भी अधिक लोग आत्महत्या क ा अ सा फ ला प्रयास करते हैं।

> जब सुविधावादी मनोवृत्ति सिर पर सवार होती हैं और उन्हें पूरा करने के लिये साधन नहीं जुटा पाते हैं तब कुंठित एवं तनावग्रस्त व्यक्ति को अन्तिम समाधान आत्महत्या में ही दिखता है। यह केवल भारत की समस्या नहीं है विदेशों में तो इसके आँकड़े चौंकाने वाले हैं

वैश्विक स्तर पर आत्महत्या का सबसे सामान्य तरीका कीटनाशक खाना, फांसी लगाना, रेल्वे के आगे कूद जाना, पानी में डूबना और बंदूक हैं। आत्महत्या की समस्या दिन-पर-दिन विकराल होती जा रही है। इधर तीन-चार दशकों में विज्ञान की प्रगति के साथ जहां बीमारियों से होने वाली मृत्यु संख्या में कमी हुई है, वहीं इस वैज्ञानिक प्रगति एवं तथाकथित विकास के बीच आत्महत्याओं की संख्या पहले से अधिक हो गई है। यह समाज के हर एक व्यक्ति के लिए चिंता का विषय है।

चिंता की बात यह भी है कि आज के सुविधा भोगी जीवन ने तनाव, अवसाद, असंतुलन को बढ़ावा दिया है, अब सन्तोष धन का स्थान अंग्रेजी के मोर धन ने ले लिया है। जब सुविधावादी मनोवृत्ति सिर पर सवार होती हैं और उन्हें पूरा करने के लिये साधन नहीं जुटा पाते हैं तब कुंठित एवं तनावग्रस्त व्यक्ति को अन्तिम समाधान आत्महत्या में ही दिखता है। यह केवल भारत की समस्या नहीं है विदेशों में तो इसके आँकड़े चौंकाने वाले हैं। लगभग अस्सी नब्बे प्रतिशत किशोर किशोरियां तनावग्रस्त हैं जिनका डॉक्टरी इलाज चल रहा है। यह सब आज के अति भौतिकवादी एवं सुविधावादी युग की देन है। तकनीकी विकास ने मनुष्य को सुविधाएँ तो दीं लेकिन उससे उसकी मानवीयता, संतुलन छीन लिया। उसे अधिक-से-अधिक मशीन में और कम से कम मानव में तब्दील कर दिया है। एडवर्ड डेह्लबर्ग कहते हैं- जब कोई महसूस करता है कि उसकी जिन्दगी बेकार है तो वह या आत्महत्या करता है या यात्रा। प्रश्न है कि लोग दूसरा रास्ता क्यों नहीं अपनाते? आत्महत्या ही क्यों करते हैं?

आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं को रोकना एक आदर्श एवं संतुलित समाज का आधार होना चाहिए। विश्व स्तर पर आयोजित होने वाले विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस की सार्थकता तभी है जब इस दिशा में कुछ ठोस उपक्रम हो। संपर्क, संवाद और देखभाल- यह तीन शब्द आत्महत्या की रोकथाम में मूल मंत्र साबित हो सकते हैं। आत्महत्या के पीछे मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, सांस्कृतिक एवं परिस्थितिकीय कारण होते हैं। उन कारणों को खोजना जरूरी है। अनेक संगठन एवं व्यक्ति इस दिशा में सार्थक पहल कर रहे हैं। जिन्होंने आत्महत्या रोकने के उपाय खोजे हैं और अपने विचारों एवं कार्यों को अमलीजामा पहनाने के लिये मुहिम चला रहे हैं। फ्रांसिस थामसन ने कहा कि ह्लअपने चरित्र में सुधार करने का प्रयास करते हुए, इस बात को समझें कि क्या काम आपके बूते का है और क्या आपके बूते से बाहर है। इसका सीधा-सा अर्थ तो यही हुआ कि आज ज्यों-ज्यों विकास के नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं, त्यों-त्यों आदर्श धूल-धूसरित हो रहे हैं और मनुष्य आत्महंता होता रहा है।

दुनिया भीषण अकाल के मुहाने पर खड़ी

संजय

दुनिया भीषण अकाल के मुहाने पर खड़ी है। विश्व मे यह स्थिति भयंकर सूखा और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण आई है। दुनिया के अत्यंत विकसित देशों में भी हालात बिगड़ रहे हैं। सूखे के कारण यूरोप, अमेरिका और चीन जैसे बड़े क्षेत्रों की हालत खराब है। बहुस्तरीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिति ने भारत को अभी तक बचाया है लेकिन भारत के पड़ोस में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों में उत्पन्न संकट का सीधा असर भारत पर पड़ना स्वाभाविक है। ऐसे में महंगाई और खाद्यान्न संकट के कारण अनेक देश आंतरिक कलह और अस्थिरता की चपेट में आने वाले हैं। भारत जैसे बड़ी जनसंख्या वाले देश में यह राजनीतिक मुद्दा बना कर खड़ा किए जाने की स्थिति दिख रही है। सबसे बड़ा संकट यह है कि ऐसे हालात में यदि पड़ोसी देशों से भगदड़ की स्थिति आएगी तब क्या होगा, क्योकि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश के भूखे लोग भारत की ओर ही पलायन करेंगे। इस बारे में संयुक्त राष्ट्र लगातार चेतावनी दे रहा है। भारत के पड़ोस के देशों की स्थिति बहुत चिंताजनक है। एक हालिया रिपोर्ट में संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि सोमालिया में अकाल दरवाजे पर खड़ा है और इस बात के ठोस संकेत हैं कि इस साल के अंत तक यह दस्तक दे देगा। सोमालिया में सूखे के कारण हजारों लोगों की मौत हो चुकी है। रूस-यूक्रेन युद्ध के प्रभाव के चलते हालात और मुश्किल हो गए हैं। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख मार्टिन ग्रिफिथ का कहना है कि सोमालिया यात्रा के दौरान उन्होंने भूख के कारण बच्चों को रोते देखा है। सोमालिया में जलवायु परिवर्तन के कारण पैदा हुए सूखे के चलते बीते एक दशक में कम से कम 10 लाख लोग विस्थापित हुए हैं। इथोपिया और केन्या भी इससे व्यापक रूप से प्रभावित हुए हैं। सोमालिया में साल 2011 में भी अकाल पड़ चुका है। माना जाता है कि उस दौरान ढाई लाख लोगों की मौत हुई थी। ऐसा दिख रहा है कि इस बार का अकाल 2011 से भी ज्यादा भयावह होगा। अफगानिस्तान में हालात बहुत ही खराब हैं। काफी पहले ही संयुक्त राष्ट्र ने आगाह किया था कि बढ़ती गरीबी से जूझ रहे अफगानिस्तान के 60 लाख लोगों पर अकाल से प्रभावित होने का खतरा मंडरा रहा है। मार्टिन ग्रिफिथ्स ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को बताया है कि मानवीय, आर्थिक, जलवायु, भुखमरी और वित्तीय संकट जैसे कई संकटों का अफगानिस्तान सामना कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी है कि अफगानिस्तान में करीब 60 लाख लोगों को भयंकर अकाल का खतरा है। इसके दो प्रमुख कारण हैं चरम मौसम की स्थिति और तालिबान सरकार की नीतियों की वजह से अनिश्चितता। ग्रिफिथ्स के मुताबिक पिछले साल अगस्त में तालिबान की सत्ता में वापसी के बाद से इस देश में पहले से ही खराब स्थिति और बदतर हो गई है। अत्यधिक बेरोजगारी और अत्यधिक गरीबी के कारण लाखों अफगान एक बार फिर अपनी मातृभूमि छोड़ने के लिए मजबूर हो गए हैं। हाल ही में आए विनाशकारी भूकंप और विभिन्न हिस्सों में अचानक आई बाढ़ ने स्थिति को और खराब कर दिया है। विश्व में इससे भी बड़ी त्रासदी सूखे ने पैदा कर दी है। लगभग दुनिया इसकी चपेट में है। पश्चिमी अमेरिका में दो झीलें लेक मीड और पावेल सूखे के चपेट में एकदम सिकुड़ गई हैं। बीबीसी की 24 अगस्त की रिपोर्ट के मुताबिक वहां व्यापक क्षेत्र में विगत 500 वर्षों का सबसे बड़ा सूखा पड़ा है। कई प्रसिद्ध नदियां सूख गई हैं। यही हाल चीन का है। चीन के कई प्रांतों में भीषण सूखा पड़ गया है। लोग घरों से बाहर नहीं निकल रहे हैं। अभूतपूर्व लू चल रही है। यूरोप के दो तिहाई भाग के लिए सूखे की चेतावनी जारी हो गई है। अवर्षा और लू के चलते गर्मी की खेती हो ही नहीं सकी जिसमें मक्का, सोयाबीन और सूरजमुखी प्रमुख है। नवंबर तक ऐसे ही मौसम की भविष्यवाणी है। फ्रांस की लोईरे नदी सूख रही है। स्पेन में भी बुरी हालत है। वहां के जलाशय इतने सूख गए हैं कि 5000 वर्ष के पहले की चट्टानें पहली बार दिखाई दे गई हैं। सर्बिया में दूसरे विश्वयुद्ध के समय दानुबे नदी में जर्मनी के दर्जनों डूबे युद्धपोत पहली बार दिखे हैं। चैक शहर जो जर्मनी की सीमा के पास है कि नदी का पानी इतना नीचे जा चुका है कि कुछ चट्टानों पर रोमन अम्पायर के वक्त का यह लिखा मिला है कि "यदि मैं दिख गई तो आंसू बहाओ" मतलब यह वह काललेख है जो आसन्न अकाल की चेतावनी दे रहा है।टेक्सास के डाइनासोर वैली स्टेट पार्क स्थित पलूक्सी नदी का पानी इतना घट चुका है कि 11.3 करोड़ वर्ष की एक डाइनासोर पट्टी दिख गई है। जहां उनके पदचिह्न साफ दिख रहे हैं। चीन की सबसे लंबी यांगजे नदी खस्ताहाल है। इससे 45 करोड़ लोगों का जीवनयापन जुड़ा है और चीन की एक तिहाई फसल इस पर निर्भर है। यहां की पोयांग झील सूख रही है। यांगजे से जुड़ी नहरों में भी पानी रोक दिया गया है।

अफ्रीका के केन्या, सोमालिया और इथोपिया में भीषण सूखा है। यहां भयावह सूखे से 22 लाख लोगों का जीवन संकटग्रस्त हो चुका है। आखिर इससे क्या पूवार्भास हो रहा है, यह चिंता का विषय होना चाहिए। विश्व में अनाज की कमी की भीषण विभीषिका उत्पन्न होने वाली है। दुर्भिक्ष और अकाल पड़ेगा। सावधान हो कर तैयार रहने का समय है।

जर्मनी की विदेश मंत्री अन्नलेना बेरबॉक ने कहा है कि वैश्विक स्तर पर खाद्य पदार्थों के बढ़ते मूल्यों के लिए युक्रेन में चल रहे रूस का सैन्य अभियान उत्तरदायी है । यूक्रेन के विरुद्ध युद्ध को रूस द्वारा षडयंत्रपूर्वक ह्लअनाज युद्धह्व में बदल दिया गया है । इसका परिणाम कई देशों पर, विशेषकर अफ्रीकी देशों पर हो रहा है । बेरबॉक ने भीषण वैश्विक अकाल की संभावना की चेतावनी दी है। हालांकि, रूस ने इस वक्तव्य का तुरंत खंडन करते हुए कहा कि अकाल के पीछे पाश्चात्य देशों द्वारा रूस पर लगाए गये निर्बंध उत्तरदायी हैं । दूसरी ओर पिछले सप्ताह संयुक्त राज्य अमेरिका ने कहा कि यूक्रेन से विश्वभर में प्रति माह 50 लाख टन अनाज निर्यात किया जाता था, लेकिन रूस द्वारा सभी यूक्रेनी बंदरगाहों को बंद करने से सब जगह अन्न का संकट है। इससे कई देश भूख से पीड़ित हो सकते हैं।

मनुष्य का जीवन में नैतिक होना बहुत जरूरी है, क्योंकि..

सुनील कुमार महला

नैतिकता मनुष्य जीवन के आचरण, मनुष्य के व्यवहार को बताती है। वास्तव में, नैतिकता समाज के भीतर सही और गलत की अवधारणा को परिभाषित करती है। हम यह बात कह सकते हैं कि नैतिकता हमारी आदत,कस्टम या चरित्र से जुड़ी है। हम यूं भी कह सकते हैं कि हमारे नैतिक मूल्य ही हमारे चरित्र को कहीं न कहीं परिभाषित करते हैं। सही क्या है, गलत क्या है, अच्छा क्या है, बुरा क्या है, ये सब नैतिकता के अंतर्गत ही आते हैं, इसी में इनका समावेशन है। नैतिकता वे मूल्य हैं जिन्हें बचपन से सभी को सिखाया जाना चाहिए, इन मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए और लोगों को उनका कड़ाई से पालन करना चाहिए। देखा जाए तो नैतिकता हमारे समाज की संस्कृति,धर्म पर कहीं न कहीं आधारित है, क्योंकि नैतिकता का विकास संस्कृति से होता है, कारण है कि संस्कृति में ही संस्कार बसे रमे हैं और संस्कारों में ही नैतिकता है। जिसमें अच्छे संस्कार हैं, वह व्यक्ति नैतिक है। धर्म हमें नैतिक बनाता है, हमें संस्कारों की शिक्षा देता है, धर्म को ग्रहण कर हम जीवन में अच्छा बुरा, सही गलत,नैतिक अनैतिक के बारे में जानते हैं, सीखते हैं। हमारे व्यक्तिगत व व्यावसायिक दोनों जीवन में नैतिकता बहुत जरूरी है। हमें अपने जीवन में नैतिक आचरण को बनाये रखना चाहिए। नैतिक मूल्य वास्तव में हमारे परिवार के वातावरण, हमारी संस्कृति, हमारे संस्कारों से कहीं न कहीं प्रभावित होते हैं। जिस समाज में नैतिक मूल्यों का समावेश है, वहाँ शांति है, सद्भाव है। वास्तव में, नैतिकता ही वह खूबी है जो हमारे सामाजिक होने की पहचान कराती है और जीवन को बेहतर ढंग से, अच्छे तरीकों से जीना सिखाती है। आज के इस दौर में हमारे बच्चों को नैतिक मूल्यों की जानकारी देना इसलिए जरूरी है ताकि वे अच्छे-बुरे, सही-गलत का फर्क समझ सकें और जान सकें कि क्या करने से समाज में आदर, सराहना और प्यार मिलता है और क्या करने से नहीं। नैतिकता से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है। स्वामी विवेकानंद जी ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो और नैतिकता हमें सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर करने की क्षमता रखती है। सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, दयालुता, मैत्री आदि नैतिक मूल्य हैं। हमें जीवन में सफल होने के लिए इन मूल्यों को अवश्य अपनाना चाहिए। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए, सभी का सम्मान करना चाहिए। बिना नैतिकता के हमारे जीवन का कोई मूल्य नहीं है। सच तो यह है कि बिना नैतिकता के जीवन शून्य है। जिसका कोई मतलब नहीं है। नैतिकता हमें अनुशासित होना सिखाती है, अनुशासन से अच्छे परिवार, परिवार से अच्छे समाज और अच्छे समाज से अच्छे राष्ट्र का निर्माण होता है। नैतिकता हमें प्रगतिशील समाज की ओर ले जाती है। अभी पांच सितंबर को हमने शिक्षक दिवस मनाया। शिक्षक हमें नैतिकता सिखाते हैं, अच्छी शिक्षा देते हैं। देश में आज भी ऐसे शिक्षकों की कमी नहीं है जो बच्चों को नैतिकता , इंसानियत का सबक सिखाते हैं । हमारे देश की सभ्यता , संस्कृति और धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि गुरु भगवान से भी बढ़कर होता है। कबीर जी ने भी गुरु की महिमा अच्छे तरीके से बताई है। कबीर जी कहते हैं कि "जो गुरु सांसारिक जीवन में परमात्मा-प्राप्ति(ईश्वर प्राप्ति) का दाँव बताये, जीवन रूपी खेल में माया से मुक्ति का ज्ञान दे, हमें उसी गुरु की वन्दना करनी चाहिए। कबीर गुरु और गोविन्द (ईश्वर) में कोई अंतर ही नहीं मानते हैं। यदि व्यक्ति अहंकार से मुक्त होकर गुरु की शरण में जाये तो उसे अवश्य ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। गुरु केवल ईश्वर की कृपा होने पर ही प्राप्त होता है। कबीर दास जी ने कहा है-" गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।।" यानी कि गुरू और गोबिंद (भगवान) एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए झ गुरू को अथवा गोबिन्द को? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वास्तव में यह गुरु ही है जो हमें नैतिकता में ओर ढ़ालते हैं। देश और समाज को सही राह पर ले जाने में शिक्षकों की भूमिका अहम् और महत्वपूर्ण होती है। हमें यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि-" गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोष। गुरू बिन लखै न सत्य को गुरू बिन मिटै न दोष।।"

लिज ट्रस की जीत के अर्थ

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

ब्रिटेन की नई प्रधानमंत्री लिज ट्रस तीसरी महिला प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने कंजर्वेटिव पार्टी के उम्मीदवार ऋषि सुनक को हराकर यह सर्वोच्च पद पाया है। वे पिछली बोरिस जॉनसन सरकार में विदेश मंत्री रही हैं। ऋषि सुनक हारे जरूर हैं लेकिन उन्हें 43 प्रतिशत वोट मिल गए जबकि ट्रस को 57 प्रतिशत वोट मिले। सुनक अंग्रेज नहीं हैं। भारतीय मूल के हैं। उनके पिता गुजराती और मां पंजाबी हैं। इसके बावजूद उन्हें ट्रस के 81 हजार वोटों के मुकाबले 60 हजार वोट मिल गए, यह अपने आप में भारतीयों के लिए गर्व की बात है। जिस अंग्रेज ने भारत पर लगभग 200 साल राज किया, उसी अंग्रेज के सिंहासन तक पहुंचने का अवसर एक भारतीय को मिल गया। सुनक का यह साहस ही था कि उन्होंने अपना इस्तीफा देकर बोरिस जॉनसन की सरकार को गिरवा दिया। वित्तमंत्री के तौर पर उन्हें काफी सराहना मिली थी लेकिन कई छोटे-मोटे विवादों ने उनकी छवि पर प्रश्न चिह्न भी उछाल दिए थे। यदि वे जीत जाते तो 21 वीं सदी की वह उल्लेखनीय घटना बन जाती लेकिन हारने के बावजूद उन्होंने जो बयान दिया है, उसमें आप भारतीय उदारता और गरिमा की झलक देख सकते हैं। उन्होंने ट्रस को बधाई दी है और कंजर्वेटिव पार्टी को एक परिवार की तरह बताया है। लिज ट्रस कैसी प्रधानमंत्री साबित होंगी, यह कहना मुश्किल है। अगले दो साल तक उनकी कुर्सी को कोई हिला नहीं सकता लेकिन 2024 के चुनाव में वे अपनी पार्टी को कैसे जिता पाएंगी, यह देखना है। बोरिस जॉनसन का उन्हें पूरा सहयोग रहेगा लेकिन उनकी हालत इस समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की तरह हो गई है।

रोहित ने भुवनेश्वर कुमार का किया बचाव, कहा-दो मैचों के प्रदर्शन से उन्हें जज करने की जरूरत नहीं

दुबई। श्रीलंका के खिलाफ चल रहे एशिया कप 2022 के सुपर फोर चरण में अपनी टीम की लगातार दूसरी हार के बाद, भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि बल्लेबाज बीच के ओवरों के दौरान प्राप्त गति को भुनाने में विफल रहे। सलामी बल्लेबाज पथुम निसानका (52) और कुसल मेंडिस (57) के अर्धशतकों की बदौलत चल रहे एशिया कप 2022 में श्रीलंका ने भारत को रोमांचक सुपर फोर मुकाबले में छह विकेट से हराया।

रोहित ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, हमने पहले छह ओवरों में वैसी बल्लेबाजी नहीं की, जैसा हम चाहते थे। लेकिन उसके बाद हमें गति मिली। लेकिन हम इसे भुनाने और खेल खत्म करने में असफल रहे। मुझे लगता है कि हमने 10-12 रन कम बनाए, लेकिन 175 रन भी बचाव योग्य स्कोर था। जिस तरह से स्पिनरों ने गेंदबाजी की, उन्होंने हमें उम्मीद दी और हमें फिर से मैच में वापसी दिलाई। लेकिन हम मैच को उस तरह से खत्म नहीं कर सके जिस तरह से हम चाहते थे। लगातार दो मैचों में भुवनेश्वर कुमार के डेथ ओवरों में निराशाजनक प्रदर्शन पर सवाल पूछने पर रोहित ने कहा कि टीम को इसकी कोई चिंता नहीं है। उन्होंने कहा, अनुभवी गेंदबाज भी रन लुटाते हैं। भुवनेश्वर कुमार हमारे लिए सालों से खेल रहे हैं, दो मैचों के बाद उन्हें जज करने की जरूरत नहीं है। उन्होंने हमें डेथ ओवरों में कई मैच जीताए हैं।

सिंकीफील्ड कप शतरंज - वेसली सो नें बनाई एकल बढ़त, कार्लसन नें टूर्नामेंट से हटकर चौंकाया

सैंट लुईस । 2022 के सबसे मजबूत सुपर ग्रांड मास्टर क्लासिकल शतरंज टूर्नामेंट में चार राउंड के बाद यूएसए के वेसली सो अब एकल बढ़त पर पहुँच गए है । दरअसल एक अप्रत्याशित घटनाक्रम के चलते विश्व चैम्पियन मेगनस कार्लसन नें तीन राउंड के बाद टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया और ऐसे में नियम अनुसार क्यूंकी उन्होने 5 से कम मैच खेले थे उनके खिलाफ खेले गए मैच के स्कोर को अब नहीं गिना जाएगा और अब यह प्रतियोगिता सिर्फ 9 खिलाड़ियों के बीच रह गयी है । इसका परिणाम अंक तालिका पर भी पड़ा और अब यूएसए के वेसली सो 2.5 अंको के साथ एकल बढ़त पर आ गए है । वेसली सो नें चौंथे राउंड में कैंडीडेट विजेता रूस के यान नेपोमिन्सी के साथ ड्रॉ खेला । इस राउंड में एकमात्र जीत यूएसए के फबियानों कारुआना नें हासिल की उन्होने फ्रांस के मकसीम लागरेव को पराजित किया । अन्य दो मुकाबलों में फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा नें यूएसए के नीमन हंस से तो यूएसए के लेवोन अरोनियन नें हमवतन दोमिंगेज पेरेज से बाजी ड्रॉ खेली ।

कार्लसन का हटना बड़ी घटना - विश्व चैम्पियन मेगनस कार्लसन अपने पूरे खेल जीवन में कभी भी किसी भी प्रतियोगिता से नहीं हटे थे और इस कारण इस बार तीसरे राउंड में यूएसए की युवा सनसनी बन कर उभरे नीमन हंस मोके से हारने के बाद उनका हटना पूरी दुनिया में अलग अलग तरह की चर्चा का विषय । खासतौर पर सोशल मीडिया पर उनका एक विडियो पोस्ट करना जिसमें इस बात की ओर इशारा करना की उनके बोलने से वह मुश्किल में पड़ सकते है नें सभी को पेशोपेश में डाल दिया है।

सहरसा के दो खिलाड़ियों ने जीता तीन पदक

सहरसा। यूथ एवं जूनियर राज्य स्तरीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता दिनांक 2 से 4 सितंबर 2022 को केन्द्रीय पब्लिक स्कूल छपरा में आयोजित हुई।जिसमे जूनियर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में हर्षवर्धन सिंह ने 104 किलो कैटगरी में स्नैच वजन 55 किलो,क्लीन एंड जर्क 70 किलो वजन में तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंतरराष्ट्रीय रेफरी मुकेश कुमार ने मेडल देकर सम्मानित किया।जबकि जूनियर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पुनः अंकित कुमार 96 किलो वजन में सनैच वजन 62 किलो, क्लीन एड जर्क में 70 किलो वजन उठाकर अपने कैटगरी में एक वार पुनः तृतीय स्थान प्राप्त किया। अन्तर्राष्ट्रीय रेफरी सूरज वर्मा ने मेडल देकर सम्मानित किया। यह दोनों मेडल खेल के अन्तिम समय रात्रि के 11 बजे प्राप्त किया। दोनों खिलाड़ी सोनवर्षा राज प्रखंड के गोलमा गांव का रहने वाला है।टीम कोच बिरेंद्र तॉती के संरक्षण में अच्छी रिजल्ट मिला। जिला भारोत्तोलन संघ सचिव सह नेशनल कोच हरेंद्र सिंह मेजर ने कहा कि बिना खेल उपकरणों के तीन मेडल लाना जिले के लिए गर्व की बात है।

एफआईएच प्लेयर ऑफ द ईयर अवॉर्ड के लिए नामित होने पर रोमांचित हूं : हरमनप्रीत सिंह

बेंगलुरु। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह, जिन्होंने एफआईएच स्टार्स अवार्ड्स के 2020-21 संस्करण में एफआईएच प्लेयर ऑफ द ईयर का पुरस्कार जीता, को फिर से उसी पुरस्कार के लिए नामित किया गया है।

डिफेंडर के साथ, पीआर श्रीजेश (एफआईएच गोलकीपर ऑफ द ईयर मेन), सविता (एफआईएच गोलकीपर ऑफ द ईयर महिला), संजय (एफआईएच राइजिंग स्टार ऑफ द ईयर मेन), मुमताज खान (एफआईएच राइजिंग स्टार ऑफ द ईयर महिला), ग्राहम रीड (एफआईएच मेन्स टीम कोच ऑफ द ईयर मेन) और जेनेके शोपमैन (एफआईएच वूमेन टीम कोच ऑफ द ईयर वूमेन) को भी एफआईएच हॉकी स्टार अवार्ड्स 2021-22 के लिए नॉमिनेट किया गया है।

हरमनप्रीत, जो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी ढाका 2021 में कांस्य पदक विजेता टीम और पिछले वर्ष बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक

विजेता टीम का हिस्सा थे, ने प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए नामित होने पर कहा, ÷एक बार फिर एफआईएच प्लेयर ऑफ द ईयर अवार्ड के लिए नामित होना मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। मैंने हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ देने और टीम की सफलता में योगदान देने की कोशिश की है और यह बहुत अच्छा लगता है जब आपकी कड़ी मेहनत को एफआईएच स्टार अवार्ड्स के माध्यम से पहचाना जाता है। भारतीय पुरुष और महिला टीमों में अन्य सभी नामित खिलाड़ियों को भी बधाई देना चाहता हूं। डिफेंडर ने कहा कि एफआईएच स्टार अवार्ड्स के नामांकन से पता चलता है कि भारतीय टीमें तेज गति से बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा, पिछली बार हमने सभी पुरस्कारों को जीत लिया था और इस बार हमें उनमें से अधिकांश के लिए नामांकित किया गया है, जो दर्शाता है कि हमने पिछले दो वर्षों में प्रदर्शन किया है। भारतीय पुरुष और महिला टीमें जबरदस्त गति से बढ़ी हैं और मुझे लगता है कि हम भविष्य में और भी बेहतर परिणाम दे सकते हैं। यह भारतीय हॉकी के लिए बहुत ही रोमांचक समय है। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के तात्कालिक लक्ष्यों के बारे में बोलते हुए, हरमनप्रीत ने कहा, हम अपने एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2022-23 मैचों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हमने राष्ट्रमंडल खेलों की समाप्ति के बाद कुछ पहलुओं पर काम किया है। उम्मीद है, हम अपने में सुधार कर सकते हैं। हॉकी प्रो लीग के पिछले संस्करण में, हम तीसरे स्थान पर रहे। हम प्रतियोगिता के अगले संस्करण में अपने परिणामों को बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे।'

एमबापे और हालैंड चैंपियन्स लीग में चमके, बेंजेमा चोटिल

पेरिस। कायलन एमबापे और इर्लिंग हालैंड ने चैंपियंस लीग फुटबॉल प्रतियोगिता के शुरुआत में गोल करने की अपनी क्षमता का खुलकर प्रदर्शन किया जबकि पिछले सत्र में शानदार खेल दिखाने वाले करीम बेंजेमा चोटिल होने के कारण पूरे मैच में नहीं खेल पाए। एमबापे और हालैंड ने दो-दो गोल दागे जिससे उनके क्लब क्रमशः पेरिस सेंट जर्मेन और मैनचेस्टर सिटी ने चैंपियंस लीग में जीत से शुरुआत की। इन दोनों टीम को खिताब का प्रबल दावेदार भी माना जा रहा है। रियाल मैड्रिड के खिताब के बचाव की संभावना काफी हद तक पूरी तरह से फिट बेंजेमा पर निर्भर है, लेकिन सेल्टिक के खिलाफ 30वें मिनट में फ्रांस के फॉरवर्ड को घुटने की चोट के कारण बाहर होना पड़ा।

विनीसियस जूनियर, लुका मोड्रिक और ईडन हैज़र्ड के दूसरे हाफ के गोल की मदद से रियाल ने इस मैच में 3-0 से जीत हासिल की। बेंजेमा ने प्रतियोगिता के पिछले सत्र में 12 मैचों में 15 गोल किए थे और रियाल मेड्रिड को खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। फ्रांसीसी लीग में अभी तक पांच मैचों में सात गोल करने वाले एमबापे के दो गोल की मदद से पीएसजी ने युवेंटस को 2-0 से हराया जबकि मैनचेस्टर सिटी की सेविला पर 4-0 की जीत में हॉलैंड ने दो गोल दागे। इसके अलावा डिनामो ज़ाग्रेब ने चेल्सी को 1-0 से हराया, जबकि सेरी ए चैंपियन एसी मिलान को साल्ज़बर्ग ने 1-1 से ड्रॉ पर रोका।

लीजेंड्स लीग क्रिकेट : पहले मैच में होगी दो पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाजों के बीच रोचक जंग

नई दिल्ली। लीजेंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी) भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाजों के बीच एक रोचक मुकाबले के साथ शुरू होने के लिए तैयार है। 17 सितंबर को पहले मुकाबले में गौतम गंभीर के नेतृत्व वाली इंडियन कैपिटल्स का सामना वीरेंद्र सहवाग के गुजरात जायंट्स से होगा।

20 दिनों तक चलने वाली इस लीग की विधिवत शुरुआत से पहले 16 सितंबर को कोलकाता के ईडन गार्डन्स में एक चैरिटी मैच खेला जाएगा, जिसमें इंडिया महाराजा का सामना वर्ल्ड जायंट्स से होगा। हालांकि लीग का उद्घाटन मैच 17 सितंबर को खेला जाएगा। इसके बाद 18 सितंबर को लखनऊ में हरभजन सिंह की मणिपाल टाइगर्स का सामना इरफान पठान के भीलवाड़ा किंग्स से होगा।

लीजेंड्स लीग क्रिकेट में ये चार टीमें शामिल होंगी जो 12 मैचों के लीग चरण के दौरान एक-दूसरे के खिलाफ दो बार खेलेंगी। मैचों के बीच चार दिनों का विश्राम होगा। लीग चरण के अंत में शीर्ष दो टीमें 2 अक्टूबर को जोधपुर के बरकतुल्लाह खान स्टेडियम में क्वालीफायर में खेलेंगी और विजेता सीधे 5 अक्टूबर को खेले जाने वाले फाइनल में पहुंचेगा। हालांकि,

क्वालीफायर में हारने वाली टीम एक और मौका मिलेगा और फाइनल में जगह बनाने के लिए उन्हें 3 अक्टूबर को तीसरे स्थान की टीम से भिड़ना होगा। लीग चरण के बाद चौथे स्थान पर रहने वाली टीम को बाहर कर दिया जाएगा। प्रशंसकों के पास क्रिस गेल बनाम हरभजन सिंह, मिशेल जॉनसन बनाम वीरेंद्र सहवाग, और शेन वॉटसन बनाम मुथैया मुरलीधरन जैसे नामी गीरामी खिलाड़ियों के बीच रोचक जंग देखने को मिलेगा। 25 सितंबर को नई दिल्ली में इंडिया कैपिटल्स और गुजरात जायंट्स के बीच मैच को छोड़कर सभी मैच शाम 7:30 बजे शुरू होने वाले हैं, जिसमें क्वालिफायर 1 के साथ शाम 4 बजे शुरू होगा। लीग चरण पांच स्थानों - कोलकाता, लखनऊ, नई दिल्ली, कटक और जोधपुर में आयोजित किए जाएंगे - पहला क्वालीफायर जोधपुर में आयोजित किया जाएगा। क्वालिफायर 2 और फाइनल के लिए स्थान की घोषणा जल्द ही की जाएगी। इससे पहले, भारत के पूर्व कप्तान और बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली ने लीजेंड्स लीग क्रिकेट बेनिफिट मैच में एक क्रिकेटर के रूप में सक्रिय रूप से भाग लेने में असमर्थता व्यक्त की, हालांकि, वह अपना पूरा समर्थन देंगे, जबकि भारतीय महाराजा 16 सितंबर को ईडन गार्डन्स, कोलकाता में विश्व एकादश का सामना करेंगे।

टी 20 विश्व कप के लिए नीदरलैंड टीम की घोषणा, स्कॉट एडवर्ड्स होंगे कप्तान

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी में होने वाले वाले टी 20 विश्व कप 2022 के लिए नीदरलैंड क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी गई है। टीम की कमान स्कॉट एडवर्ड्स को सौंपी गई है। टीम में रोएलोफ वैन डेर मेर्वे को भी शामिल किया गया है, जिन्होंने आखिरी बार नवंबर 2021 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेला था। मुख्य कोच रेयान कुक ने कहा, हमने आगामी टी20 विश्व कप के लिए युवाओं और अनुभव के रोमांचक मिश्रण के साथ एक संतुलित टीम बनाई है। सुपर लीग में खेलने का अनुभव टीम को अच्छी स्थिति में खड़ा करेगा और इन प्रदर्शनों से अच्छा आत्मविश्वास लिया जा सकता है। नीदरलैंड, जिसने क्वालीफायर टूर्नामेंट के जरिये विश्व कप के लिए क्वालीफाई किया है, को नामीबिया, श्रीलंका और संयुक्त अरब अमीरात के साथ ग्रुप ए में रखा गया है।

विश्व कप के लिए नीदरलैंड की टीम इस प्रकार है- स्कॉट एडवर्ड्स (कप्तान और विकेटकीपर), कॉलिन एकरमैन, शारिज अहमद, लोगन वैन बीक, टॉम कूपर, ब्रैंडन ग्लोवर, टिम वैन डेर गुगटेन, फ्रेड क्लासेन, बास डी लीड, पॉल वैन मीकेरेन, रोएलोफ वैन डेर मेर्वे, स्टीफन मायबर्ग, तेजा निदामनुरु, मैक्स ओ' डॉड, टिम प्रिंगल, विक्रम सिंह।

रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज : कानपुर पहुंची श्रीलंका लीजेंड्स की टीम

कानपुर। रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज का आगाज कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम में दस सितम्बर से हो रहा है। इस टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही श्रीलंका लीजेंड्स की टीम कानपुर पहुंच गई, जहां एक होटल में टीम का स्वागत भारतीय परंपरा से किया गया। टीम इंडिया भी आ जाएगी, जिसको लेकर शहर के विभिन्न होटलों में 200 कमरों की बुकिंग की गई है।

रोड सेफ्टी वर्ल्ड सीरीज का दूसरा संस्करण शुरू हो रहा है। इस सीरीज के सात मैच कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम में होने वाले हैं। कानपुर के अलावा तीन अन्य जगहों पर भी इस टूर्नामेंट के मैच होंगे, लेकिन मेजबानी करने का मौका कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम को मिला है। इसमें भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश, अस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रिका, इंग्लैण्ड और न्यूजीलैंड सहित आठ टीमें शिरकत कर रही है। जिसमें किक्रेट जगत के पूर्व दिग्गज खिलाड़ी मैदान में फिर से अपना जलवा बिखेरेंगे। इंडियन लीजेंडस की कप्तानी मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर करेंगे। सचिन के अलावा युवराज सिंह, इरफान पठान, युसूफ पठान, हरभजन सिंह, मुनाफ पटेल सहित कई खिलाड़ियों को खेलते हुए किक्रेट प्रेमी देखेंगे।

एशिया कप में सर्वाधिक रन बनाने वाले तीसरे बल्लेबाज बने रोहित, सचिन को छोड़ा पीछे

दुबई। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने दुबई में एशिया कप सुपर फोर मैच में श्रीलंका के खिलाफ 41 गेंदों में 72 रनों की रोमांचक पारी खेली। रोहित ने इस दौरान पांच चौके और चार छक्के लगाए। उन्होंने सूर्यकुमार यादव (29 गेंदों में 34 रन) के साथ मिलकर तीसरे विकेट के लिए 97 रन की साझेदारी कर भारत को 20 ओवर में आठ विकेट पर 173 रनों के सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया।

अपनी इस धमाकेदार पारी के साथ ही रोहित एशिया कप में सर्वाधिक रन बनाने वाले तीसरे और पहले भारतीय बल्लेबाज बन गए हैं। इस मामले में उन्होंने महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ दिया है। सचिन ने एशिया कप में 23 मैचों में 971 रन बनाए हैं, तेंदुलकर ने टूर्नामेंट के वनडे प्रारूप में ये रन बनाए हैं।

वहीं, रोहित शर्मा के अब 31 मैचों में कुल 1016 रन हो गए हैं। उनसे ऊपर सिर्फ सनथ जयसूर्या (25 मैचों में 1220 रन) और कुमार संगकारा (24 मैचों में 1075 रन) हैं। मैच की बात करें तो इस मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 20 ओवर में 8 विकेट पर 173 रन बनाए। कप्तान रोहित शर्मा ने 72 और सूर्यकुमार यादव ने 34 रन बनाए। इन दोनों के अलावा ऋषभ पंत और हार्दिक पांड्या ने 17-17 रन बनाए।

श्रीलंका की तरफ से दिलशान मधुशनाका ने 3, चमिका करुणारत्ने और कप्तान दासुन शनाका ने 2-2 व महेश तीक्ष्णा ने 1 विकेट लिया। जवाब में श्रीलंका ने सलामी बल्लेबाज पथुम निसानका (52) और कुसल मेंडिस (57) के अर्धशतकों की बदौलत श्रीलंका ने 19.5 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 174 रन बनाकर मैच जीत लिया। निसानका और मेंडिस के अलावा भानुका राजपक्षे ने नाबाद 25 और कप्तान दासुन शनाका ने नाबाद 33 रन बनाए।

भारत की तरफ से युजवेंद्र चहल ने 3 और रविचंद्रन अश्विन ने 1 विकेट लिया।

अल्टीमेट खो खो के अगले सीजन में जोरदार वापसी करेगी मुंबई खिलाड़ीज टीम : मधुकर श्री

मुंबई। पुणे में हाल ही में संपन्न हुए अल्टीमेट खो-खो के पहले संस्करण में पांचवें स्थान पर रही मुंबई खिलाड़ीज टीम को पेशेवर ढांचे में खेलते हुए अपने पहले प्रयास में बहुत कुछ सीखने को मिला है और अब इस टीम ने अगले सीजन में मजबूती से वापसी करने की कसम खाई है।

रैपर बादशाह, पुनीत बालन और जाह्नवी धारीवाल बालन के स्वामित्व वाली मुंबई खिलाड़ीज टीम ने कुल 10 मैच खेले, जिनमें से चार में उसे जीत मिली लेकिन छह में हार क सामना करना पड़ा। उसके लिए काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा। सीजन-1 पर अपने विचार साझा करते हुए मुंबई खिलाड़ीज के सीईओ मधुकर श्री ने कहा, हम कुछ नया और कुछ ऐसा कर रहे थे, जिसे लेकर हम अनभिज्ञ थे। यह शुरू से ही चुनौतीपूर्ण था। हमने प्लेयर

ड्राफ्ट के साथ शुरुआत की, जहां हमें छठी पिक मिली। बावजूद इसके हमने सर्वोत्तम संभव खिलाड़ी चुनने का प्रयास किया। फिर हमने एक प्री-सीजन शिविर आयोजित किया जहां हमने थोड़े समय में एक टीम बनाने की कोशिश की थी। वैसे कुल मिलाकर यह एक अद्भुत अनुभव था। हमने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन दो खिलाड़ियों के चोट के कारण बाहर होने के बाद हमारे लिए चीजें मुश्किल होती गईं। इससे टीम का संतुलन प्रभावित हुआ। उन्होंने आगे कहा, बीते सीजन से हमने बहुत सी नई चीजें हैं सीखी हैं। चाहें वो फॉर्मेट हो या नियम या फिर कई और चीजें। खिलाड़ियों को मैट पर, रोशनी के नीचे, बहुत सारे नए नियमों के साथ खेलने की आदत नहीं थी। इसलिए उन्हें नए प्रारूप के अनुकूल होने के लिए बहुत सी पारंपरिक चीजों को छोड़ना पड़ा। प्रबंधन के दृष्टिकोण से भी, हमने महसूस किया कि संतुलित टीम का होना कितना महत्वपूर्ण है, और साथ ही आपके पास मजबूत बेंच स्ट्रेंथ भी होनी चाहिए। यह हम सभी के लिए कुल मिलाकर एक शानदार अनुभव था।

मधुकर ने मुंबई खिलाड़ीज की ऑफ-सीजन योजनाओं के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा, महाराष्ट्र खो-खो का एक बड़ा केंद्र है और मुंबई खिलाड़ीज इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र टीम है। हमारा लक्ष्य शुरू से ही स्पष्ट है कि हम इस खेल का विकास करना चाहते हैं। हमारा अनूठा ग्रास रूट प्रोग्राम हमें क्षेत्र के खिलाड़ियों को खोजने में मदद करेगा। हम महाराष्ट्र में स्कूलों और कॉलेजों के साथ गठजोड़ करेंगे और संसाधनों के साथ उनकी मदद करने की कोशिश करेंगे। हम उन्हें लीग के बारे में जागरूक करना और एक मजबूत फैन बेस का निर्माण करना चाहते हैं। अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के बारे में मधुकर ने कहा, मेरी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा अगले सीजन में उस ट्रॉफी को उठाना है। हम पूरे सीजन का विश्लेषण करेंगे और अपनी गलतियों पर काम करेंगे। हमें सीजन से बहुत सारी सकारात्मक सीख मिली है। हमारी टीम में बहुत प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे। उन्होंने बहुत अच्छा समय बिताया और उन्हें काफी कुछ सीखने को मिला। वे खेले, उन्होंने अभ्यास किया और हर चीज का आनंद लिया।

राष्ट्रीय सीनियर पुरुष हैंडबाल चैंपियनशिप में लखनऊ के मोहित यादव संभालेंगे उप्र की कमान

लखनऊ। लखनऊ के मोहित यादव को 51वीं राष्ट्रीय सीनियर पुरुष हैंडबॉल चैंपियनशिप के लिए चयनित उत्तर प्रदेश की टीम का कप्तान बनाया गया है। टीम का शिविर केडी सिंह बाबू स्टेडियम में आयोजित किया गया था। कैंप की समाप्ति के बाद उत्तर प्रदेश टीम की घोषणा हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के कोषाध्यक्ष विनय कुमार सिंह ने करते हुए टीम को किट प्रदान करते हुए चैंपियनशिप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी। उत्तर प्रदेश हैंडबॉल संघ के महासचिव डा.आनन्देश्वर पाण्डेय ने बताया कि उत्तर प्रदेश टीम के कप्तान मोहित यादव बनाए गए है। टीम के मुख्य कोच मो.आसिफ खान, सहायका कोच डा.सुमंत पाण्डेय और मैनेजर आदित्य नाथ यादव होंगे। लखनऊ में होने वाली 51वीं राष्ट्रीय सीनियर पुरुष हैंडबॉल चैंपियनशिप की तैयारी पूरी हो चुकी है। हैण्डबॉल एसोसिएशन इंडिया के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश हैण्डबॉल संघ द्वारा आयोजित पांच दिवसीय इस चैंपियनशिप की शुरुआत सात सितंबर से होगी। चैंपियनशिप के मुकाबले केडी सिंह बाबू स्टेडियम में चार कोर्ट पर खेले जाएंगे, जिसमें मेजबान उत्तर प्रदेश सहित 31 टीमें मैदान में प्रतिस्पर्धा करने के लिए उतरेंगी।

संघ के महासचिव डा.आनन्देश्वर पाण्डेय ने चैंपियनशिप की तैयारियों के बारे में बताया कि सफल आयोजन के लिए तैयारियां पूरी हो गई है। उन्होंने कहा कि लीग कम नाकआउट आधार पर होन वाली इस चैंपियनशिप में भाग लेने वाली 31 टीमों को आठ पूल में बांटा जाएगा। इस चैंपियनशिप का औपचारिक उद्घाटन 07 सितंबर को केडी सिंह बाबू स्टेडियम पर शाम पांच बजे किया जाएगा।

पाकिस्तान में 10 साल की बच्ची से गैंगरेप के बाद निर्मम हत्या, सड़कों पर प्रदर्शन

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पंजाब में 10 की साल की मासूम से गैंगरेप के बाद निर्मम तरीके से हत्या कर दी गई। इस घटना को अंजाम स्विमिंग पुल के मालिक और उसके सहयोगियों ने दिया। पीड़ित के परिजन समेत बड़ी संख्या में लोगों ने इस घटना की निंदा करते हुए विरोध-प्रदर्शन करके आक्रोश जताया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल पर पहुंचने के बाद प्रदर्शनकारियों को आश्वासन दिया कि अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने कहा कि मामले में दो संदिग्धों को गिरफ्तार कर किया गया है। इनके बारे में कथित तौर पर कहा गया कि इस जघन्य अपराध में शामिल थे। पश्तून परिवार से संबंध रखने वाली पीड़ित बच्ची सूरन वैली के मोहमंद जिले में रहती थी। उस दिन सेंट्रल लाहौर के मानावन स्थित स्विमिंग पुल अपने भाई के साथ गई थी।

मामले में दर्ज एफआईआर के अनुसार पीड़ित का बेटा और बेटी स्विमिंग पुल गए थे। बेटा अकेले घर लौटा और बताया कि उसकी बहन खो गई। इसके बाद परिजन तलाश में जुट गए। पुल के मालिक ने बताया कि उनकी बेटी पुल में डूब गई थी। पीड़ित ने आरोप लगाया कि राजा और उसके साथियों ने उसकी बेटी के साथ दुष्कर्म किया और हत्या कर दी। मामले की जांच कर रहे पुलिस अधिकारी शहबाज अहमद ने बताया कि मामले में संदिग्ध आरोपित राजा और असलम को गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि आटोप्सी रिपोर्ट से इस बात की पुष्टि हो गई है कि बच्ची के साथ दुष्कर्म हुआ था और उसे डुबाकर मार दिया गया।

भारत ने कहा- शांति स्थापना का काम बेहद चुनौतीपूर्ण, UNSC के दृष्टिकोण की समीक्षा जरूरी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कांबोज ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षक अभियान पर सुरक्षा परिषद की ब्रीफिंग के दौरान कहा, 'युद्धग्रस्त क्षेत्रों में बढ़ती हुई हिंसा के परिप्रेक्ष्य में संरा शांतिरक्षा का काम बेहद चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है और राजनीतिक प्रक्रिया पर ध्यान कम होता जा रहा है।' उन्होंने कहा कि संघर्षग्रस्त क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षा का काम बेहद चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है और इस दिशा में सुरक्षा परिषद के काम करने के तरीके की पुनः समीक्षा होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि शांतिरक्षा के प्रति सुरक्षा परिषद की कार्यप्रणाली की पुनः समीक्षा तथा शांतिरक्षक अभियानों के समक्ष जो समस्याएं आ रही हैं उनका समाधान करने की जरूरत है। ऐसे अभियानों में भारत का योगदान सबसे ज्यादा है और वर्तमान में 12 में से नौ शांतिरक्षा अभियानों में 5,700 से ज्यादा भारतीय शांतिरक्षक तैनात हैं। कांबोज ने कहा कि 177 भारतीय शांतिरक्षकों ने संरा अभियानों में सर्वोच्च बलिदान दिया है जो कि अपने सैन्यकर्मी भेजने वाले किसी भी देश की ओर से सबसे ज्यादा है। भारत की स्थायी प्रतिनिधि ने कहा कि शांतिरक्षा अभियानों में स्पष्ट और वास्तविक लक्ष्य बताए जाने की जरूरत है और उसके अनुसार संसाधन भी दिए जाने चाहिए।उन्होंने कहा, 'परिषद को अभियानों के लक्ष्य निर्धारित करते समय झूठी आशा और उम्मीद पैदा करने वाली शब्दावली और नियम बताने से बचना चाहिए।' उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा समस्या तब उत्पन्न होती है जब शांतिरक्षा अभियानों में पुलिसकर्मी और सैन्यकर्मी भेजने वाले देशों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जाता। कांबोज ने कहा, 'इस समस्या का जितना जल्दी हो सके निवारण करना चाहिए।'

रूस को आतंकवाद के प्रायोजक राष्ट्र के रूप में नामित करने की राह आसान नहीं : व्हाइट हाउस

वाशिंगटन। व्हाइट हाउस का कहना है कि रूस को आतंकवाद के प्रायोजक देश के रूप में नामित करना उसे जवाबदेह ठहराने के लिए प्रभावी रास्ता नहीं है क्योंकि यूक्रेन और शेष दुनिया के लिए इसके अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरन ज्यां पियरे ने अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में पत्रकारों को बताया, 'जैसा कि राष्ट्रपति ने कहा है, और हम भी सोचते हैं, यह (रूस को आतंकवाद का प्रायोजक घोषित करना) रूस को जवाबदेह ठहराने के लिए सबसे प्रभावी या मजबूत रास्ता नहीं है। हमने पहले भी कई बार यह कहा है।' उन्होंने कहा कि रूस को आतंकवाद के प्रायोजक राष्ट्र के तौर पर नामित करने के यूक्रेन और दुनिया के लिए अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं। पियरे ने कहा, उदाहरण के लिए, हमने जिन विशेषज्ञों और गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) से बात की है, उनके अनुसार यह यूक्रेन के इलाकों में सहायता प्रदान करने की क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है। प्रेस सचिव ने कहा कि एक और बात यह है कि यह वैश्विक खाद्य संकट को कम करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण मानवीय और वाणिज्यिक निकायों को खाद्य निर्यात की सुविधा से दूर कर सकता है।

बोरिस जॉनसन का इस्तीफा, लिज ट्रस ब्रिटेन की प्रधानमंत्री नियुक्त

लंदन। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने लिज ट्रस को देश की नयी प्रधानमंत्री नियुक्त किया है। इससे पहले बोरिस जॉनसन ने प्रधानमंत्री पद से महारानी को इस्तीफा सौंप कर लिज ट्रस की नियुक्ति का पथ प्रशस्त किया।

ब्रिटेन में कंजर्वेटिव पार्टी के नेता के रूप में बोरिस जॉनसन के स्थान पर उनकी सरकार की विदेश मंत्री लिज ट्रस को चुने जाने के बाद सत्ता परिवर्तन की प्रक्रिया पूर्ण की गयी। बोरिस जॉनसन ने ब्रिटेन की महारानी से मिल कर उन्हें अपना इस्तीफा सौंपा। उनका इस्तीफा स्वीकार किये जाने के बाद कंजर्वेटिव पार्टी के सदस्यों द्वारा प्रधानमंत्री पद के लिए चुनी गयीं लिज ट्रस ने महारानी एलिजाबेथ से मुलाकात की। महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने लिज ट्रस का स्वागत करने के साथ उन्हें ब्रिटेन का प्रधानमंत्री नियुक्त किया। अब लिज ट्रस अपने मंत्रिमंडल का गठन करेंगी, जिस पर पूरे ब्रिटेन की निगाहें लगी हैं।

इससे पहले ब्रिटेन में कंजर्वेटिव पार्टी के सदस्यों ने भारतीय मूल के ऋषि सुनक को झटका देकर लिज ट्रस को प्रधानमंत्री चुना था। प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के स्थान पर ब्रिटेन में कंजर्वेटिव पार्टी का नया नेता बनने के लिए ऋषि सुनक और लिज़ ट्रस के बीच मुकाबला था। ब्रिटेन की सत्तारूढ़ कंजर्वेटिव पार्टी के 1,72,437 मतदाताओं में से 82.6 प्रतिशत ने वोट डाले थे। ट्रस को 81,326 वोट मिले थे, जबकि सुनक को 60,399 वोट मिले थे। सुनक ने चुनाव हारने के बाद ट्रस को अपनी नेता बताकर उनके नेतृत्व में सफल सरकार चलाने की बात भी कही थी।

पीयूष गोयल ने कैलिफोर्निया में की प्रधानमंत्री मोदी के प्रबंधन कौशल की तारीफ

सैकरामेंटो । केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल इस समय सैन फ्रांसिस्को और लास एंजिल्स की छह दिवसीय यात्रा पर हैं। इस दौरान उन्होंने कैलिफोर्निया के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रबंधन कौशल पर की तारीफ की। विश्वविद्यालय नेतृत्व, संकाय और कर्मचारियों के साथ बैठक में उन्होंने कहा- 'मैंने व्यक्तिगत रूप से पिछले आठ वर्षों में सरकार में रहते हुए देखा है कि प्रधानमंत्री मोदी के काम करने का तरीका गहन प्रबंधन सिद्धांतों पर आधारित है।'

गोयल ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ अपनी बातचीत और भारत में नीतियों को लागू करने और क्रियान्वित करने के उनके तरीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री के काम करने के तरीके में शामिल प्रबंधन सिद्धांत भारत की प्रगति का खाका तैयार करने पर उनके विचारों को स्पष्ट करते हैं। गोयल ने एलईडी बल्ब कार्यक्रम उजाला का हवाला दियाॅ।

उन्होंने कहा कि जिसने आज भारत एलईडी बल्बों के लिए बड़ा और टिकाऊ बाजार है। यह प्रधानमंत्री मोदी के ऊर्जा संरक्षण

के दृष्टिकोण की क्लासिक केस स्टडी है। गोयल ने प्रधानमंत्री और उनके 'बेजोड़ प्रबंधन कौशल' की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस वजह से एलईडी की बढ़ती मांग का मार्ग प्रशस्त हुआ और खुदरा बाजार मूल्य में भारी गिरावट आई।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में दुनिया में भारत का गौरव बढ़ा है। हमने अभी-अभी आजादी का अमृत महोत्सव मनाया है। गोयल भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी मंच सम्मेलन और इंडो-पैसिफिक इकोनामिक फ्रेमवर्क मंत्रिस्तरीय बैठक में हिस्सा लेने पहुंचे हैं। गोयल बैठक से इतर अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कैथरीन ताई और अमेरिकी वाणिज्य सचिव जीना एम रायमोंडो से मुलाकात करेंगे।

विदाई भाषण में दुखी बोरिस जॉनसन ने कहा, मेरे लिए आधे रास्ते में बदले नियम

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री पद से विदा हो रहे बोरिस जॉनसन का सत्ता से दूर होने का दुख जुबां पर आ ही गया। विदाई भाषण में उनका दुख साफ नजर आया, जब उन्होंने कहा कि उनके लिए आधे रास्ते में नियम बदल दिये गए।

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन की प्रधानमंत्री पद से विदाई के साथ लिज ट्रस के प्रधानमंत्री बनने का रास्ता भी साफ हो चुका है। ब्रिटेन की महारानी को अपना इस्तीफा सौंपने से पहले बोरिस जॉनसन ने कहा कि वे महारानी को मिल कर अपना इस्तीफा दे देंगे और अंत में सत्ता की यह मशाल नए कंजर्वेटिव नेता को सौंप दी जाएगी। प्रधानमंत्री पद से कार्यकाल के बीच में हटाए जाने पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया अप्रत्याशित रूप से रिले रेस की तरह हो गई है। आधे रास्ते में नियम बदल दिए

गए लेकिन अब इससे उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। उन्होंने खुद को बूस्टर रॉकेट बताते हुए कहा कि अब वे उन बूस्टर रॉकेटों में से एक हैं, जिसने अपना काम पूरा कर लिया है और अब वे धीरे-धीरे वातावरण में प्रवेश कर जाएंगे। जॉनसन ने मौजूदा कालखंड को देश के लिए कठिन समय करार दिया। उन्होंने दावा किया कि सब मिलकर इससे उबर जाएंगे और मजबूत होकर सामने आएंगे। अपने समर्थकों से राजनीति से ऊपर उठने का आह्वान करते हुए कहा कि अब सब कुछ लिज ट्रस, उनकी टीम और उनके कार्यक्रमों के पीछे छोड़ देना चाहिए, क्योंकि यही इस देश के लोग चाहते हैं, यही उनकी जरूरत है और वे इसके हकदार हैं। इस दौरान जॉनसन ने यूरोपीय संघ, कोविड वैक्सीन रोलआउट और यूक्रेन युद्ध की प्रतिक्रिया के साथ ब्रेक्सिट समझौते पर अपनी उपलब्धियां गिनाईं।

भारतवंशी सुएला ब्रेवरमैन ब्रिटेन की नई गृह मंत्री

लंदन। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने लिज ट्रस को देश का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया। ट्रस ने बोरिस जानसन का स्थान लिया है। प्रधानमंत्री बनने के फौरन बाद ट्रस ने अपनी कैबिनेट का गठन किया। उन्होंने भारतवंशी सुएला ब्रेवरमैन को गृह मंत्री बनाया है। सुएला ने भारतीय मूल की ही प्रीति पटेल का स्थान लिया है। वो बोरिस जानसन की सरकार में गृह मंत्री थीं। ट्रस ने घाना मूल के क्वासी क्वार्टेंगो को वित्त मंत्री बनाया है। सुएला ब्रेवरमैन बौद्ध हैं। वो नियमित रूप से लंदन बौद्ध केंद्र में जाती हैं। उन्होंने भगवान बुद्ध के कथनों के 'धम्मपद' ग्रंथ पर संसद में पद की शपथ ली थी। पूर्व की जानसन सरकार में भारतीय मूल के ऋषि सुनक वित्त मंत्री थे। ट्रस सरकार में फिलहाल सुनक को जगह नहीं मिली है। वित्तमंत्री क्वासी के माता-पिता 1960 के आसपास घाना से ब्रिटेन आए थे। वह ब्रिटेन के पहले अश्वेत वित्त मंत्री हैं। जेम्स क्लेवर्ली विदेश मंत्री बने हैं। वह भी ब्रिटेन के पहले अश्वेत विदेश मंत्री हैं।

उनकी मां सिएरा लियोन अश्वेत और पिता श्वेत थे। ट्रस ने थेरेसा काफी को उप प्रधानमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री नियुक्त किया है। यह पहला मौका है जब ब्रिटेन की सरकार में शीर्ष चार पदों पर किसी श्वेत पुरुष को जगह नहीं मिली है। बोरिस जानसन ने महारानी को इस्तीफा सौंपा। इसके बाद ट्रस (47) ने स्काटलैंड के एबर्डीनशायर में बाल्मोरल कैसल स्थित आवास पर जाकर महारानी से मुलाकात की। ट्रस महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के शासनकाल में देश की 15वीं प्रधानमंत्री हैं। उनके शासनकाल में पहले प्रधानमंत्री 1952 में विंस्टन चर्चिल थे। ट्रस देश की तीसरी महिला प्रधानमंत्री बनी हैं। छह साल के भीतर कंजरवेटिव पार्टी की वह चौथी प्रधानमंत्री हैं। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री पद की दौड़ में ट्रस ने पूर्व वित्त मंत्री ऋषि सुनक को पराजित किया था। ब्रिटेन की नवनियुक्त प्रधानमंत्री लिज ट्रस ने कहा कि एक महत्वपूर्ण समय में देश की जिम्मेदारी लेते हुए वह सम्मानित महसूस कर रही हैं। प्रधानमंत्री के रूप में अपने पहले भाषण में ट्रस ने बढ़ती महंगाई को नियंत्रित कर लोगों की जिंदगी को आसान बनाने का वादा करते हुए कहा कि वह ब्रिटेन को एक आकांक्षा पैदा करने वाला राष्ट्र बनाएंगी। ट्रस ने कहा कि उनके पास कर कटौती और सुधारों के जरिये अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने की साहसिक योजना है। उन्होंने वादा किया कि वह रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा छेड़े गए यूक्रेन युद्ध की वजह से पैदा हुए ऊर्जा संकट से व्यावहारिक तरीके से निपटेंगी।

बाइडन ने भारतीय मूल के अरुण सुब्रमण्यम को यूएस डिस्ट्रिक्ट जज के लिए किया नामित

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने भारतीय मूल के अमेरिकी वकील अरुण सुब्रमण्यम को न्यूयॉर्क के जिला जज के लिए नामित किया है। व्हाइट हाउस ने इस संबंध में कानूनी दस्तावेज सीनेट को भेजे हैं। यदि सीनेट ने सुब्रमण्यम के नाम पर मुहर लगा दी तो वो न्यूयॉर्क के दक्षिणी जिले के यूनाइटेड स्टेट्स डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में सेवा देने वाले पहले दक्षिण एशियाई जज होंगे। सुब्रमण्यम न्यूयॉर्क में सुस्मान गॉडफ्रे एलएलपी में पार्टनर हैं। यहां वह साल 2007 से काम कर रहे हैं।

सुब्रमण्यम ने 2006 से 2007 तक अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस रूथ बेडर गिन्सबर्ग के लिए क्लर्क के तौर पर काम किया। इससे पहले अमेरिकी जज जेरार्ड ई लिंच के लिए उन्होंने 2005 से 2006 तक न्यूयॉर्क के दक्षिणी जिले के लिए स्टेट्स डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में काम किया।

सुब्रमण्यम ने 2004 से 2005 तक यूनाइटेड स्टेट्स कोर्ट ऑफ अपील्स फॉर सेकेंड सर्किट में जज डेनिस जैकब्स के लिए लॉ क्लर्क के रूप में भी काम किया है। उन्होंने 2004 में कोलंबिया लॉ स्कूल से जेडी और 2001 में केस वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी से बीए की डिग्री प्राप्त की। नेशनल एशियन पैसिफिक अमेरिकन बार एसोसिएशन ने सुब्रमण्यम को उनके नामांकन के लिए बधाई दी है। इंडियन-अमेरिकन इंपैक्ट ने सुब्रमण्यम के नामांकन को उल्लेखनीय फैसला बताते हुए इसका स्वागत किया है। इंडियन-अमेरिकन इंपैक्ट के नील मखीजा ने कहा कि दक्षिण एशियाई और एशियाई अमेरिकियों को लंबे समय से संघीय न्यायपालिका में कम प्रतिनिधित्व दिया गया। इसलिए यह कदम सराहनीय है।

गौतम अडाणी यूएसआईबीसी 2022 ग्लोबल लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित

नई दिल्ली। अडाणी समूह के प्रमुख एवं दुनिया के तीसरे सबसे अमीर गौतम अडाणी को यूएसआईबीसी 2022 ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

यूएस चैंबर ऑफ कॉमर्स की यूएस इंडिया बिजनेस काउंसिल (यूएसआईबीसी) की ओर से यह पुरस्कार गौतम अडाणी को उनके दूरदर्शी नेतृत्व के लिए प्रदान किया गया है। यूएसआईबीसी की ओर से ह्यमैक्सिमाइजिंग द नेक्स्ट 75 इयर्स ऑफ यूएस-इंडिया प्रॉस्पेरिटीह्व थीम पर आयोजित संवाद कार्यक्रम में अडाणी को सम्मानित करने के साथ उनके दूरदर्शी नेतृत्व भी को सराहा गया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अडाणी ने भारत-अमेरिका के बीच कारोबारी रिश्तों और भावी संभावनाओं को लेकर विस्तार से अपनी बात रखी। अडाणी ने कहा कि यूएसआईबीसी ग्लोबल लीडरशिप अवार्ड मिलना सम्मान की बात है।

यूएसआईबीसी के इस कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इतने दिग्गज इंडस्ट्री लीडर्स और वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों की मौजूदगी में मुझे बोलने का अवसर मिला, इसके लिए मैं अभारी हूं। अडाणी ने कहा कि यह पुरस्कार भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर मिला है, जो इसे और महत्वपूर्ण एवं यादगार बनाता है। गौरतलब है कि यह सम्मान सुंदर पिचाई और जेफ बेजोस जैसे दिग्गजों को भी मिल चुका है।

अमेरिकी संसद में उठी भारत को काट्सा प्रतिबंधों से स्थायी छूट की मांग

वाशिंगटन। अमेरिकी संसद में भारत को काट्सा प्रतिबंधों से स्थायी छूट देने की मांग उठाई गयी है। भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद रो खन्ना ने संसद में इस आशय का विधेयक पेश किया है।

वर्ष 2014 में रूस द्वारा क्रीमिया को यूक्रेन से अलग कर दिया गया था। इसके बाद वर्ष 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव को प्रभावित करने के आरोप भी रूस पर लगे। इसके बाद अमेरिका ने काट्सा प्रतिबंध लागू किये। काउंटरिंग अमेरिकन एडवरसरीज थ्रू सैंक्शन एक्ट (काटसा) के तहत उन देशों पर प्रतिबंध लगाया जाता है, जो देश ईरान, उत्तर कोरिया या रूस के साथ किसी तरह का लेन-देन करते हैं। इस कानून के तहत अमेरिका अपने विरोधी देशों से हथियारों की खरीदारी के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कदम उठाता है। रूस से एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम खरीदने के बाद से भारत इन प्रतिबंधों के दायरे में आ गया है। अब भारतीय

मिल के अमेरिकी सांसद रो खन्ना ने भारत के समर्थन में एक विधेयक अमेरिकी संसद में पेश कर काट्सा प्रतिबंधों से भारत को स्थायी छूट देने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि आक्रामक चीन और रूस को देखते हुए ऐसा करना दोनों देशों के हित में रहेगा। अमेरिकी संसद ने रो खन्ना के इस प्रस्ताव को संसद की विदेश मामलों की समिति को भेज दिया है। इस प्रस्ताव को कांग्रेस सदस्य ब्रैड शेरमेन और डेविड श्वीकर्ट ने भी समर्थन दिया है। इससे पहले रो खन्ना ने जुलाई में भी ऐसा ही एक प्रस्ताव पेश किया था, जिसे कांग्रेस के 300 सदस्यों का समर्थन मिला था।

बाइडेन ने लिज़ ट्रस से फोन पर की बात, ब्रिटेन की प्रधानमंत्री बनने पर दी बधाई

वाशिंगटन: अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने लिज़ ट्रस से फोन पर बात की और उन्हें ब्रिटेन की नई प्रधानमंत्री बनने की बधाई दी। व्हाइट हाउस ने यह जानकारी दी। व्हाइट हाउस की तरफ से बताया गया कि नेताओं ने दोनों देशों के बीच विशेष संबंधों की पुष्टि की। बयान के अनुसार, '' नेताओं ने हमारे देशों के बीच विशेष संबंधों की पुष्टि की और उन संबंधों को और गहरा करने की इच्छा जाहिर की।'

बयान में कहा गया कि बाइडन और ट्रस ने फोन पर वैश्विक चुनौतियों पर निरंतर घनिष्ठ सहयोग के महत्व पर चर्चा की, जिसमें यूक्रेन का समर्थन करना, चीन द्वारा पेश की गई चुनौतियों का समाधान ढूंढना, ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकना और स्थायी व सुरक्षित तथा किफायती ऊर्जा संसाधन सुनिश्चित करना शामिल है। व्हाइट हाउस ने कहा, '' उन्होंने बेलफास्ट/गुड फ्राइडे समझौते से होने वाले फायदे के लिए अपनी साझा प्रतिबद्धता और उत्तरी आयरलैंड प्रोटोकॉल पर यूरोपीय संघ के साथ बातचीत में बनी सहमति तक पहुंचने के महत्व पर भी चर्चा की।'

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

मंगोलिया के राष्ट्रपति ने भारतीय रक्षा मंत्री को भेंट किया राजसी घोड़ा 'तेजस'

उलानबटार। मंगोलिया के राष्ट्रपति उखनागिन खुरेलसुख ने भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को राजसी घोड़ा भेंट किया है। तीन दिन की मंगोलिया यात्रा पर पहुंचे भारतीय रक्षा मंत्री ने उक्त घोड़े का नाम 'तेजस' रखा है।

भारत के रक्षा मंत्री तीन दिन के मंगोलिया दौरे पर सोमवार को पहुंचे थे। मंगोलिया की राजधानी उलानबटार में उन्होंने मंगोलिया के राष्ट्रपति खुरेलसुख से मुलाकात की। इस मुलाकात में खुरेलसुख ने राजनाथ सिंह को मंगोलिया का राजसी घोड़ा भेंट किया। राजनाथ सिंह ने बुधवार को सफेद घोड़े की तस्वीरों के साथ ट्वीट कर लिखा कि मंगोलिया में खास दोस्तों की ओर से एक विशेष उपहार मिला है। उन्होंने मंगोलिया एवं राष्ट्रपति को धन्यवाद देते हुए जानकारी दी कि उन्होंने इस शानदार व सुंदर घोड़े का नाम तेजस रखा है। बातचीत में भारत के रक्षा मंत्री और मंगोलिया के राष्ट्रपति ने दोनों देशों के बीच रणनीतिक द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने की बात कही।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि राष्ट्रपति खुरेलसुख के साथ बैठक उत्कृष्ट रही। उन्होंने इस मौके पर 2018 में हुई मुलाकात का भी जिक्र किया, तब खुरेलसुख मंगोलिया के प्रधानमंत्री थे। राजनाथ ने कहा कि हम मंगोलिया के साथ अपनी बहुआयामी रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। राजनाथ सिंह ने बुधवार को मंगोलिया की राजधानी उलानबटार में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की। सिंह ने एक तस्वीर साझा करते हुए कहा कि उलानबटोर में पूज्य बापू को श्रद्धांजलि दी। राजनाथ सिंह सोमवार से मंगोलिया तथा जापान की अपनी पांच दिवसीय यात्रा पर हैं। मंगोलिया से रक्षामंत्री दो दिवसीय यात्रा पर जापान जाएंगे। वह आठ और नौ सितंबर को जापान में होंगे। रक्षामंत्री जापान के साथ ह्यटू प्लस टूह्व प्रारूप में आठ सितंबर को होने वाली वार्ता में शामिल होंगे।

7 पैसे कमजोर होकर बंद हुआ रुपया

नई दिल्ली। मुद्रा बाजार में रुपये की कीमत में कमजोरी का सिलसिला जारी है। डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा रुपये में आज 7 पैसे की कमजोरी आई। कीमत में आई गिरावट की वजह से आज भारतीय मुद्रा 79.91 रुपये प्रति डॉलर के स्तर पर बंद हुई। इंटर बैंक फॉरेन सिक्योरिटी एक्सचेंज में रुपये ने आज डॉलर के मुकाबले कमजोर शुरूआत की थी। रुपया मंगलवार की क्लोजिंग की तुलना में आज 3 पैसे की कमजोरी के साथ 79.87 रुपये के स्तर पर खुला था। दिन के कारोबार के दौरान वैश्विक स्तर पर बने निगेटिव सेंटिमेंट्स की वजह से रुपये की कीमत में गिरावट होती चली गई।